आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

Scanned by CamScanner

आंवला

14

वैज्ञानिक नाम	:	*Emblica officinalis* Gaertn.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian gooseberry, Emblic myrobalan
संस्कृत	:	आमलकी, धात्री, शिवा
हिन्दी	:	आमला, आंवरा, आँवला
गुजराती	:	आँवला, आमला
मराठी	:	आंवलकांटी, आँवला
बंगाली	:	आंगला, आमलकी
तेलगु	:	असरिकाय, उशीरिकई
द्राविड़ी	:	नेल्लिक्काय्, अमृत फल, वयस्था
कन्नड़	:	निल्लिकाय, नेल्लि
अरबी	:	आमलन्

परिचय

आँवला भारतवर्ष मे उद्यानों और जंगलो में सर्वत्र पाया जाता है। यह समुद्र तल से 4,500 फुट की ऊँचाई तक भी होता है। उद्यानों में लगाए जाने वाले आँवले के फल बड़े और जंगली आँवले के फल छोटे होते है। इसके वृक्ष की पत्तियां इमली के वृक्ष जैसी होती हैं परन्तु इसकी पत्तियां कुछ बड़ी होती है तथा शतपत्रा कहलाती है। आँवला रसायन द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके सेवन से बुढ़ापा मनुष्य पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता है। इसीलिये आयुर्वेद में इसे अमृत फल व धात्री फल आदि कहा गया है।

बाह्य–स्वरूप

आँवले का वृक्ष मध्यमाकार तथा 20–25 फुट ऊँचा होता है। इसका कांड टेढ़ा मेढा और 5–9 फुट तक मोटा होता है। इसकी छाल हरिताभ धूसर, पतली और परत छोड़ती हुई होती है। पर्णवृन्त लम्बा, पत्र, आयताकार पंखवत व्यवस्थित इमली के पत्तों की तरह होते है। पुष्प दंड लम्बा, जिसमें छोटे–छोटे, पीले रंग के फूल गुच्छों में लगे होते है। फल गोलाकार आधे से एक इंच व्यास के, गूदेदार पीलापन लिये हरे और पकने पर लालवर्ण के हो जाते है। फलों पर छः रेखाये होती है। फल के भीतर षट्कोषीय बीज होता है। फरवरी–मई मे इस पर फूल लगने शुरू होते हैं तथा अक्टूबर से अप्रैल तक फल मिलते है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

आँवले के फल में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें नारंगी के रस से 20 गुना अधिक विटामिन 'सी' पाया जाता है। ऑवले मे गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, निर्यास, शर्करा, एल्ब्युमिन, सेल्युलोज तथा कैल्शियम पाये जाते है। फल के कल्क और स्वरस में प्रति 100 ग्राम पाये जाने वाले घटक निम्न प्रकार है:

जल की मात्रा 81.2 मि०ग्रा०, प्रोटीन 0.5 मि०ग्रा०, वसा 0.1 मि०ग्रा०, फास्फोरस 0.02 मि०ग्रा०, कैल्शियम 0.05 मि०ग्रा०, लौह 1.2 मि०ग्रा०, निकोटिनिक एसिड 0.2 मि०ग्रा०। टैनिन फल में 28, शाखा त्वक में 21, तने की छाल में 8.9 तथा पत्तों में 22 प्रतिशत होता है। बीजों से भूरे पीले रंग का एक स्थिर तैल (16 प्रतिशत) निकलता है।

गुण–धर्म

1. ग्राही, मूत्रल, रक्तशोधक और रुचिकाकार होने से आँवला अतिसार, प्रमेह, दाह, कामला, अम्लपित्त, विस्फोटक, पांडु रक्तपित्त, वातरक्त, अर्श, बद्ध कोष्ठ, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, खांसी इत्यादि रोगों को नष्ट करता है। दृष्टि को तेज करता है। वीर्य को दृढ़ करता है। और आयु की वृद्धि करता है।
2. यह त्रिदोष हर है। अम्ल से वात, मधुर शीत से पित्त तथा रुक्षकषाय होने के कारण कफ का नाश करता है।[1]
3. यह कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न व रसायन है।[2]
4. हृदय को बल देने वाला और शोणितस्थापन है।
5. वृष्य और गर्भ स्थापन है।

Scanned by CamScanner

6. आँवला कफ पित्त–नाशक, प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करता है। तथा आंखो के लिये हितकारी अग्निदीपक और विषम् ज्वर को नष्ट करता है।[14]
7. आँवला, हरड़, पिप्पली सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है।
8. आँवला थोड़ा मधुर, तिक्त, कषाय, कटु रस आंखों के लिये हितकारी, त्रिदोषनाशक, वृष्य, शुक्र वर्धक हैं।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. 20–50 ग्राम आँवले के फलों को जौकुट कर दो घंटे तक आधा किलो ग्राम पानी में उबालकर उस जल को छानकर दिन में तीन बार आंखों में डालने से नेत्र रोगों में बहुत लाभ होता है।
2. वृक्ष पर लगे हुये आँवले में छेद करने से जो द्रव पदार्थ निकलता है। उसका आंख के बाहर चारों और लेप करने से आँख के शुक्ल भाग की शोथ मिटती है।
3. आँवले के रस को आंखों में डालने अथवा सहजन के पत्तों का रस 4 ग्राम तथा सैन्धा नमक 250 मिलीग्राम इन्हें एक साथ मिलाकर परिषेचन करने से नूतन अभिष्यन्द नष्ट होता है।
4. 7 ग्राम आँवले को जौकुट कर ठंडे पानी में तर कर दें। दो–तीन घंटे बाद उन आंवलो को निचोड़ कर फेंक दे और उस जल में फिर दूसरे आँवले भिगो दे। दो–तीन घंटे बाद उनको भी निचोड़ कर फेंक दें। इस प्रकार तीन–चार बार करके उस पानी को आँखो में डालना चाहिये। इससे आंखों की फूली मिटती है।

केश कल्प :

1. सूखे आँवले 30 ग्राम, बहेड़ा 10 ग्राम, आम की गुठली की गिरी 50 ग्राम और लौह चूर्ण 10 ग्राम रात भर कढाई में भिगो रखें। बालो पर इसका नित्य प्रति लेप करने से छोटी आयु में श्वेत हुये बाल कुछ ही दिनों में काले पड़ जाते है।
2. आँवला, रीठा, शिकाकई तीनों का क्वाथ बनाकर सिर धोने से बाल मुलायम, घने और लम्बे होते है। ब्राही आंवला केश तेल भी बालों के लिये अच्छा होता है।
3. आँवले और आम की गुठली की मज्जा को साथ पीस कर सिर में लगाने से दृढ़मूल लम्बे केश पैदा होते है।[24]

नकसीर : जामुन, आम तथा आँवले को कांजी आदि से बारीक पीसकर मस्तक पर लेप करने से नासिका में प्रवृत रक्त इस प्रकार रुक जाता है, जिस प्रकार जल का वेग सेतु बन्ध से।[15]

स्वर भेद : अजमोदा, हल्दी, आँवला, यवक्षार, चित्रक इनको समान मात्रा में मिलाकर, 1 से 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच मधु तथा 1 चम्मच घृत के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता है।[17]

हिक्का :

1. पिप्पली, आँवला, सोंठ इनके 2–2 ग्राम चूर्ण में 10 ग्राम खांड तथा 1 चम्मच मधु मिला बार–बार प्रयोग करने से हिक्का तथा श्वास रोग शान्त होता है।[16]
2. आँवला के 10–20 ग्राम रस और 2–3 ग्राम पीपल का चूर्ण 2 चम्मच शहद के साथ दिन में दो बार सेवन करने से हिचकी में लाभ होता है।

वमन :

1. हिचकी तथा उल्टी में आंवले का 10–20 मिलीलीटर रस 5–10 ग्राम मिश्री मिलाकर देने से आराम होता है। यह दिन मे दो–तीन बार दिया जा सकता है। 10–15 ग्राम चूर्ण पानी के साथ भी दिया जा सकता है।
2. त्रिदोष जनित छर्दि में आँवला तथा दाख को पीसकर 40 ग्राम खांड, 40 ग्राम मधु और 160 ग्राम जल मिलाकर कपड़े से छानकर पीना चाहिये।
3. आँवले के 20 ग्राम स्वरस में 1 चम्मच मधु और 10 ग्राम सफेद चन्दन का चूर्ण मिलाकर पिलाने से वमन बन्द होता है।

अम्लपित्त :

1. ताजा आँवला 1–2 नग मिश्री के साथ या स्वरस 25 ग्राम की मात्रा लेकर समभाग शहद के साथ प्रातः–सायं देने पर खट्टी डकारें अम्लपित्त की शिकायतें दूर हो जाती हैं।
2. आँवले के 10 ग्राम बीज रात भर जल मे भिगोकर रखने पर व अगले दिन गाय के दूध में पीसकर 250 ग्राम गाय के दूध के साथ देने पर पित्ताधिक्य में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

संग्रहणी : मेथी दाना के साथ इसके पत्तों का क्वाथ बनाकर 10 से 20 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार पिलाने से संग्रहणी मिटती है।

कामला : यकृत की दुर्बलता व पीलिया निवारण के लिये आंवले को शहद के साथ चटनी बनाकर सुबह–शाम लिया जाना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी ताजी छाल के 10–20 ग्राम रस में 2 ग्राम हल्दी और 10 ग्राम मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
2. आँवलों के 20 ग्राम स्वरस में इलायची का चूर्ण डालकर दिन में दो–तीन बार पीने से मुत्रकृच्छ्र मिटता है।

विरेचन : रक्त पित्त रोग में, विशेषकर जिन रोगियों को विरेचन कराना हो, उनके लिये आंवले के 20–40 मिलीलीटर रस में पर्याप्त मात्रा में मधु और चीनी को मिलाकर सेवन कराना चाहिये।[1]

कब्ज : आंवले के फल का चूर्ण यकृत बढ़ने, सिर दर्द, कब्ज, बवासीर व बदहजमी रोग में त्रिफला चूर्ण के रूप में प्रयोग किया जाता है। मात्रा 3 से 6 ग्राम जल के साथ दिन में तीन बार। 3–6 ग्राम त्रिफला चूर्ण की फंकी उष्ण जल के साथ रात में सोते समय लेने से कब्ज मिटता है।

अर्श :

1. ऑवलों को भली–भांति पीसकर उस पीठी को एक मिट्टी के बरतन में लेप कर देना चाहिये। फिर उस बरतन में छाछ भरकर उस छाछ को रोगी को पिलाने से बवासीर में लाभ होता है
2. बवासीर के मस्सों से अधिक रक्त स्त्राव होता हो तो 3–8 ग्राम ऑवला चूर्ण का सेवन दही की मलाई के साथ दिन में दो–तीन बार करना चाहिये।

शुक्रमेह : धूप में सुखाये हुये ऑवलों के गुठली रहित 10 ग्राम चूर्ण में दुगनी मिश्री मिलाकर ऊपर से 250 ग्राम तक ताजा जल 15 दिन तक लगातार सेवन करने से स्वप्नदोष, शुक्रमेह आदि रोगों में निश्चित रूप से लाभ होता है।

रक्तातिसार : रक्त अतिसार से अधिक रक्तस्त्राव हो तो ऑवले के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम शहद और 5 ग्राम घी मिलाकर पिलावें और ऊपर से बकरी का दूध 100 ग्राम तक दिन में तीन बार पिलावें।[14]

रक्त गुल्म : ऑवले के रस में काली मिर्च डालकर पीने से रक्त गुल्म नष्ट होता है।[21]

प्रमेह:

1. ऑवला, हरड़, बहेड़ा, नागर–मोथा, दारु–हल्दी, देवदारु इन सबको समान मात्रा में लेकर यथाविधि उनका क्वाथ करके 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम प्रमेह के रोगी को पिला दें।[11]
2. ऑवला, गिलोय, नीम की छाल, परवल की पत्ती को समभाग लेकर 50 ग्राम की मात्रा में लेकर आधा किलो पानी में 12 घंटे भिगोकर फिर पकायें, जब चतुर्थांश शेष रहे, कषाय में 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर दिन मे तीन बार सेवन करने से पित्तज प्रमेह नष्ट होते है।

पित्तदोष : ऑवलों का रस, रसवत् मधु, गाय का घी इन सब द्रव्यों को समभाग लेकर आपस मे घोटकर की गयी रस क्रिया पित्त दोष तथा रक्त विकार जनित नेत्र रोग का नाश करती है।[1] यह तिमिर रोग, नेत्र पटल में उत्पन्न रोगों को भी दूर करती हैं।[12]

मूत्रातिसार : पका हुआ केला एक, आँवले का रस 10 ग्राम, मधु 4 ग्राम, दूध 250 ग्राम, इन्हें एकत्र करके सेवन करने से सोमरोग नष्ट होता है।

रक्त प्रदर : ऑवला स्वरस 20 ग्राम में एक ग्राम जीरा चूर्ण मिला कर दिन में दो बार सेवन करें। ताजे आँवलो के अभाव में शुष्क ऑवला चूर्ण 20 ग्राम रात्रि में भिगोकर सुबह सेवन करे और प्रातः काल भिगोकर रात्रि में छानकर सेवन करें। पित्तप्रकोप से होने वाले बारबार रक्त स्त्राव में धैर्यपूर्वक आँवले का सेवन करने से विशेष लाभ होता है।

श्वेत प्रदर : ऑवले के 20–30 ग्राम बीजों को पानी के साथ पीसकर उस पानी को छानकर, उसमें 2 चम्मच शहद और पिसी हुई मिश्री मिलाकर पिलाने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

मंदाग्नि : पकाये हुए ऑवलों को घियाकस कर ले, उसमें उचित मात्रा में काली मिर्च, सोंठ, सैंधा नमक, भुना जीरा और हींग मिलाकर, बड़िया बनाकर छाया में सुखाकर सेवन करने से यकृत

Scanned by CamScanner

के पित्तस्त्रावादि की वृद्धि होती है, जिससे अरूचि अग्निमॉद्य व मलावरोध दूर हो जाता है। क्षुधा प्रदीप्त होकर मन प्रसन्न हो जाता है।

अतिसार : 5–6 ऑवलों को जल में पीसकर रोगी की नाभि के आसपास उनकी थाल बचा कर लेप कर दें और थाल में अदरक का रस भर दे। रस प्रयोग से अत्यन्त भयंकर नदी के वेग के समान दुर्जय, अतिसार का भी नाश होता है।

मूत्राघात : 5–6 ऑवलों को पीस कर नलों पर लेप करने से मूत्राघात मिटता है।

योनिदाह : ऑवलें के 20 मि.ली. रस में 5 ग्राम शक्कर और 10 ग्राम शहद मिलाकर पीने से योनि दाह में अत्यन्त आराम होता है।

कामला पांडु : 125 से 250 मिलीग्राम लौह भस्म के साथ 1–2 नग ऑवले का सेवन करने से कामला, पांडु और रक्ताल्पता के रोगों में अत्यन्त लाभ होता है।

सुजाक : ऑवले का 2–5 ग्राम चूर्ण को एक गिलास जल से मिलाकर पिलाने से और उसी जल की मूत्रेन्दिय में पिचकारी देने से सूजन व जलन शान्त होती है और धीरे–धीरे घाव भरकर पीव आना बन्द हो जाता है।

वातरक्त : ऑवला, हल्दी तथा मोथा का 50–60 ग्राम क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में 3 बार पीने से वातरक्त शान्त हो जाता है।[19]

पित्तशूल : ऑवला के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर प्रातःकाल खाली पेट पित्तशूल की शान्ति के लिये चाटना चाहिये।[20]

गठिया : 20 ग्राम सूखे ऑवले और 20 ग्राम गुड़ को 500 ग्राम पानी में उबालकर 250 ग्राम पानी रहने पर मल छानकर प्रातः–सायं पिलाने से गठिया में लाभ होता है परन्तु उस समय नमक छोड़ देना चाहिये।

कफ ज्वर : मोथा, इन्द्रजौ, हरड, बहेड़ा, ऑवला, कटुकी, फालसा, इनका क्वाथ कफ ज्वर को नष्ट करता है।[13]

रक्त पित्त :

1. यह तीनों दोषों से उत्पन्न विशेषतः पैत्तिक विकारों में, रक्त पित्त, प्रमेह आदि में प्रयुक्त होता है।[5] इसलिए शरीर का शोधन हो जाने पर ऑवले के 10–20 मिलीलीटर रस में 2 ग्राम हल्दी को 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में 3 बार पिलायें।[6]
2. रक्तपित्त में रक्त के वमन का कारण यदि आमाश्य में व्रण का होना है तो ऑवला चूर्ण 5 से 10 ग्राम की मात्रा में दही के साथ अथवा 10–20 ग्राम क्वाथ को गुड के साथ भी दिया जाता है।

ज्वर दोष : ऑवला, चमेली की पत्ती, नागरमोथा, ज्वासा को समान भाग मे लेकर क्वाथ बनाने के बाद उसमें चतुर्थांश में गुड मिलाकर सेवन करने से ज्वर के रोगी के शरीर के भीतर के दोष शीघ्र ही बाहर निकल आते है।[4]

पित्तज्वर : पके हुए ऑवलों का रस निकालकर उसको खरल में डालकर घोटना चाहिये, जब गाढा हो जाये तब उसमें और रस डालकर घोटना चाहिये। इस प्रकार घोटते–घोटते सब को गाढा करके उसका गोला बनाकर चूर्ण कर लेना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त पित्तशामक है। इसको 2–5 ग्राम की मात्रा मे नित्य दिन में दो बार सेवन करने से पित्त की घबराहट, प्यास और पित्त का ज्वर दूर होता है।

विसर्प : ऑवले के 10–20 ग्राम रस में 10 ग्राम घी मिलाकर दिन में दो–तीन बार पिलाने से विसर्प रोग मिटता है।

कुष्ठ : ऑवला और नीम पत्र समभाग महीन चूर्ण कर रखे, 2 से 6 ग्राम तक या 10 ग्राम तक नित्य प्रातः काल शहद के साथ चाटने से भयंकर गलित कुष्ठ में भी शीघ्र लाभ होता है।

खुजली : ऑवले की गुठली को जलाकर भस्म करें और उसमें नारियल तेल मिलाकर, गीली या सूखी किसी भी प्रकार की खुजली पर लगाने से लाभ होता है।

फोडे : इसका दूध लगाने से बहुत दुःख देने वाले फोड़े मिटते है।

श्रम, दाह : ऑवले के 100 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम गुड डालकर थोड़ा–थोड़ा पीने से श्रम, दाह, शूल, रक्तपित्त या मूत्रकृच्छ्र प्रभृति रोग निवृत होते है। यह तर्पण है।[21]

पित्तरोग : ताजा फलों का मुरब्बा विशेष रूप से आंवले का मुरब्बा 1–2 नग प्रातःकाल खाली पेट खाने से पित्त के रोग मिटते है।

सूखा आंवला

Scanned by CamScanner

चाकू का घाव : चाकू आदि से कोई स्थान कट जाय और विशेष रक्त स्त्राव हो तो तत्काल ऑवले का ताजा रस निकाल कर लगा देने से लाभ होता है।

दीर्घायु :

1. केवल ऑवला चूर्ण को ही रात के समय घी या शहद अथवा पानी के साथ सेवन करने से नेत्र श्रोत्र नासिकादि इन्द्रियों का बल बढता है, जठराग्नि तीव्र होती है तथा यौवन प्राप्त होता है।
2. ऑवले के चूर्ण 3–6 ग्राम को ऑवले के स्वरस से भावित करके 2 चम्मच मधु और 1 चम्मच घी के साथ दिन में दो बार चटाकर पीछे से दूध पीये इससे अस्सी वर्ष का बूढ़ा भी जवान की भाँति प्रसन्न होता है।[23]

1. हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तम् माधुर्यशैत्यतः।
कफं रुक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित्।। (भाव प्रकाश निघंटु)
2. खदिरामयामलक हरिद्रारुष्कसप्तपर्णारग्वधकरवीरविऽङ्गजा नीप्रबाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति। (सुश्रुत)
3. हरीतक्यामलकविभीतकानि त्रिफला।
त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठ विनाशनी। (सुश्रुत सू० 38)
4. आमलकीहरीतकी पिप्पल्यश्चित्रकश्चेति।
आमलक्यादिरित्येष गणः सर्वज्वरापह।। (सुश्रुत)
अम्लं समधुरं तिक्तं कषायं कटुकं सरम्।
चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकी फलम्।। (सुश्रुत)
5. हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तुविशेषतः।
रक्तपितप्रमेहघ्न परं वृष्यंरसायनम्। (भाव प्रकाश)
5. ततः शुद्ध देह भामल करसेन हरिद्रां मधु संयुक्ता पाययेतः। (सुश्रुत)
7. एवं मामलकं चूर्ण स्वरसेनैव भावितम्।
शुर्करामधु सर्पिमियुक्त लदिवा पयः पिवेत्।
एतेना शीनि पषौऽपि पुवेन परिहृष्यति। (सुश्रुत)
8. जात्यामल कमुस्तानि तद् धन्यवय वासकम्।
विवद्वदोषों ज्वरितः कषायं सगुडं पिवेत्।। (चरक)
9. त्रिवृताम मयां प्राज्ञः फलान्यारग्वधस्य वा।
त्राय माणां गवक्ष्यां मूलभामल कानि वण।
विरेचनं प्रमुञ्चजति प्रभूत मधुशर्करम्।
रसः प्रशस्यते तेषां रक्त पिते विशेषतः। (चरक)
10. बैदूर्य मुक्तामाणी गैरिकाणां मृच्छङ्गः हेमामल कोदकानाम्।
मधूद कस्येक्षुरसत्य चैव पानाच्छमं गच्छति रक्त पित्तम्।। (चरक)
11. दार्वी सुराहा त्रिफला समुस्तां कषायमुत्क्वाथ पिबेत् प्रमेही
श्रीद्रेणा युक्ता हरिद्रा पिबेद् रसेनामल की फलानाम्। (चरक)
12. धात्री रसांजन क्षौद्र सर्पिमिस्तु रस क्रिया।
पित्तरक्ता रोग हनी तैमिर्य परला पहा।। (चरक)
13. मुस्तं वत्सकबीजानि त्रिफला कटुरोहिणी।
परुषकाणि च क्वाथः कफज्वरविनाशनः।। (भैषज्य रत्नावली)
14. जम्ब्वाम्रामलकानान्तु पल्लवानथ कुट्टयेत्।
संगृह्य स्वरसं तेषामजाक्षीरेण योजयेत्।।
तत्पिवेन्मधुना युक्तं रक्तातीसारनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)
15. नासाप्रवृत्तरुधिरंघृतभ्रष्टं श्लक्ष्णपिष्टमामलकम।
सेतुरिव तोयवेगं रुणद्धिमूर्ध्नि प्रलेपेन।। (भैषज्य रत्नावली)
16. कृष्णामलकशुण्ठीनां चूर्णं मधुसिताघृतैः।
मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिबर्हणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
17. अजमोदां निशां धात्री क्षारं बह्निं विचूर्णयेत्।
मधुसर्पियुतं लीढ्वा स्वरभेदम्पोहति।। (भैषज्य रत्नावली)
18. पिष्टवा धात्रीफलं द्राक्षां शर्करां च पलोन्मिताम्।
दन्त्वा मधुपलं चात्र कुडवं सलिलस्य च।। (भैषज्य रत्नावली)
19. धात्रीहरिद्रामुस्तानां कषायं वा समाक्षिकम्।। (भैषज्य रत्नावली)
20. प्रलिह्यात् पित्तशूलघ्नं धात्रीचूर्ण समाक्षिकम्। (भैषज्य रत्नावली)
21. पीतो धात्रीरसो युक्तो मरिचैश्चास्त्रगुल्मनुत्।। (भैषज्य रत्नावली)
22. गुडेनामलकं वृष्यं श्रमघ्नं तर्पणं परम्।
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्र निवारणाम्। (भैषज्य रत्नावली)
23. कदलीनां फल पक्वं धात्रीफलरसं मधु।
शर्करापयसा पीतमपां धारणामुत्तमम्। (भैषज्य रत्नावली)
24. धात्र्याम्रमज्जलेपात्स्यात् स्थिरोरुस्निग्धकेशता।। (भैषज्य रत्नावली)
25. धात्रीफलनिर्यासो नवद्दक्कोपं निहन्ति पूरणतः।
सक्षाद्रसैन्धवो वा शिग्रूद्भवपत्ररससेकः।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

अमरूद

15

वैज्ञानिक नाम	:	*Psidium guajava* L.
कुलनाम	:	Myrtaceae
अंग्रेजी नाम	:	Guava
संस्कृत	:	पेरूक, दृढबजती, बहुबीज
हिन्दी	:	अमरूद, सफरी
गुजराती	:	जानफल, जमरूख
मराठी	:	पेरू, जाम
बंगाली	:	चिवारा, गोआर्चाफल
तैलगु	:	गोइया
अरबी	:	कमसुरा
कन्नड़	:	शिवे

परिचय

अमरूद के फल से सब परिचित हैं. इसका गूदा लाल और सफेद दो रंगों में मिलता है। स्वाद में भी खट्टा, मीठा और फीका दो–तीन प्रकार का होता है। वर्षा ऋतु की अपेक्षा शरद ऋतु के फल अधिक मधुर तथा स्वादिष्ट होते हैं। यह कृषिजन्य तथा वन्यज दोनों अवस्थाओं में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 15 से 25 फुट तक ऊंचा होता है। पत्ते 3–6 इंच तक लम्बे छोटी–छोटी टहनियों पर कहीं विपरीत और कहीं एकान्तर लगे रहते हैं। काण्ड मृदु, बहुशाखीय तथा पुष्प छोटे पाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी जड़ व छाल में टेनिक एसिड काफी मात्रा में रहता है। इसके अतिरिक्त कैल्सियम आक्जेलेट के रवे भी इसमें पाये जाते हैं। इसके पत्तों में राल, वसा, टेनिन, उड़नशील तेल, हरित और खनिज लवण होते हैं। अमरूद के पेड़ में फास्फोरिक और अम्ल सत्व के साथ मिले हुए चूना तथा मैगनीज वर्तमान होते हैं। इसमें विटामिन बी तथा सी दोनों पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

अमरुद के फल, रूचिवर्द्धक, शुक्रवर्द्धक, तृषाशामक हृदय को बल देने वाले, कृमिघ्न एवं वमननाशक है। ये रेचक तथा कफ निःस्सारक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

शिरशूल : सूर्योदय के पूर्व ही सवेरे हरे कच्चे अमरुद को पत्थर पर घिसकर जहां दर्द होता है, वहां खूब अच्छी तरह लेप कर देने से सिर दर्द नही उठने पाता, अगर दर्द शुरू हो गया हो तो शांत हो जाता है। यह प्रयोग दिन में तीन–चार बार करना चाहिए।

दंत रोग : 3–4 पत्तों को चबाने या पत्तों के काढ़े में फिटकरी मिला कर कुल्ला करने से दंत पीड़ा दूर होती है।

मुंह के छाले : इसके कोमल पत्तों में कत्था मिलाकर पान की तरह चबाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

मानसिक विकार : इसके पत्तों का फांट मस्तिष्क विकार, वृक्क प्रवाह ओर शरीरिक एवं मानसिक विकृत स्थिति में प्रयोग किया जाता है।

आक्षेपरोग : इसके पत्तों के अर्क या टिंचर को बच्चों की रीढ़ की हड्डी पर मालिश करने से उनका आक्षेप रोग दूर हो जाता है।

हृदय : अमरुद के फलों के बीज निकाल कर बारीक–बारीक कत. रकर शक्कर के साथ धीमी आंच पर बनाई हुई चटनी हृदय के लिए अत्यन्त हितकारी होती है तथा कब्ज दूर करती है।

जुकाम : चिरकाल से रुके हुए प्रतिश्याय में रोगी को एक अच्छा बड़ा अमरुद बीज निकालकर खिला दें और ऊपर से ताजा जल रोगी नाक बंद करके पी ले। दो–तीन दिन में ही रुका हुआ जुकाम बहकर साफ हो जायेगा। दो–तीन दिन बाद अगर स्राव रोकना हो तो 50 ग्राम गुड़ रात्रि में बिना जल पीये खा लें।

खांसी और कफ विकार :

1. यदि सूखी खांसी हो और कफ न निकलता हो तो, सुबह ही सुबह ताजे एक अमरुद को तोड़कर, चाकू की सहायता के बिना चबा–बचा कर खाने से खांसी 2–3 रोज में ही दम तोड़ देती है।
2. अमरूद का भबक यन्त्र द्वारा अर्क निकालकर उसमें शहद मिलाकर पीने से भी सूखी खांसी में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

3. यदि बलगम खूब पड़ता हो और खांसी अधिक हो, दस्त साफ न हो हल्का बुखार भी हो तो अच्छे ताजे मीठे अमरूदों को अपनी इच्छानुसार खायें।
4. यदि जुकाम की साधारण खांसी हो तो अधपके अमरूद को आग में भूनकर उसमें नमक लगाकर खाने से लाभ होता है।

वमन : इसके पत्तों का क्वाथ 10 ग्राम पिलाने से वमन बंद हो जाती है।

तृष्णा : अमरुद के छोटे–छोटे टुकड़े काटकर पानी में डाल दें। कुछ देर बाद इस पानी को पीने से मधुमेह जन्य या बहुमूत्र जन्य तृष्णा को उत्तम लाभ होता है।

कब्ज :

1. अमरुद को नाश्ते के समय काली मिर्च, काला नमक, अदरक के साथ खाने से अजीर्ण, गैस, अफारा और कब्ज की तकलीफ दूर होकर भूख बढ़ जायेगी। अमरुद को खाने के साथ खाने से भी संग्रहणी और अतिसार में लाभ होता है।
2. इसके कोमल पत्तों के 10 ग्राम स्वरस में थोड़ी शक्कर मिलाकर प्रतिदिन केवल एक बार प्रातःकाल सेवन करने से सात दिन में अजीर्ण में लाभ होता है।

अतिसार :

1. बच्चे का पुराना अतिसार मिटाने के लिए इसकी 15 ग्राम जड़ को 150 ग्राम जल में ओटाकर, जब आधा जल शेष रह जाये तो 6–6 ग्राम तक दिन में दो–तीन बार पिलाना चाहिए।
2. कच्चे अमरुद के फल औटा के खिलाने से भी अतिसार मिटता है।
3. अमरुद की छाल व इसके कोमल पत्रों का 20 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में लाभ होता है।

प्रवाहिका : अमरूद का मुरब्बा प्रवाहिका एवं अतिसार में लाभदायक है।

गुदभ्रंश :

1. बच्चों के गुदभ्रंश रोग पर इसकी जड़ की छाल का क्वाथ गाढ़ा–गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।
2. तीव्र अतिसार में गुदभ्रंश होने पर अमरुद के ताजे पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से शोथ कम हो जाता है और गुदा अंदर बैठ जाती है।
3. आंतरिक प्रयोग के लिए अमरुद और नागकेशर दोनों को महीन पीसकर उड़द के समान गोलियां बनाकर देनी चाहिए।
4. अमरुद के वृक्ष की छाल, जड़, और पत्ते, बराबर–बराबर 250 ग्राम लेकर जौकुट कर लें तथा एक कि॰ग्रा॰ जल में उबालें, जब आधा जल शेष रह जायें, तब इस क्वाथ से गुदा को बार–बार धोना चाहिए और उसे अंदर धकेलें। इससे गुदा अंदर चली जायेगी।

गठिया : इसके कोमल पत्तों को पीसकर गठिया के वेदना युक्त स्थानों पर लेप करने से लाभ होता है।

विषमज्वर : मलेरिया ज्वर में अमरुद को खाने से इकतारा तथा चातुर्थिक ज्वर में लाभ होता है।

ज्वर : इसके कोमल पत्तों को पीस–छानकर पिलाने से ज्वर के उपद्रव्य दूर होते हैं।

विदाह : अमरुद के बीज निकालकर पीसकर गुलाब जल और मिसरी मिला कर पीने से अत्यंत बढ़े हुए पित्त और विदाह की शांति होती है।

विशेष : इसके पत्तों के स्वरस को भरपेट पिलाने से या अमरुद खाने से भांग, धतूरा आदि का नशा दूर हो जाता है।

Scanned by CamScanner

16 अनार

वैज्ञानिक नाम	:	*Punica granatum* L.
कुलनाम	:	Punicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Pomegranate
संस्कृत	:	दाड़िम, लोहित पुष्पक, दंत बीज
हिन्दी	:	अनार
गुजराती	:	दाड़म
मराठी	:	डालिंब
बंगाली	:	दालिम
तैलगु	:	दानिम्मा
तमिल	:	मदुलाई
फारसी	:	अनार, शीरी अनार
अरबी	:	रुम्मान, हामिज

परिचय

भारतवर्ष में अनार के वृक्ष सर्वत्र पाये जाते हैं। पश्चिमी हिमालय प्रदेश और सुलेमान की पहाड़ियों पर तथा ईरान एवं अफगानिस्तान में यह स्वयं जात होता है। स्वाद भेद से अनार की तीन किस्में पाई जाती है। देशी अनार खट्टे–मीठे होते हैं। काबुल और कन्धार के अनार मीठे होते है। काबुली अनारों में एक गुठली रहित, सरीखा अत्यन्त मीठा अनार होता है। जिसे बेदाना अनार कहते है, यह सर्वोत्तम होता है। अनार का केवल फल ही नहीं, अपितु इस वृक्ष का सर्वांग ही औषधीय गुणों से भरपूर होता है। फल की अपेक्षा कली व छिल्के में अधिक गुण पाये जाते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका गुल्म वा वृक्ष 10–15 फुट ऊँचा होता है। काण्डत्वक, चिकनी व धूसरवर्ण की होती है। पत्र लगभग 2–3 इंच लम्बे और आधे से चौथाई इंच चौडे तथा दोनों सिरों पर पतले, आयताकार या अभिलट्वाकार होते है। पुष्प नांरगी, रक्तवर्ण, कभी–कभी पीले होते हैं जो प्रायः एकल या कभी–कभी गुच्छो में लगते हैं। फल

Scanned by CamScanner

गोलाकार लगभग दो इंच व्यास का, बाह्यकोष से युक्त, फलत्वक् चर्मवत् काष्ठीय, फल का भीतरी भाग अनेक पर्दो से विभक्त, जिसमें अनेक कोणीय बीज होते है जिनका आवरण मांसल, रक्तवर्ण, गुलाबी या श्वेत होता है। पुष्प अप्रैल–मई में तथा फल जुलाई–सितम्बर में आते है।

रासायनिक संघटन

फल त्वक् में 28 प्रतिशत तक टैनिक एसिड तथा पीत रंजक तत्व पाया जाता है। कांडत्वक् एवं मूलत्वक में 0.5 से 0.9 प्रतिशत तक क्षाराभ पाये जाते है। पेलीटिएरीन क्षाराभ का मुख्य घटक है। शुद्ध पेलीटिएशीन रंगहीन द्रव के रूप में होता है जो ऑक्सीजन के संपर्क से भूरे रंग के रालीय द्रव के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसके अतिरिक्त, इनमें टैनिक एसिड होता है।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, तृप्तिकारक, पाचन, हल्का किंचित कसैला, मलावरोधक, स्निग्ध, मेध्य, बल्य, ग्राही, दीपन तथा तृष्णा, दाह, ज्वर, हृदय रोग, मुख दुर्गन्ध, कंठरोग और मुख रोगनाशक है।[1]

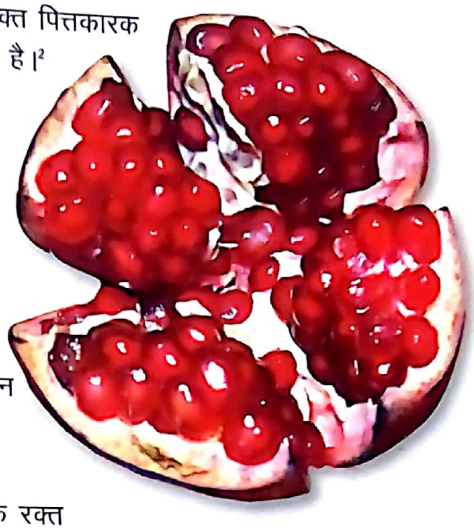

खट्टा अनार : रूक्ष, रक्त पित्तकारक तथा वात कफ नाशक है।[2]

खट्टा–मीठा अनार: दीपन रुचिकारक, वात पित्तनाशक और पाचन में हल्का है। अनारदाना (कच्चा सुखाया हुआ अनार) रूचिकारक हृदय को प्रिय और वातानुलोमन है।

काण्ड की छाल: कृमिनाशक मलरोधक रक्त अतिसार और कास नाशक है।

कच्चा फल: पाचक पौष्टिक, क्षुधा वर्धक, पित्तकारक और वमन को रोकने वाला है।

पुष्प : नासिका से रक्त स्त्राव को दूर करता है। अनार की जड़ कृमिहर हैं। फीता कृमियों को नष्ट करने की यह उपयुक्त औषधि है।[3,4]

औषधीय प्रयोग

नक्सीर :

1. अनार की कली जो निकलती हुई हवा के झोको से नीचे गिर पड़ती है, अतिसंकोचन और क्लेदघ्न होती है। इनका रस 1–2 बूंद नाक में टपकाने से या सुंधाने से नाक से खून बहना बन्द हो जाता है। यह नक्सीर की अति उत्तम औषधि है।
2. अनार के छिलके को छुहारे के पानी के साथ पीसकर लेप करने से सूजन में तथा इसके शुष्क महीन चूर्ण का नस्य लेने से नक्सीर में लाभ होता है।
3. अनार के पत्तों के क्वाथ को या 10 ग्राम रस पिलाने से तथा पीसकर मस्तक पर लेप करने से नक्सीर में लाभ होता है।

दंतशूल :

1. अनार तथा गुलाब के शुष्क फूल, दोनों को पीसकर मंजन करने से मसूड़ों से पानी आना बन्द हो जाता है। केवल अनार की कलियों के चूर्ण का मंजन करने से मसूढों से खून आना बन्द हो जाता है।
2. मुख और मसूढों के विकार में इसकी मूलत्वक के क्वाथ से कुल्ले कराने से लाभ होता है।
3. मीठे अनार के छाया शुष्क 8–10 पत्तों के चूर्ण के मंजन से दांतो का हिलना, मसूढों से खून और पीव का आना या सूजन में फायदा पहुँचता है।

अनिद्रा : अनार के ताजे पत्ते 20 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में उबालें, जब 100 ग्राम शेष रह जाये तो इसमें गरम दूध मिलाकर पीयें। इससे शारीरिक व मानसिक थकावट मिटती है। अनिद्रा रोग मिटता है।

मुंह के छाले : इसके 25 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छाले आदि मुख रोग दूर होते है।

नेत्र विकार :

1. अनार के 5–6 पत्रों को पानी में पीसकर दिन में 2 बार लेप करने तथा पत्तों को पानी में भिगोकर पोटली बनाकर आंखों पर फेरने से दुखती आंखों में लाभ होता है।
2. अनार के 8–10 ताजे पत्तों का रस खरल में डालकर शुष्क हो जाने पर कपड़े में छानकर रख दें, प्रातः–सायं सलाई द्वारा लगाये, इससे खुजली, नेत्रस्राव, पलको की खराबी, आदि रोग दूर होते है।

कर्ण विकार :

1. अनार के ताजे पत्तों का रस 100 ग्राम, गौमूत्र 400 ग्राम, और तिल तैल 100 ग्राम, तीनों को धीमी आंच पर पकावें, तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। इसकी कुछ बूदें थोड़ा गरम कर प्रातः–सायं कान में डालने से कान की पीड़ा, कर्णनाद और वधिरता में लाभ होता है।
2. अनार के पत्तों के रस में समभाग बेल पत्र स्वरस और गाय का घी मिला घी सिद्ध कर लें। 20 ग्राम घी (गरम), 250 ग्राम मिश्री मिले दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से बहरापन में लाभ होता है।

कंठ विकार :

1. अनार के ताजे पत्रों के 1 किलो रस में मिश्री मिलाकर, शर्बत

Scanned by CamScanner

बना लें, 20–20 ग्राम दिन में 2–3 बार चाटने से आवाज का भारीपन, खांसी, नजला तथा प्रतिश्याय दूर होता है।

2. इसके छाया शुष्क पत्तों के महीन चूर्ण में शहद या गुड मिलाकर झड़ बेर जैसी गोलियाँ बना छाया शुष्क कर लें। इन गोलियों को मुंह में रख कर चूसें।

खालित्य–पलित :

1. ताजे हरे पत्तों के रस में 100 ग्राम पत्तों का कल्क मिला, और आधा किलो सरसों का तैल मिला, तैल सिद्ध कर लगाने से सिर का गंजापन दूर होता है तथा बालों का झडना रूकता है।
2. इस तैल की मालिश करने से चेहरे की कील, झांई और काले धब्बे भी नष्ट होते हैं।

शिरः शूल :

1. अनार के छाया शुष्क आधा किलो पत्तों में आधा किलो सूखा धनिया मिलाकर महीन चूर्ण कर लें, इसमें 1 किलो गेंहूँ का आटा मिलाकर, 2 किलो गाय के घी में भून ले, ठंडा होने पर 4 किलो खांड मिला लें। प्रातः–सायं गरम दूध के साथ 50 ग्राम तक मात्रा सेवन करने से सिर दर्द और सिर चकराना दूर होता है।
2. छाल को घिसकर कपाल पर लेप करें, इससे शिरःशूल, आधाशीशी में सद्य लाभ होता है।

उन्माद :

1. अनार के पत्ते और गुलाब के ताजे पुष्प 10–10 ग्राम (ताजे फूलों के अभाव में सूखे फूल 5 ग्राम) लें। आधा किलो जल में पकाकर 250 ग्राम शेष रहने पर, 10 ग्राम गाय का घी मिलाकर गरम ही गरम सुबह–शाम पिलाने से उन्माद और मिर्गी में लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम पत्तों के क्वाथ में 10–10 ग्राम गाय का घी और खांड मिलाकर पिलाने से मिर्गी या अपस्मार में लाभ होता है।

राजयक्ष्मा :

1. अनार के 200 ग्राम स्वादिष्ट रस में पीपल, श्वेत जीरा, सौंठ और दालचीनी का चूर्ण 40–40 ग्राम, उत्तम केशर 10 ग्राम, पुराना गुड़ 200 ग्राम मंद आंच पर पकावें, जब गोली बनने योग्य गाढ़ा हो जाये, तो नीचे उतारकर 10 ग्राम छोटी इलायची का चूर्ण डालकर कर 6–6 ग्राम की गोलियाँ बनाकर, प्रातः सायं 1–1 गोली बकरी के दूध के साथ सेवन करें।
2. यदि कमजोरी अधिक हो, परन्तु दस्त और खांसी न हो तो, ताजे अनार का रस जितना पी सकें, पिलावें।
3. यदि खांसी हो तो अनार का अर्क 2–2 चम्मच दिन में तीन–चार बार पिलावें।

इन सब प्रयोगों से राजयक्ष्मा में लाभ होता है व इससे शरीरिक क्षीणता भी कम होती है।

उरक्षत : दिन में 2–3 बार इसके पत्रों का क्वाथ 10–20 ग्राम पीने से उरक्षत में लाभ होता है।

हिक्का : 20 ग्राम अनार के शरबत में छोटी इलायची के बीज, बंशलोचन, सूखा पोदीना, जहरमोहरा खताई और अगुरू 1–1 ग्राम तथा पीपल 500 मिलीग्राम का सूक्ष्म चूर्ण मिला चटनी बना लें। आवश्यकतानुसार थोड़ी–थोड़ी चटनी चाटने से हिचकी शीघ्र दूर होती है।

कुचशैथिल्य :

1. अनार के पत्ते, छिलका, फुल, कच्चे फल और फल और जड़ की छाल समभाग लेकर, मोटा पीसकर, दुगना सिरका, तथा चार गुना गुलाब जल में भिगाये। चार दिन बाद इसमें सरसों का तेल मिला धीमी आंच पर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतले में भरकर रख लें। इस तेल की रोज स्तनों पर मालिश करें तो स्तन की मांस की शिथिलता में इस से लाभ होता है साथ ही जिन के शरीर में झुर्रियां पड़ गयी हों, मांस ढीला पड़ गया हो, उन्हें भी इस तेल की मालिश से निश्चित लाभ होता है।
2. अनार के पत्तों को कुचल कर 1 किलो रस निकाल लें, इसमें आधा किलो मीठा तेल (तिल तेल) मिलाकर धीमी आंच पर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतलों में भर कर रख लें। दिन में 2–3 बार मालिश करने से मांस का ढीलापन में लाभ होता है।
3. अनार फल के 1 किलो छिल्के को 4 किलो जल में डालकर उबाल लें, जब जल 1 किलो शेष रह जाये तो उसमें 250 ग्राम सरसों का तेल (यदि बादाम रोगन हो तो उत्तम है), डालकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल की मालिश करने से कुछ ही दिनों में मांस का ढीलापन दूर हो झुर्रियां मिटती हैं तथा त्वचा में निखार आता है।

कासश्वास :

1. अनारदाना सूखा 100 ग्राम, सौंठ, काली मिर्च, पीपल, दालचीनी, तेजपात, इलायची 50–50 ग्राम एकत्र चूर्ण कर उसमें समभाग खांड मिला लें। दिन में 2 बार मधु के साथ 2–3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से कास, श्वास, हृदय रोग, पीनस आदि दूर होते है। यह उत्तम दीपन, पाचन और रोचक है।
2. केवल फल के छिलके को मुहँ में रखकर चूसने से भी खांसी में लाभ होता है।
3. अनार का छिल्का 40 ग्राम, पीपल और जवाखार 6–6 ग्राम तथा गुड़ 80 ग्राम की चाशनी बनाकर उसमें सबका महीन चूर्ण मिलाकर 500–500 मिलीग्राम की गोली बनाकर 2–2 गोली दिन में 3 बार गर्म जल से सेवन करें। इसमें काली मिर्च 10 ग्राम मिला लेने से और भी उत्तम लाभ होता है।

हृदय विकार :

1. अनार के 10 ग्राम ताजे पत्तों को 100 ग्राम जल में पीस छानकर प्रातः–सायं पिलाने से हृदय की धड़कन में लाभ होता है।
2. अनार का शर्बत 20–25 मिलीलीटर का नित्य सेवन करें।
3. छाया शुष्क 6 ग्राम महीन पत्र चूर्ण को, ताजे जल के साथ सेवन करने से तथा दाद, चंबल (सोरायसिस) जैसे रक्तविकार, कुष्ठ,

Scanned by CamScanner

प्रमेह, दिल की धड़कन, नासूर, क्षत, पित्तज्वर, वातकफज्वर में गर्म जल के साथ लेने से लाभ होता है।

अजीर्ण :

1. उत्तम पके हुये अनार के 10 ग्राम रस में समभाग भुना हुआ जीरा और गुड़ मिलाकर दिन में 2 या 3 बार लेने से किसी भी प्रकार का अजीर्ण शीघ्र नष्ट होता है।
2. छाया शुष्क अनार पत्र चूर्ण 4 भाग और सैन्धा नमक 1 भाग दोनों को महीन पीसकर चूर्ण बनाकर रखें। 4–4 ग्राम प्रातः–सायं भोजन से पूर्व जल के साथ सेवन करने से क्षुधानाश और अजीर्ण दूर होता है।
3. अनार का रस, शहद और तिल तेल समभाग, कुल मिश्रण 50 ग्राम इसमें 6 ग्राम जीरा चूर्ण और 6 ग्राम खांड मिलाकर मुख में भरे और थोड़ी देर मुख को चलाते रहें। जब आंख नाक से पानी निकलने लगे तो कुल्ला कर दें और फिर दुबारा नया रस मुख में भरें। दिन में 8–10 बार करें। इसके अलावा जब अत्यन्त सुधानाश हो तथा यकृत में विकार हो तब उस अवस्था में भी लाभ होता है।
4. केवल खट्टे मीठे अनार रस 1 ग्राम मुंह में धारण कर धीरे–धीरे चलाकर पीवें। इस प्रकार 8 या 10 बार करने से मुख का स्वाद सुधर कर आंत्र दोषों का पाचन होता है। ज्वर के कारण से हुई अरूचि भी दूर होती है।
5. मीठे अनार के रस में शहद मिलाकर पिलाने से अरूचि में लाभ होता है।

अतिसार :

1. अनार फल के छिल्के के 2–3 ग्राम चूर्ण का प्रातः–सांय ताजे जल के साथ प्रयोग करने से अतिसार तथा आम अतिसार में लाभ होता है।
2. अनार की ताजी कलियों के साथ छोटी इलायची के बीज और मस्तंगी को पीस, शक्कर मिला अवलेह तैयार कर, चटाने से बालकों के पुराने अतिसार और प्रवाहिका में विशेष लाभ होता है।
3. अनार फल को छिल्के सहित कूट कर रस निचोड कर 30–50 ग्राम तक पिलावें। इसमें शक्कर मिलाकर पिलाने से पित्त जन्य वमन, खुजली और थकान में लाभ होता है।
4. अनार छाल (फल या जड़ की छाल लें) चूर्ण 1 ग्राम समभाग ज़ायफल का चूर्ण और केशर 250 मिलीग्राम खरल कर शहद के साथ सेवन करें।

रक्त अतिसार :

1. अनार फल की छाल और कड़वे इन्द्र जौ 20–20 ग्राम यवकूट कर 640 ग्राम जल में मिला चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर दिन में 3 बार पिलावें। यदि उदर में ऐंठन हो तो 30 मिलीग्राम अफीम मिला लें, तुरन्त लाभ होगा।
2. कुडाछाल 80 ग्राम, को कूटकर 640 ग्राम जल में पकावें। चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। अब इसमें 160 ग्राम अनार का रस मिला पुनः पकावें। जल राब के समान गाढी हो जाये तो उतार कर रख लें। 20 ग्राम तक्र के साथ सेवन करने से घोर रक्तातिसार में लाभ होता है।

कृमि :

1. अनार की जड़ की छाल 50 ग्राम, पलाश बीज 6 ग्राम, बायविडगं 10 ग्राम और जल सवा किलो, सबको कुटकर एकत्र मिलाकर मन्द अग्नि पर पकावें, आधा शेष रहने पर उतार कर ठंडा कर छान लें। 50–50 ग्राम, आधा–आधा घंटे के अंतर से पिलावें, जब बैचेनी महसूस हो तो, एरण्डी तैल का जुलाब लें।
2. यदि कद्दू दाना कृमि ही हो तो 50 ग्राम जड़ की दरदरा कूटी छाल को 2 किलो जल में पकाकर आधा शेष रहने पर उतार लें। 50 ग्राम प्रातः काल खाली पेट, आधा–आधा घंटे के अन्तर से 4 बार सेवन करें। फिर 1 बार एरंड तेल की सेवन करे। बालकों को क्वाथ 10 ग्राम दें।
3. छाया शुष्क अनार के पत्तों को बारीक पीस छानकर 6 ग्राम प्रातः काल गाय की छाछ के साथ या ताजे पानी के साथ प्रयोग करें। इससे पेट के सब कीड़े दूर हो जाते है।
4. जड़ की छाल 10 ग्राम, वायबिडंग और इन्द्र जौ 6–6 ग्राम कूटकर क्वाथ कर सेवन करें।
5. खट्टे अनार के छिलके और शहतूत 20–20 ग्राम को 200 ग्राम पानी में उबालकर पिलावें।

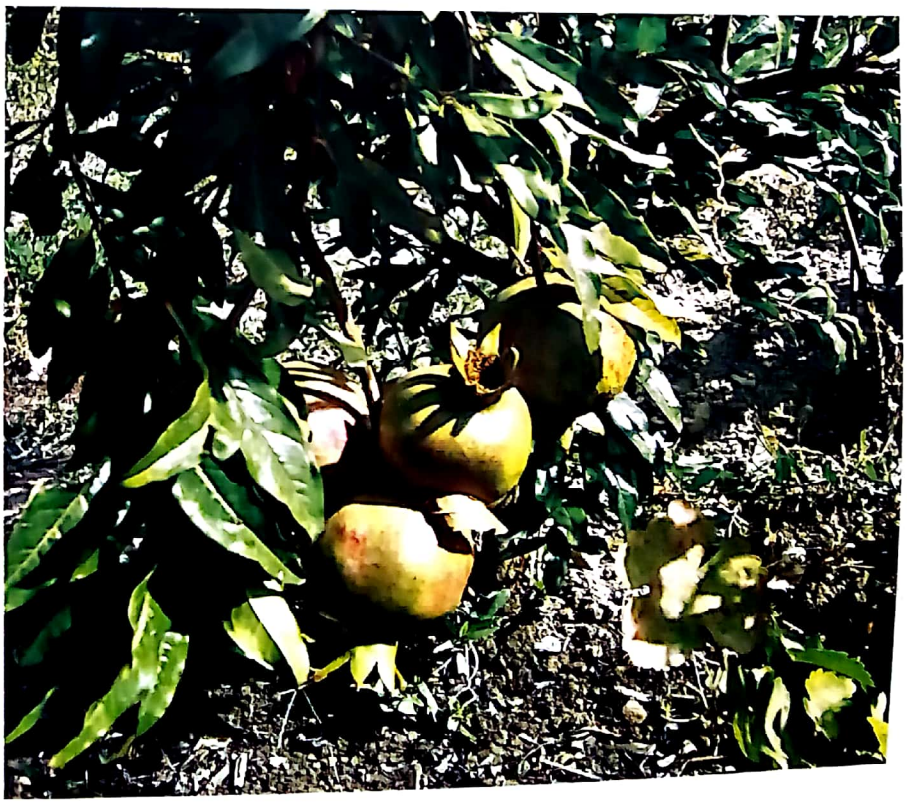

Scanned by CamScanner

पांडु (कामला) :

1. 250 ग्राम उत्तम अनार के रस में 750 ग्राम चीनी मिलाकर चाशनी बना लें। इसी का सेवन दिन में 3 या 4 बार करें।
2. छाया शुष्क अनार पत्र का महीन चूर्ण 6 ग्राम को प्रातः गौ की छाछ तथा सायं उसी छाछ के पनीर के साथ सेवन करावें।

अर्श :

1. मीठे फल का छिलका शीतल तथा खट्टे फल का छिलका शीतल रूक्ष होता है अतः अर्श के लिये विशेष उपयोगी है।
2. अनार की जड़ के 100 ग्राम क्वाथ में 5 ग्राम सौंठ चूर्ण मिलाकर दिन में दो–तीन बार पीने से रक्तार्श में लाभ होता है।
3. अनार के पत्तों का 5–10 मिलीग्राम रस प्रातः–सायं पीने से रक्तार्श में लाभ होता है।
4. अनार के 8–10 पत्रों को पीस टिकिया बना गरम घी में भूनकर बांधने से अर्श के मस्सों में लाभ होता है।

रक्त वमन : इसके पत्रों के 5–10 मिलीग्राम रस को दिन में दो बार पिलाने से, रक्त वमन, रक्त अतिसार, रक्त प्रमेह, सोमरोग, मूर्च्छा और लू लगने में लाभ होता है।

वमन : अनार के 10 मिलीलीटर गुनगुने रस 5 ग्राम में शक्कर मिला पिलाने से वमन में लाभ होता है।

हैजा :

1. अनार के 6 ग्राम हरे पत्तों को 20 ग्राम जल के साथ पीस छानकर उसमें 20 ग्राम चीनी का शरबत मिलाकर 1–1 घंटा बाद तब तक पिलावें जब तक पूर्ण लाभ न हो जायें। यह वमन को भी बन्द करता है।
2. खट्टे अनार का 10–15 मिलीलीटर रस का नियमित रूप से सेवन भी हैजे में गुणकारी है।

गुदभ्रंश और गर्भाशय भ्रंश :

1. अनार के ताजे 250 ग्राम पत्तों को 1 किलो पानी में पकाकर, आधा जल शेष रहने पर छानकर दिन में 2–3 बार इस पानी से गुदा को धोने से गुदभ्रंश रोग में लाभ होता है।
2. गर्भाशय के बाहर निकल आने पर भी यह प्रयोग गुणकारी है। छाया शुष्क अनार पत्तों का चूर्ण 6–6 ग्राम प्रातः–सायं ताजे जल के साथ सेवन कराने से स्त्रियों में लाभ होता है।

मूत्राघात :

1. अनार के रस में छोटी इलायची के बीज और सौंठ का चूर्ण मिलाकर पिलावें।
2. अनार पत्र 10 ग्राम और हरा गोखरू 10 ग्राम दोनों को 150 ग्राम जल में पीस–छान कर पिलावें।

गर्भपात :

1. अनार के ताजे 20 ग्राम पत्तों को 100 ग्राम जल में पीस–छानकर पिलाते रहने से तथा पत्तों को पीसकर पेडू पर लेप करते रहने से गर्भस्त्राव या गर्भपात का खतरा नहीं रहता है।
2. अनार की एक–दो ताजी कली पानी में पीसकर पिलाने से, गर्भ धारण शक्ति बढती है तथा प्रदर रोग दूर होता है।
3. यदि गर्भवती का हृदय कमजोर हो तो मीठे अनार दाने खायें।
4. यदि पाँचवे या छठे मास में गर्भ अस्थिर हो तो ताजे अनार पत्र को पीस उसमें थोडा सा घिसा हुआ चन्दन, दही और शहद मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

आंख की फूली पर : अनार वृक्ष जो अच्छी तरह पका हो, उसकी छाल को पके हुये अनार फल के रस में घिसें। फिर इसमें 1 या 2 लाल गुंजा का छिलका निकाल कर घिसें। इसे फूली पर दिन में 3 बार लगावें।

व्रण :

1. फूलों की कलियाँ, जो निकलते ही हवा के झोकों से नीचे गिर पड़ती है, इन्हें जलाकर क्षतों पर बुरकने से वे शीघ्र सूख जाते है।

2. अनार के 50 ग्राम पत्तों का 1 किलो जल के साथ चतुर्थांश क्वाथ बनाकर व्रणो को धोने से विशेष लाभ होता है।
3. 8–10 पत्तों के कल्क का लेप उपदंश के व्रणों पर करने से बहुत लाभ होता है। साथ ही साथ पत्र चूर्ण 10 से 20 ग्राम का सेवन भी करना चाहिये।
4. नाक, कान में व्रण हो या पीड़ा हो तो मूलत्वक क्वाथ 2–2 बूंद को डालने से या पिचकारी देने से लाभ होता है।
5. इसकी जड की छाल का 5–10 ग्राम सूखा चूर्ण बुरकने से उपदंश के व्रणों में लाभ होता है।

दाह :

1. अनार के 10–12 ताजे पत्तों को पीसकर हथेली और पाँव के तलुवों पर लेप करने से हाथ–पाँव

Scanned by CamScanner

की जलन में आराम होता है।

2. 250 ग्राम अनार के ताजे पत्तों को 5 किलो जल में उबालें तथा चार किलो जल शेष रहने पर नहाने के लिए प्रयोग करने से उष्णकाल की पित्ती शान्त होती है।

कंडूरोग : मीठे अनार के 8–10 ताजे पत्तों को पीसकर, थोड़ा सरसों का तेल मिलाकर मालिश करने से कंडू रोग में आराम हो जाता है।

आन्त्रिक ज्वर : इसके पत्र क्वाथ में 500 मिलीग्राम सैंधा नमक मिला सेवन करने से आंत्रिक सन्निपात टाईफाईड में लाभ होता है।

मुँह छाले (खुनाक) : 10 ग्राम अनार के पत्तों को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से कुल्ले करने से खुनाक रोग और मुंह आने में लाभ होता है।

बच्चों का सूखा रोग : अनार की कली 20–25 ग्राम, आटे में बन्द कर पुटपाक विधि से रस निकाल लें। इस रस को थोड़े दूध के साथ नित्य पिलाने से बच्चों का सूखा रोग दूर हो जाता है।

नाखून पीड़ा : अनार फूलों के साथ धनासा और हरड़ समभाग पीसकर नख में भरने से, नाखून के भीतर की सूजन और पीड़ा में लाभ होता है।

दोष : सभी प्रकार के अनार शीत प्रकृति वालों के लिये अहितकर है।

दर्पनाशक : मीठ अनार, सौंठ का मुरब्बा, खट्टा अनार, सौंठ का मुरब्बा तथा मीठा अनार।

अनारदाना : इसका दर्पनाशक जीरा है, तथा प्रतिनिधि सुजाक है।

1. तत्फलं त्रिविधं स्वादु, स्वाद्वम्ल केवलाम्लकम्।।
तत्तुस्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम्।
हृत्कंठमुखदोषघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु।।
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलप्रदम्। (भाव प्रकाश)

2. स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किञ्चित्पित्तकरंलघु।।
अम्लं तु पित्तजनकमामवातकफापहम्। (भाव प्रकाश)

3. अम्लं कषायमधुरं वातघ्नं ग्राहि दीपनम्।
स्निग्धोष्णं दाडिमं हृद्यं कफपित्ताविरोधि च।।
रूक्षाम्लं दाडिमं यत्तु तत् पित्तानिलकोपनम्।
मधुरं पित्तनुत्तेषां तद्धिदाडिममुत्तमम्।। (च० सू० 27)

4. कषायानुरसं तेषां दाडिमं नातिपित्तलम्।
दीपनीयं रूचिकरं हृद्यं वर्चोविबन्धनम्।।
द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च।
त्रिदोषघ्नं तु मधुरमम्लं वातकफापहम्।। (सु० सूत्र० 46)

Scanned by CamScanner

17 अनन्तमूल

वैज्ञानिक नाम	:	*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.
कुलनाम	:	Asclepiadaceae
अंग्रेजी नाम	:	Hemidesmus, Indian sarsaparilla
संस्कृत	:	अनन्ता, सारिवा, गोपी, गोप कन्या
हिन्दी	:	अनन्तमूल
गुजराती	:	उपलसरी, कारडियो, कुंडेर
मराठी	:	उपरसाल, उपलसरी
बंगाली	:	अनन्तमूल, सरिवा
पंजाबी	:	अनन्तमूल

परिचय

अनन्तमूल वृक्षाश्रित फैलने वाली लता है। यह पंजाब तथा उत्तरी भारत के जंगली क्षेत्रों में लाल मिट्टी युक्त कीचड़ वाली पहाड़ी भूमि में बहुलता से पाई जाती है। वर्षा के प्रथम वारिपात में इसके मूल से नये प्रतान निकलते हैं। सारिवा दो प्रकार की होती है। एक श्वेत (जिसका वर्णन ऊपर किया गया है) दूसरी कृष्णा सारिवा। कृष्णा सारिवा में दो अन्य प्रकार की औषधियों का सग्रंह किया जाता है।

1. *Cryptolepis buchananii :* यह अर्क कुल की वनस्पति है। जम्बू पत्र सारिवा इसकी पत्तियां जामुन की पत्तियों जैसी होती हैं और तोड़ने पर दूध निकलता है।
2. *Ichnocorpus frutescens :* यह कुटज कुल की वनस्पति है। इसकी पत्तियां छोटी, अंडाकार लंब गोल होती है। इसकी मूल में सुगंध नही होती।

बाह्य–स्वरूप

इसकी शाखाएं गोल चिकनी अथवा मृदुरोमावृत्त अथवा अनुलम्ब दिशा में सूक्ष्म धारियों से युक्त होती हैं। पत्तियां अभिमुख क्रम में स्थित, भिन्न–भिन्न आकार की गाढ़े हरे रंग की तथा बीज आदि से अंत तक श्वेत वर्ण की पतली धारी से सुशोभित होते हैं। इसकी शाखा सफेद तथा सुगंधित होती है।

रासायनिक संघटन

अनन्तमूल की ताजी जड़ में अल्प मात्रा में एक उड़नशील तेल तथा हेमीडेस्टेरोल एवं हेमिडेस्मोल नामक दो स्टेरोल तथा रेनिन, टैनिन्स, शर्करा, सैपोनिन तथा अल्प मात्रा में ग्लाईकोसाइड आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

सारिवा, मधुर, चिकनी, वीर्यकर्त्ता, भारी और अग्नि मंदता, अरूचि, श्वास, खांसी, आम विष, त्रिदोष, रक्त विकार, प्रदर, ज्वर तथा अतिसार को नष्ट करने वाली है।[1]

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. इसकी जड़ को बासी पानी में घिसकर नेत्रों में अंजन करने से या इसके पत्तों की राख कपड़े में छानकर शहद के साथ नेत्रों में आंजने से आंख की फूली कट जाती है।
2. इसके ताजे मुलायम पत्तों को तोड़ने से जो दूध निकलता है उसमें शहद मिलाकर आंखों में लगाने से नेत्र रोगों में लाभ

Scanned by CamScanner

होता है और फूली कट जाती है।

3. अनन्तमूल से बने क्वाथ को आंखों में डालने से या क्वाथ में मधु मिलाकर लगाने से नेत्र रोगों में लाभ होता है।

केशवृद्धिः सारिवा मूल का चूर्ण 2–2 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार जल के साथ सेवन करने से सिर का गंजापन दूर होता है।

दंत रोग : इसके पत्तों को पीसकर दांतों के नीचे दबाने से दांत के रोग दूर होते हैं।

स्तनशोधक : सारिवा मूल का चूर्ण 3 ग्राम सुबह शाम सेवन करने से स्तन्य शोध होता है। यह दुग्ध को बढ़ा देता है। जिन महिलाओं के बच्चे बीमार और कमजोर हो, उन्हें सारिवा मूल का सेवन करना चाहिए।

दमा : दमें में सारिवा की 4 ग्राम मूल और 4 ग्राम अडूसा पत्र चूर्ण का दूध के साथ दोनों समय सेवन करने से सभी श्वास व वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

उदरपीड़ा : इस के मूल को 2–3 ग्राम की मात्रा में लेकर पानी में घोंटकर पीने से उदरशूल नष्ट होता है।

कामला : इसकी जड़ की छाल 2 ग्राम और काली मिर्च 11 नग दोनों को 25 ग्राम जल के साथ पीसकर सात दिन पिलाने से आँखों एवं शरीर दोनों का पीलापन दूर हो जाता है तथा कामला रोग से पैदा होने वाली अरूचि और ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

मंदाग्नि : सारिवा मूल का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः एवं सायं दूध के साथ सेवन करने से पाचन क्रिया बढ़ती है। जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा रक्त पित्त दोष का नाश होता है।

गर्भपात : सारिवा मूल का फांट तैयार कर उसमें दूध और मिश्री मिलाकर सेवन कराने से गर्भवती स्त्री को गर्भपात का भय नही रहता। गर्भ धारण से पहले ही यह फांट पिलाना आरम्भ कर दें। गर्भ धारण हो जाने के बाद से प्रसवकाल तक देने से बच्चा नीरोग और गौरवर्ण का उत्पन्न होता है।

मूत्रविकार : इसकी छोटी जड़ को केले के पत्तें में लपेटकर आग की भूमल में रख दें। जब पत्ता जल जाये तो जड़ को निकाल कर भुने हुए जीरे और शक्कर के साथ पीसकर, गाय का घी मिलाकर सुबह–शाम लेने से मूत्र और वीर्य संबंधी विकार दूर होते हैं। मूत्रेन्द्रिय पर इसकी जड़ का लेप करने से मूत्रेन्द्रिय की जलन और दाह मिटती है।

अश्मरी : अश्मरी एवं मूत्रकृच्छ में सारिवा मूल का 5 ग्राम चूर्ण गाय के दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करने से लाभ होता है।

सन्धिवात : सारिवा मूल के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में 3 बार देने से सन्धिवात में लाभ होता है।

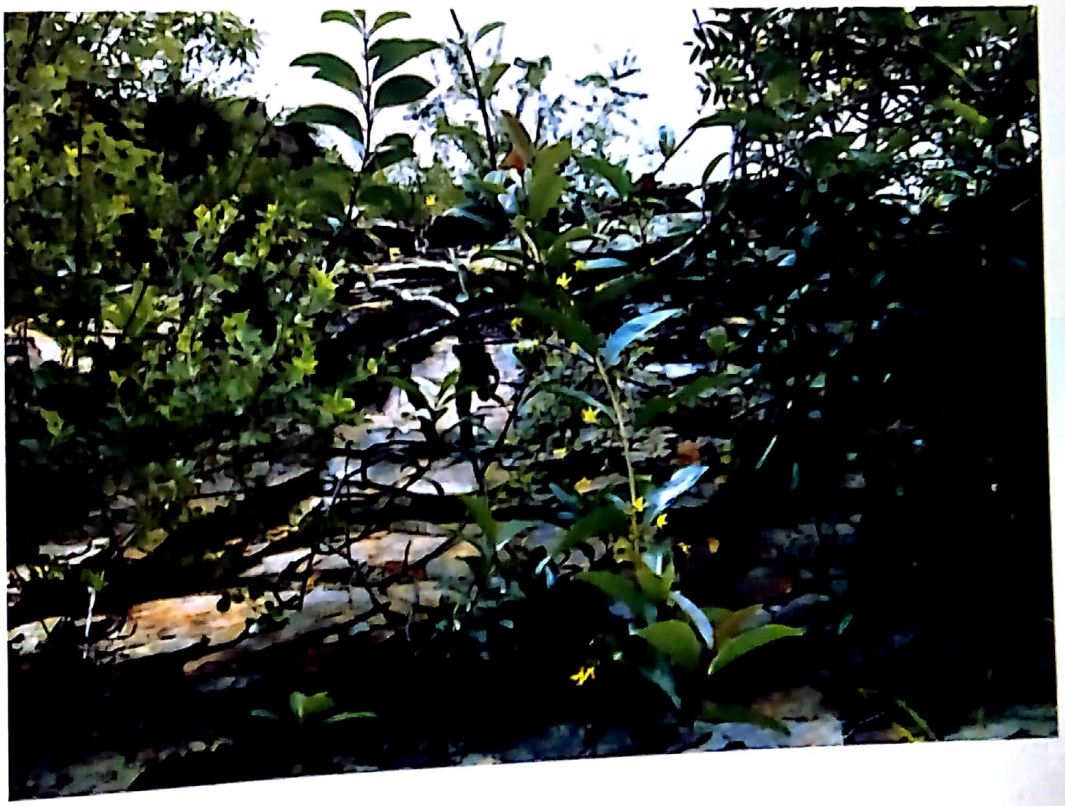

Scanned by CamScanner

रक्तविकार :

1. सारिवा 30 ग्राम, जौकुट कर एक किलो जल में पकावें। अष्टमांश शेष रहने पर छानकर उचित मात्रा में मिश्री मिला कर सेवन करने से खुजली, उकवत, कुष्ठ आदि रक्त विकार दूर होते हैं।
2. अनन्त मूल 500 ग्राम जौकुट कर 500 ग्राम खौलते हुए जल में भिगो दें और 2 घण्टे बाद मल छान लेवें। 50 ग्राम की मात्रा में दिन में 4–5 बार पिलाने से रक्त विकार और त्वचा के विकार शीघ्र दूर होते हैं।
3. पीपल की छाल और अनन्त मूल इन दोनों को चाय के समान फांट बनाकर सेवन करने से पामा कंडु फोड़े–फुन्सी तथा उष्णता के विकारों में लाभ होता है।
4. सफेद जीरा एक चम्मच, सरिवा मूल चूर्ण एक चम्मच दोनों का क्वाथ बनाकर पिलाने से रूधिर शुद्ध हो जाता हैं और पित्त की तेजी मिटती है।
5. फोड़े–फुन्सी–गंडमाला और उपदंश संबंधी रोग मिटाने के लिए इसकी जड़ों का 75 से 100 ग्राम तक क्वाथ दिन में 3 बार पिलाना चाहिए।
6. अनन्तमूल की जड़ का चूर्ण एक ग्राम, बायविडंग चूर्ण एक ग्राम दोनों को पीसकर देने से मरणासन्न बच्चे भी नवजीवन पा जाते हैं।

दाह : अनन्तमूल चूर्ण को घी में भूनकर 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक चूर्ण, 5 ग्राम शक्कर के साथ कुछ दिन तक सेवन करने से चेचक, टायफायड आदि के बाद की शरीरस्थ गर्मी दूर हो जाती है।

ज्वर : सारिवा मूल, खस सौंठ, कुटकी व नागरमोथा सबको बराबर लेकर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

विषम ज्वर : इसकी जड़ की छाल का 2 ग्राम चूर्ण सिर्फ चूना और कत्था लगे पान के बीड़े में रखकर खाने से लाभ होता है।

1. सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु।
अग्निमान्द्यारूचिश्वासकासामविषनाशनम्।।
दोषत्रयास्र–प्रदरज्वरातिसारनाशनम्। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

अंगूर

18

वैज्ञानिक नाम	:	*Vitis vinifera* L.
कुलनाम	:	Vitaceae
अंग्रेजी नाम	:	Grapesvine, Raisins
संस्कृत	:	द्राक्षा, गोस्तनी, कषिशा, हारहूरा
हिन्दी	:	मुनक्का, अंगूर, दाख
गुजराती	:	दशख, धराख
मराठी	:	द्राक्ष
बंगाली	:	कट्की
पंजाबी	:	दाख अंगूर
अरबी	:	इनब, जबीब अंनब
फारसी	:	अंगूर रजताफ, मवेका
तैलगु	:	द्राक्षा

परिचय

अंगूर एक बहुवर्षायु सुदीर्घलता के प्रसिद्ध फल हैं। फलों में यह सर्वोत्तम एवं निर्दोष फल है, क्योकि यह सभी प्रकार की प्रकृति के मनुष्य के लिये अनुकूल है। निरोगी के लिये यह उत्तम पौष्टिक खाद्य है तो रोगी के लिये बलवर्धक पथ्य। जब कोई खाद्य पदार्थ पथ्य रूप में न दिया जा सके तब 'द्राक्षा' (मुनक्का) का सेवन किया जा सकता है। रंग और आकार तथा स्वाद भिन्नता से अंगूर की कई किस्में होती है। काले अंगूर, बैगंनी रंग के अंगूर, लम्बे अंगूर, छोटे अंगूर, बीज रहित, जिनकी सुखाकर किशमिश बनाई जाती है। काले अंगूरों को सूखाकर मुनक्का बनाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

अंगूर की बेलें लकड़ियों के मकानों पर चलती हैं, इसके पत्ते गोलाकर, पंचखण्डीय, हाथ की आकृति के और फल गुच्छों में लगते है।

रासायनिक संघटन

ताजे फलों में ग्लूकोज निर्यास, टैनिन, टारटैरिक एसिड, सीट्रिक एसिड, तथा द्राक्षाम्ल या मैलिक एसिड एवं विविध क्षारद्रव्य, सोडियम तथा पोटेशियम क्लोराइड, पोटेशियम सल्फेट एवं लौहा आदि तत्व होते है। मुनक्का या सूखे फलों में शर्करा एवं निर्यास के अतिरिक्त कैल्शियम, मैग्नीशियम, पौटेशियम, लौह एवं फास्फोरस आदि तत्व पाये जाते है। फल के छिलके में टैनिन पाया जाता है।

गुण–धर्म

पके फल : दस्तावर, शीतल, नेत्रों को हितकारी, पुष्टि कारक, पाक या रस में मधुर, स्वर को उत्तम करने वाला, कसैला, मल तथा मूत्र को निकालने वाला, वीर्यवर्धक, पौष्टिक, कफ कारक, रूचिकारक है। यह प्यास, ज्वर, श्वास, कास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष तथा मेह को नष्ट करने वाला है।[1,2]

कच्चा अंगूर : गुणों में हीन, भारी और कफ पित्तहारी और रक्त पित्त हरने वाला है।[3]

काली दाख या गोल मुनक्का : (1 या डेढ़ इंच लम्बे गोस्तन की तरह) वीर्य वर्धक, भारी और कफ पित्त नाशक है।[4]

किशमिश : बिना बीज की छोटी किशमिश मधुर, शीतल, वीर्यवर्धक, रूचिप्रद, खट्टी तथा श्वास, कास, ज्वर, हृदय की पीड़ा, रक्त पित्त, क्षत क्षय, स्वर भेद, प्यास, वात, पित्त और मुख के कड़वेपन को दूर करती है।[5]

ताजेफल : रूधिर को पतला करने वाले छाती के रोगों मे लाभ पहुँचाने वाले बहुत जल्दी पचने वाले रक्त शोधक तथा खून बढ़ाने वाले होते हैं।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मूर्च्छा :

1. दाख और आँवलों को समान भाग लेकर, उबालकर, पीसकर थोड़ा शुंठी चूर्ण मिलाकर, शहद के साथ चटाने से ज्वर युक्त मूर्च्छा मिटती है।
2. 25 ग्राम मुनक्का, मिश्री, अनार की छाल और खस 12–12 ग्राम, जौ कूट कर 500 ग्राम पानी में रात भर भिगो देवे प्रातः मल छानकर, 3 खुराक बनाकर दिन में 3 बार पिला देवें।
3. 100–200 ग्राम मुनक्का को घी में भूनकर थोड़ा सैंधा नमक मिला, नित्य 5–10 ग्राम तक खाने से चक्कर आना बन्द हो जाता है।

शिर शूल : 8–10 नग मुनक्को, 10 ग्राम मिश्री तथा 10ग्राम मुलेठी तीनों को पीसकर नस्य देने से पित्त एवं विकृति जन्य सिर का दर्द दूर होता है।

मुखरोग : मुनक्का 10 दाने, जामुन के पत्ते 3–4 ग्राम मिलाकर क्वाथ बनाकर कुल्ला करने से मुख के रोग मिटते है।

नकसीर : दाख के 2–2 बूंद रस का नस्य देने से नकसीर बन्द हो जाती है।

मुख दुर्गन्ध : कफ विकृति या अजीर्ण के कारण मुख से दुर्गन्ध आती हो तो 5–10 ग्राम मुनक्का नियमपूर्वक खाने से दूर हो जाती है।

उरःक्षत : मुनक्का और धान की खीले 10–10 ग्राम को 100 ग्राम जल में भिगों देवे। 2 घंटा बाद मसल छानकर उसमें मिश्री, शहद और घी 6–6 ग्राम मिलाकर उंगली से बार–बार चटावें। उरःक्षत में परम लाभ होता है। तथा वमन की यह दिव्य औषधि है।

श्वास कास : 8–10 नग मुनक्का और हरीतकी के क्वाथ 40–60 ग्राम में मिश्री 25–30 ग्राम और शहद 2 चम्मच मिलाकर पिलावें।

शुष्क–कास : द्राक्षा, आँवला, खजूर, पिप्पली तथा काली मिर्च इन सबको समभाग लेकर पीस लें। इस चटनी के सेवन से सूखी खांसी तथा कुकुर खांसी में लाभ होता है।

क्षय : घी, खजूर, मुनक्का, मिश्री, मधु तथा पिप्पली इन सबका अवलेह बनाकर सेवन करने से स्वर भेद, कास, श्वास, जीर्ण ज्वर तथा क्षयरोग का नाश होता है।

पित्तज कास : मुनक्का 10 नग, पिप्पली 30 नग तथा मिश्री 45 ग्राम तीनों का मिश्रण बनाकर प्रतिदिन मधु मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

दूषित कफ विकार : 8–10 नग मुनक्का, 25 ग्राम मिश्री तथा 2 ग्राम कत्थे को पीसकर मुख में धारण करने से दूषित कफ विकारों में लाभ होता है।

गलग्रन्थि :

1. दाख के 10 मिलीलीटर रस में हरड़ का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम नियमपूर्वक पीने से गलग्रन्थि मिटती है।
2. गले के रोगों में इसके रस से गंडूष कराना बहुत अच्छा है।

हृदय की पीड़ा : यदि हृदय में शूल हो तो मुनक्का कल्क 3 भाग, शहद 1 भाग तथा लौंग 1/2 भाग, मिलाकर कुछ दिन सेवन करें।

मुदुरेचन के लिये :

1. 10–20 नग मुनक्कों को साफ कर बीज निकालकर, 200 ग्राम दूध में भली भांति उबालकर (जब मुनक्के फूल जायें) दूध और मुनक्के दोनों का सेवन करने से प्रातः काल दस्त साफ आता है।
2. मुनक्का 10–20 नग, अंजीर 5 नग तथा सौंफ, सनाय, अमलतास का गूदा 3–3 ग्राम, तथा गुलाब के फूल 3 ग्राम, इन सबका क्वाथ कर तथा प्रातः काल 10 ग्राम गुलकन्द मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है।
3. रात्रि में सोने से पहले 10–20 नग मुनक्कों को थोड़े घी में भूनकर सैंधा नमक चुटकी भर मिलाकर खायें।
4. सोने से पहले आवश्यकतानुसार 10 से 30 ग्राम तक किसमिस खाकर गर्म दूध पीये।
5. मुनक्का 7 नग, काली मिर्च 5 नग, भुना जीरा 10 ग्राम, सैंधा नमक 6 ग्राम, टाटरी 500 मिलीग्राम, की चटनी बनाकर चाटने से कब्जियत तथा अरूचि दूर होती है।

पित्तज शूल : अंगूर और अडूसे का क्वाथ 40–60 मिलीग्राम सिद्ध कर पिलाने से पित्त कफ जन्य उदरशूल दूर होता है।

अम्ल पित्त :

1. दाख, हरड़ बराबर–बराबर लें। इसमें दोनों के बराबर शक्कर मिलाये, सबको एकत्र पीसकर, 1–1 ग्राम की गोलियां बना लें। एक–एक गोली प्रातः–सायं शीतल जल के साथ सेवन करने से अम्लपित्त, हृदय–कंठ की जलन, प्यास तथा मंदाग्नि का नाश होता है।
2. मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आधी मात्रा में दोनों को 100 मि.ली. जल में भिगो देवें। प्रातः मसल छानकर पीने से अम्ल पित्त में लाभ होता है।

पांडू (कामला) : मुनक्का का कल्क बीजरहित (पत्थर पर पिसा हुआ) 500 ग्राम, पुराना घी 2 कि.ग्रा. और जल 8 कि.ग्रा., सबको एकत्र मिला पकावे, जब केवल घी मात्र शेष रह जाये तो छानकर रख लें, 3 से 10 ग्राम तक प्रातः सायं सेवन करने से पांडु (कामला) आदि में विशेष लाभ होता है।

रक्तार्श : अंगूरों के गुच्छों को हांडी में बन्द कर भस्म बना लें। काले रंग की भस्म प्राप्त होगी। इसको 3–6 ग्राम की मात्रा में बराबर मिश्री मिला, 250 ग्राम गाय स्त्राव शीघ्र बन्द हो जाता है। 7–8 दिन में पूर्ण लाभ हो जाता है।

पथरी :

1. काली दाख की लकडी की राख 10 ग्राम को पानी में घोलकर दिन में दो बार पीने से मूत्राशय में पथरी का पैदा होना बन्द हो जाता है।

Scanned by CamScanner

2. इसकी 6 ग्राम भस्म को गोखरू के क्वाथ 40–50 ग्राम या 10–20 ग्राम रस के साथ पिलाने से पथरी नष्ट होती है।

3. द्राक्षा पंचाग का क्षार 250–500 मिलीग्राम तक की मात्रा में देने से पथरी नष्ट होती है।

4. 8–10 नग मुनक्कों को काली मिर्च के साथ घोटकर पिलाने से पथरी में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. मूत्रकृच्छ्र में 8–10 मुनक्कों एवं 10–20 ग्राम मिश्री को पीसकर, दही के पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

2. मुनक्का 12 ग्राम, पाषाण भेद, पुनर्नवा मूल तथा अमलतास का गूदा 6–6 ग्राम जौकुट कर, आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र एवं तद्जन्य उदावर्त रोग भी दूर होता है।

3. 8–10 नग मुनक्कों को बासी जल में पीसकर चटनी की तरह जल के साथ लेने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

अण्डकोषवृद्धि : अंगूर के 5–6 पत्तों पर घी चुपड़कर तथा आग पर खूब गर्म कर बांधने से फोडों की सूजन बिखर जाती है।

बल एवं पुष्टि के लिये :

1. मुनक्का 12 नग, छुहारा 5 नग तथा मखाना 7 नग, इन सभी को 250 ग्राम दूध में डालकर खीर बनाकर सेवन करने से रक्त, मांस की वृद्धि होकर शरीर पुष्ट होता है।

2. मुनक्का 9 नग, किसमिस 5 नग, ब्राह्मी 3 ग्राम, छोटी इलायची 8 नग, खरबूजे की गिरी 3 ग्राम, बादाम 10 नग, तथा बबूल की पत्ती 3 ग्राम, घोटकर पीने से गर्मी शांत होकर शरीर पुष्ट तथा बलवान बनता है।

3. प्रातः मुनक्का 20 ग्राम खाकर ऊपर से 250 ग्राम या 125 ग्राम दूध पीने से ज्वर के बाद की अशक्ति तथा ज्वर दूर होकर शरीर पुष्ट होता है।

4. 20 से 60 ग्राम किसमिस रात्रि को एक कप जल में भिगो दें, प्रातः काल मसल कर छानकर जल को पीने से कमजोरी, तथा अम्ल पित्त दूर होता है।

5. रात्रि को सोने से पूर्व मुनक्का खाये (बीज निकालकर) फिर ऊपर से जल पी लें, कुछ दिनों में दुर्बलता दूर होकर शरीर पुष्ट होता है (ज्यादा लेने पर दस्त हो जाते हैं, अपनी शारीरिक क्षमतानुसार मात्रा का निर्धारण कर लें)।

दाह, प्यास :

1. 10–20 नग मुनक्का शाम को जल में भिगोकर प्रातः मसलकर छान लेवें तथा उसमें थोड़ा श्वेत जीरे का चूर्ण और मिश्री या चीनी मिलाकर पिलाने से पित्तजन्य दाह शान्त होती है।

2. 10 ग्राम किसमिस आधा किलो गाय के दूध में पकाकर ठंडा हो जाने पर रात्रि के समय नित्य सेवन करने से दाह शांत होती है।

3. मुनक्का और मिश्री 10–10 ग्राम नित्य प्रातः चबाकर और पीसकर सेवन करें।

4. चेचक के बाद किसमिस 8 भाग, गिलोय सत्व और जीरा 1–1 भाग तथा चीनी 1 भाग इन सभी के मिश्रण को चिकने तप्तपात्र में भरकर उसमें इतना गाय का घी मिलावें, कि मिश्रण अच्छी तरह भीग जायें। इसमें से नित्य प्रति 6 से 20 ग्राम तक की मात्रा में नित्य सेवन करने से एक दो सप्ताह में चेचक आदि विस्फोटक रोग होने के बाद जो दाह शरीर में हो जाती है, वह शान्त हो जाती है।

सन्निपात ज्वर : जिह्वा सूख जाये और फट जाये तो उस पर 2–3 नग दाख को 1 चम्मच मधु के साथ पीसकर उसमे थोड़ा घी मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

पित्त ज्वर :

1. दाख और अमलतास के गूदे का 40–60 मि.ली. क्वाथ सुबह–शाम पिलावें।

2. अंगूर के शरबत के नित्य सेवन से भी दाह ज्वर आदि शान्त होता है।

Scanned by CamScanner

3. यदि प्यास अधिक हो तो दाख और मुलेठी का 40–60 मि॰ग्रा॰ क्वाथ दिन में दो–तीन बार पिलावें।
4. मुनक्का, काली मिर्च और सेंधा नमक तीनों को पीसकर गोलियां बनाकर मुख में रखें।
5. समभाग आंवला तथा मुनक्का को अच्छी तरह महीन पीसकर थोड़ा घी मिलाकर मुख में धारण करें।

रक्त पित्त :

1. किसमिस 10 ग्राम, दूध 160 ग्राम, जल 640 मिलीलीटर तीनों को मंद अग्नि पर पकावें। 160 मिलीलीटर शेष रहने पर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलावें।
2. मुनक्का, मुलेठी, गिलोय 10–10 ग्राम लेकर जौकुट कर 500 ग्राम जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन करें।
3. मुनक्का 10 ग्राम, गूलर की जड़ 10 ग्राम, धमासा 10 ग्राम लेकर, जौ कूट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन करे। इस प्रयोग से रक्तपित्त, दाह, मुखशोष, तृषा तथा कफ के साथ खांसने पर रक्त निकलना आदि विकार शीघ्र दूर हो जाते है।
4. अंगूर के 50–100 मिलीलीटर रस में 10 ग्राम घी और 20 ग्राम खांड मिलाकर पीने से रक्तपित्त दूर होता है।
5. मुनक्का और पके गूलर का फल बराबर–बराबर लेकर पीसकर शहद के साथ सुबह–शाम चटावें।
6. मुनक्का 1 भाग, हरड़ 1 भाग पानी के साथ पीसकर 6 ग्राम तक बकरी के दूध के साथ पिलावें।

चर्मरोग : बसन्त ऋतु में इसकी काटी हुई टहनियों में से एक प्रकार का मद निकलता है जो चर्म रोगों में बहुत लाभकारी है।

धतूरे का विष : अंगूर का 10 ग्राम सिरका 100 ग्राम दूध में मिलाकर कई बार पिलावे।

हरताल के विष पर : रोगी को वमन कराकर किसमिस 10–20 ग्राम 250 ग्राम दूध में पकाकर पिलावें।

1. द्राक्षा स्वादु फला प्रोक्ता तथा मधुर रसाअपि च।
   मृद्रीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता।।
2. द्वाक्षा पक्वासरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरूः।
   स्वादु पाकरसा स्वर्या तुवरा सृष्टमूत्रविट्।।
   कोष्ठ मारुत हृद् वृष्या कफपुष्टि रूचि प्रदा।।
   हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्त्रकामलाः।
   कृच्छ्रामूत्र रक्त पित्त संमोहदाह शोष मदात्ययान्।
   (भाव प्रकाश)
3. आमा स्वल्प गुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्त पित्तकृत। (भाव प्रकाश)
4. वृष्या स्याद् गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफ पित्त–नुत्।
5. किसमिसः अबीजा–ऽन्या स्वल्प तश गौस्तनी सदृशी गुणैः।

Scanned by CamScanner

अंकोल

अंकोल

19

वैज्ञानिक नाम	:	*Alangium salvifolium* (L.f.) Wang
कुलनाम	:	Alangiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tlebid Alu Retis
संस्कृत	:	अंकोल, अंकोट, दीर्घ कील
हिन्दी	:	अंकोल, ढेरा
गुजराती	:	अंकोल
मराठी	:	अंकोल
बंगाली	:	आंकोड़, बाघ आँकड़ा
तैलगु	:	अंकोलमु
तमिल	:	अएलाङ्गिं

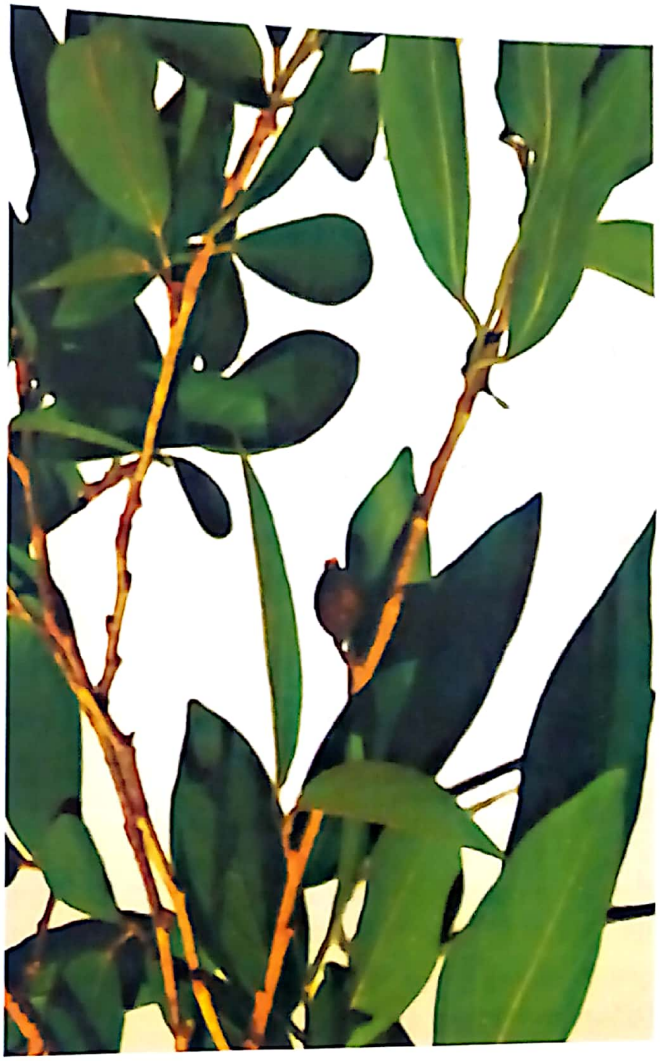

परिचय

अंकोल के छोटे तथा बड़े दोनों प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं जो प्रायः वनों में शुष्क एवं उच्च भूमि में उत्पन्न होते हैं। यह हिमालय की तराई, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, राजस्थान, दक्षिण भारत एवं बर्मा में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसके वृक्ष 10 से 20 फुट तक ऊंचे, कांड मोटा एवं गोल, कांड़त्वक धूसर रंग की पत्तियां 3–6 इंच लम्बी, एकान्तर, विभिन्न आकार की होती हैं। ग्रीष्म के आरम्भ में ही निष्पत्र वृक्ष पर पुष्पागमन होता है। पुष्प श्वेत, पीताभ श्वेत पौने इंच लम्बे, एकल अथा गुच्छों में, पुष्पव्यूह एवं कैलिक्स मृदु मखमली रोमावृत तथा पुष्प सुगंधित होते हैं। फल गोलाकार या अंडाकार, एककोशीय बीज–स्थूल आवरण तथा पिच्छिल होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके छाल में ऐलेन्बीन नामक तिक्त ऐल्केलॉइड पाया जाता है। इसके तेल में चर्बी का अंश तथा ऐल्केलॉयड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

रेचक, कृमिघ्न, शूल, आम, सूजन, ग्रह, विसर्प, कफ, पित्त, रूधिर विकार तथा सांप, मूषक के विष को नाश करने वाला है।[1]

फल : शीतल, स्वादिष्ट, भारी, बृहंण, रेचक, बल्य, वातपित्त तथा दाह को हरने वाला तथा क्षय नाशक है।[2]

बीज : अंकोल के बीज शीतल, स्वादिष्ट, भारी, पाक में मधुर, बल्य, सारक, स्निग्ध, वृष्य तथा दाह, पित्त, वात क्षय और रक्त विकारों को दूर करने वाले हैं।

औषधीय प्रयोग

जलोदर : इसकी जड़ के चूर्ण को 1.5 से 3 ग्राम तक की मात्रा दोनों समय देने से यकृत की क्रिया में सुधार होकर जलोदर में लाभ होता है।

दमा :

1. अंकोल की जड़ को नींबू के रस में गाढ़ा–गाढ़ा घिसकर आधा चम्मच सुबह–शाम भोजन से दो घण्टे पूर्व लेने से दमे

Scanned by CamScanner

में चमत्कारिक लाभ होता है।

2. अंकोल की छाल, राई, लहसुन 6–6 ग्राम खूब महीन कर उसमें 15 ग्राम तीन वर्ष पुराना गुड़ मिलाकर गोली बनाकर दमें के रोगी को खिलाने से वमन द्वारा कफ बाहर निकल जाता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसकी 5 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर पीने से मूत्र खुलकर होने लगता है तथा रोगी को आराम हो जाता है।

अतिसार :

1. इसके 10 ग्राम फल के गूदे को 2 चम्मच मधु में मिलाकर चावलों के पानी के साथ सुबह, दोपहर तथा शाम खाने से अतिसार रोग नष्ट होता है।
2. इसकी जड़ की छाल के 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम चूर्ण को चावल के पानी के साथ महीन पीसकर सुबह–शाम सेवन करने से सब प्रकार के अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

आमातिसार :

1. आम अतिसार में इसका 3 ग्राम पत्रस्वरस दूध के साथ पिलाने से पहले दस्त होकर पेट साफ होने के बाद फिर अतिसार में लाभ होता है।
2. 500 मिलीग्राम कूड़ा छाल चूर्ण और 500 मिलीग्राम अंकोल की जड़ की छाल का चूर्ण दोनों शहद में मिलाकर चावलों के पानी के साथ सेवन करने से अतिसार व संग्रहणी में लाभ होता है।

आंत्रकृमि : इसके जड़ की छाल, 5 ग्राम, के चूर्ण की फंकी दोनों समय लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

वमन : श्वेत पुष्पी अंकोल के मूल चूर्ण की 3 ग्राम फंकी लेने से निर्विघ्न वमन हो जाती है।

अंकोल की छाल

कफ : इसकी जड़ के चूर्ण की 375 मिलीग्राम तक की फंकी लेने से कोष्ठबद्धता में लाभ होता है।

बवासीर : इसकी जड़ की छाल का 1 ग्राम चूर्ण काली मिर्च के साथ फंकी देने से बवासीर में लाभ होता है।

सूजाक : तिल का क्षार 4 ग्राम और अंकोल के फलों का गूदा 5 ग्राम दोनों को 2 चम्मच शहद में मिलाकर सुबह–शाम खाने से सूजाक रोग में लाभ होता है।

मूत्राघात : अंकोल के फल का गूदा 5 ग्राम और तिलों का क्षार 4 ग्राम को 2 चम्मच मधु में मिला कर दही के पानी के साथ दोनों समय देने से मूत्राघात मिटता है।

गठिया : इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से गठिया की पीड़ा मिटती है।

कुष्ठ रोग : अंकोल जड़ की छाल, जायफल, जावित्री और लौंग प्रत्येक 625–625 मिलीग्राम की मात्रा में बारीक पीसकर सुबह–शाम फंकी देने से कोढ़ का बढ़ना बंद हो जाता है।

ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण की 2 से 5 ग्राम तक की मात्रा दोनों समय देने से पसीना आकर मौसमी ज्वर उतर जाता है।
2. अंकोल की जड़ 10 ग्राम, कूठ और पीपल 3–3 ग्राम तथा बहेड़ा 6 ग्राम इसको एक किलोग्राम जल में उबाल लें। जब आठवां हिस्सा शेष रह जाये तो ठंडाकर छान लें तथा मिश्री मिलाकर दोनों समय पीने से इन्फ्लूएंजा या संक्रामक प्रतिश्याय पर परम लाभ होता है।

डेंगू ज्वर :

1. इसकी जड़ के चूर्ण 3 ग्राम को मीठी बच या शुंठी चूर्ण 2 ग्राम के साथ चावल के मांड में पकाकर सेवन करने से लाभ होता है। यह फ्लू में भी लाभकारी है।
2. ज्वर में वेदना स्थान पर इसके पत्तों को गरम कर बांध देना चाहिए।

दाह युक्त ज्वर :

1. दाह युक्त ज्वर में इसके फलों को पानी में पीसकर शरीर पर मलने से दाह ज्वर शांत होता है।
2. इसकी जड़ और सौंठ को पानी में पीसकर दाह युक्त ज्वर में शरीर पर मलने से लाभ होता है।

स्वेद रोग : अंकोल के फलों 2–3 ग्राम चूर्ण की फंकी देने से और ऊपर से वासा क्वाथ नित्य पिलाने से अति स्वेद रोग मिटता है।

रक्तस्राव :

1. इसके फलों के 5 ग्राम चूर्ण को मिश्री 10 ग्राम के साथ पीसकर पिलाने से मुंह से रूधिर का बहना बंद हो जाता है।

Scanned by CamScanner

2. इसकी जड़ की छाल को तेल में सिद्ध करके मालिश करने से गठिया की तीव्र पीड़ा मिटती है।

व्रण : किसी तेज धार वाले हथियार से कट जाने पर अंकोल के बीजों के तेल में रूई का फाहा भिगोकर कटे हुए स्थान पर लगाने से बहता हुआ रक्त बंद हो जाता है।

चर्म रोग : इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करने से त्वचा के रोग मिटते हैं।

ग्रन्थि : चाहे बंद गांठ हो या प्लेग की गांठ हो, अंकोल की जड़ को पानी में घिसकर उस गांठ पर लेप कर देने से तुरन्त लाभ होता है।

विष : बिच्छू के डंक लगने पर इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करे अथवा इसी लेप में सरसों का तेल मिलाकर कान में डाले।

चूहे का विष : इसकी जड़ को जल में पीसकर 2–3 बार पिलाने से चूहे का विष उतर जाता है।

सर्प विष एवं विषैले कीड़े मकौड़े के काटने पर : इसकी 15 ग्राम जड़ का 2 कि॰ ग्रा॰ जल में क्वाथ बनाकर छानकर 15–15 मिनट पर 50 ग्राम क्वाथ में गरम किया हुआ गाय का घी 50 ग्राम मिलाकर पिलायें। दस्त और उल्टी होकर विष की तीव्रता व वेग एकदम कम होता है। इसके बाद नीम की अन्तर छाल के क्वाथ में 2.5 ग्राम अंकोल की जड़ का चूर्ण मिलाकर पिलायें।

विशेष : इसका अधिक मात्रा में प्रयोग हानिकारक है।

1 अंकोटकः कटुस्तीक्ष्णा स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः।
रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहा।
विसर्प कफ पित्तास्य भूविकाहि विषापहा।।

2. तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेमघ्नं बृहणं गुरु।
बल्यं विरेचंन वातपित्त दाह क्षयास्रजित।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

20 अनानास

वैज्ञानिक नाम	:	*Ananas comosus* Merr.
कुलनाम	:	Bromeliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Pineapple
संस्कृत	:	बहुनेत्र
हिन्दी	:	अनानास, कटहल, सफरी
गुजराती	:	अनन्नास
मराठी	:	अनन्नास
बंगाली	:	आनारस

परिचय

अनानास ब्राजील का आदिवासी पौधा है, परन्तु आजकल पूरे भारतवर्ष में इसकी खेती, विशेषतः बंगाल, आसाम तथा पश्चिमी समुद्र तटवर्ती प्रदेशों में बड़े पैमाने पर की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

अनानास के द्विवर्षायु 2 फुट तक ऊंचे शाकीय पौधे, देखने में केवड़े या घृतकुमारी के जैसे लगते हैं। पौधे के मध्य भाग से छोटा कांड निकलता है, जिसके मूल में चारों ओर पत्र पुंज होता है। पत्तियां 1–2 फुट लम्बी, पतली, मजबूत रेशेदार और किनारे पर छोटे तीक्ष्णाग्र कंटक होते है। पौधे के बीच में शंक्वाकार पुष्पव्यूह होता है, जिसमें शल्कपत्र प्रचुरता से होते है, यह पुष्प समूह ही वृद्धि को प्राप्त कर मांसल फल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यह पकने पर नारंगी के समान पीतवर्ण का हो जाता है, तथा इस पर अनेक छोटे–छोटे कंटकमय पत्र होते है जिन्हें छत्रक कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें ब्रामेलिन (Bromelin) नामक तत्व 0.008 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम में पाया जाता है, जो हाजमा बढ़ाता है। ताजे फल के रस में शर्करा, अम्ल, विटामिन 'A' तथा 'C' और एक मांसतत्व को पचाने वाला किण्व, तथा दूध को जमाने वाला किण्व पाया जाता है। भस्म में फास्फोरिक एसिड, चूना, मैगनीशियम तथा सोडियम, पोटाशियम के लवण पाये जाते है।

गुण–धर्म

वात पित्त शामक, रोचन, दीपन, अनुलोमन, रेचन, हृद्य, रक्त पित्त शामक, अश्मरी भेदन, मूत्रल, बल्य, ज्वरघ्न। कच्चे फल का स्वरस तीव्र गर्भाशय उत्तेजक, आर्तवजनन, तथा अधिक मात्रा में गर्भ पातक/पत्रस्वरस तीव्र रेचन एवं कृमिघ्न।

औषधीय प्रयोग

कास एवं श्वास रोग :

1. श्वास रोग में अनानास फल के रस में छोटी कटेरी की जड़, आंवला और जीरा समभाग चूर्ण बनाकर मधु के साथ सेवन करें।
2. पके फल के 10 ग्राम रस में पीपल मूल, सौंठ और बहेड़े का चूर्ण 2–2 ग्राम तथा भुना हुआ सुहागा व मधु मिलाकर सेवन करने से कास एवं श्वास रोग में सिद्ध लाभ होता है।
3. इसके रस में मुलेठी, बहेड़ा और मिश्री मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

अजीर्ण :

1. पके फल के बारीक टुकड़े सैंधा नमक और काली मिर्च मिलाकर खाने से अजीर्ण दूर होता है।

Scanned by CamScanner

2. पके फल के 100 ग्राम रस में 1–2 नग दाख और 125 मि०ग्रा० सैंधा नमक मिलाकर खाने से अजीर्ण दूर होता है।
3. भोजन के बाद यदि पेट फूल जाये, बैचेनी हो तो अनानास के 20–50 ग्राम रस के सेवन से लाभ होता है।
4. अनानास और खजूर के टुकड़े बराबर–बराबर लेकर उसमें घी और शहद (विषम मात्रा में) मिलाकर कांच के बरतन में भरकर रखें। इसे नित्य 6 या 12 ग्राम की मात्रा में खाने से बहुमूत्र रोग दूर होता है, और शक्ति बढ़ती है।

मधुमेह : अनानास मधुमेह में बहुत लाभकारी है। अनानास के 100 ग्राम रस में, तिल, हरड़, बहेडा, आंवला, गोखरू और जामुन के बीज 10–10 ग्राम मिला दें। सूखने पर पाउडर बनाकर रखें। इस चूर्ण का प्रातः–सायं 3 ग्राम की मात्रा में सेवन, बहुमूत्ररोग तथा मधुमेह में अत्यन्त गुणकारी है। पथ्य–दूध व चावल, परहेज–लाल मिर्च, खटाई और नमक।

उदर रोग :

1. पके हुये अनानास के 10 ग्राम रस में भुनी हुई हींग 125 मिलीग्राम, तथा सेंधा नमक और अदरक का रस 250–250 मिलीग्राम मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से उदर शूल और गुल्म रोग में लाभ होता है।
2. इसके रस में यवक्षार, पीपल और हल्दी का चूर्ण 250–250 मिलीग्राम मिलाकर सेवन करने से प्लीहा, उदर रोग तथा गुल्म 7 दिन में नष्ट होते है।
3. अनानास रस में, रस से आधी मात्रा में गुड़ मिलाकर सेवन करने से उदर एवं वस्तिप्रदेश में स्थित वात नष्ट होता है। उदर में यदि बाल चला गया हो तो, अनानास के खाने से, वह गल जाता है।

जलोदर : अनानास के पत्रों के क्वाथ में बहेड़ा और छोटी हरड़ का चूर्ण मिलाकर देने से दस्त और मूत्र साफ होकर, जलोदर में आराम होता है।

कामला : अनानास के पके फलों के 10 ग्राम रस में हल्दी चूर्ण 2 ग्राम और मिश्री 3 ग्राम मिलाकर सेवन करने से कामला रोग में लाभ मिलता है।

मासिक धर्म की रुकावट :

1. अनानास के कच्चे फलों के 10 ग्राम रस में, पीपल की छाल का चूर्ण और गुड़ 1–1 ग्राम मिलाकर सेवन करने से मासिक धर्म की रुकावट दूर होती है।
2. इसके पत्तो का काढा 40–60 मिलीग्राम पीने से भी मासिक धर्म की रुकावट दूर होती है।

कृमि रोग :

1. पके फल के रस में छुआरा, खुरासानी अजवायन और बायविडंग का चूर्ण समभाग मिलाकर, थोड़े से शहद के साथ 5–10 ग्राम की मात्रा में चटाने से बालकों के कृमि रोग नष्ट होते है।
2. इसके पत्तों के रस में थोड़ा शहद मिलाकर रोज 2 ग्राम से 10 ग्राम तक सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है।

सर्वांग शोथ : यदि सब अंगों में सूजन हो, मूत्र कम मात्रा में होता है। मूत्र में एल्ब्युमिन जाता हो, यकृत वृद्धि हो, अग्निमांद्य तथा नेत्रों के नीचे सूजन हो तो, इच्छानुसार अनानास रस का सेवन 7–8 दिन तक करने से लाभ होता है। तथा 15–20 दिन में पूरा लाभ होता है। पथ्य–केवल दूध का सेवन करे।

एकांग शोथ : इसके पत्तों पर एरंड तेल चुपड़कर कुछ गरम करे और सूजन पर बांध दे। पांव की सूजन विशेषतया तुरन्त दूर होती है।

ज्वर : इसके फलों का रस देने से, अथवा 20 ग्राम रस में शहद मिलाकर पिलाने से, पसीना आता है, मूत्र खुलकर आता है और ज्वर का वेग कम हो जाता है।

मुरब्बा और शर्बत :

1. पके फलों के टुकड़े करके एक दिन चूने के पानी में रखकर, सुखाकर, शक्कर की चासनी में डालकर मुरब्बा बना लें। यह पित्त का शमन और चित्त को प्रसन्न करता है।
2. अनानास का शर्बत (रस 1 भाग, चाशनी 2 भाग) भी पित्त को शान्त करने वाला और हृदय को बल देने वाला है।

अहितकर : अत्यधिक मात्रा में प्रयोग कंठ के लिए अहितकर होता है।

दुष्प्रभाव निवारण : नींबू का रस, शर्करा, अदरक का रस इसके उपद्रवों को शान्त करता है।

प्रतिनिधि द्रव्य : सेब

Scanned by CamScanner

21 अपामार्ग (लटजीरा)

वैज्ञानिक नाम	:	*Achyranthes aspera* L.
कुलनाम	:	Amaranthaceae
अंग्रेजी नाम	:	Prickly chaff flower.
संस्कृत	:	किणिही, मयूरक, खरमंजरी, अधःशल्य, मर्कटी, दुर्ग्रहा, शिखरी, अपामार्ग
हिन्दी	:	चिरचिटा, चिचड़ा, ओंगा चिचरी, लटजीरा
बंगाली	:	आपांग
मराठी	:	अघाड़ा, अघोड़ा
गुजराती	:	अघेड़ा
अरबी	:	चिचिरा अल्कुम
तैलगु	:	दुच्चीणिके
फारसी	:	खारेवाजगून

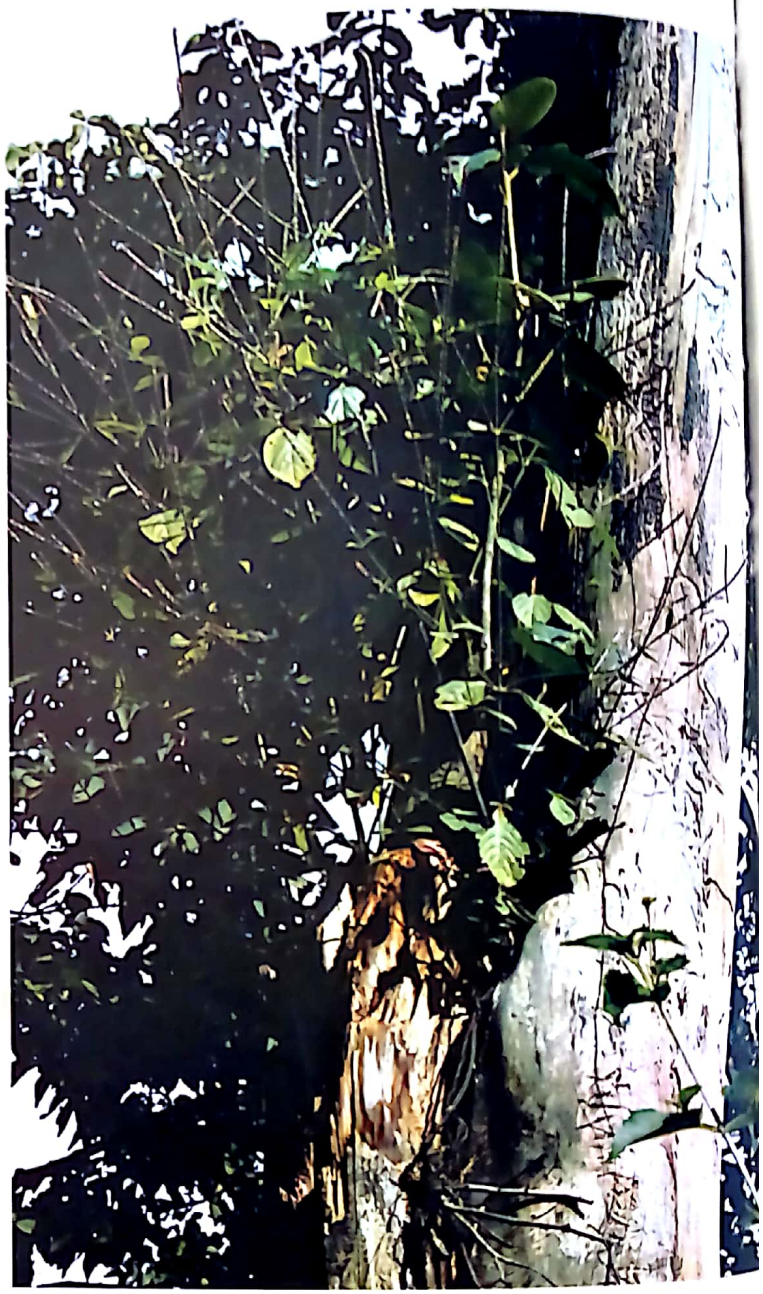

परिचय

अपामार्ग अर्थात् जो दोषों को संशोधन करे, बढ़ी हुई भूख को शान्त करे, दन्त रोगों को हरे और अन्य बहुत से असाध्य रोगों का नाश करे, ऐसा दिव्य पौधा भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में जंगली अवस्था में शहरों में, गांवों में सर्वत्र पाया जाता है। वर्षा ऋतु में यह विशेषकर पाया जाता है, परन्तु कहीं–कहीं पर यह वर्ष पर्यन्त भी मिलता है। वर्षा की पहली फुहारें पड़ते ही यह अंकुरित होने लगता है। शीत ऋतु में फलता फूलता है तथा ग्रीष्म ऋतु में परिपक्व होकर फलों के साथ पौधा भी सूख जाता है। इसके पुष्प हरी गुलाबी कलियों से युक्त तथा बीज चावल सदृश होते है। जिन्हें तांडूल कहते है।

बाह्य–स्वरूप

अपामार्ग का पौधा 1 से 3 फुट ऊंचा होता है। शाखायें पतली, अशक्त कांड वाली और पर्व संधि कुछ फूली और मोटी होती है। कांड प्रायः दो शाखाओं में विभक्त होता है। पत्र सम्मुख अंडाकार या अभिलट्वाकार, लम्बाग्र 1–5 इंच लम्बे, रोमश तथा सवृत्त होते हैं। पुष्पमंजरी पत्रों के बीच से निकलती है। यह लगभग 1 फिट, कभी–कभी 3 फुट तक लम्बी होती है। पुष्प–स्पाइक क्रम मे अधो मुखी 1/6 व 1/4 इंच तक लम्बे होते हैं। कंटकीय वृत्त पत्रकों तथा परिपुष्प के कारण फल कपडों मे चिपक जाते हैं, या हाथ में गड जाते हैं। अपामार्ग का पौधा दो प्रकार का होता है : सफेद व लाल। लाल अपामार्ग का कांड और शाखाएं रक्ताभ होती है। पत्रों पर भी लाल दाग होते है।

रासायनिक संघटन

अपामार्ग की राख में पौटेशियम की मात्रा बहुत अधिक होती है।

गुण–धर्म

यह कफ वातशामक तथा कफ पित्त संशोधक है। यह शोथ हर, वेदना स्थापन, लेखन, विषघ्न, त्वक्दोषहर और व्रण शोधक तथा शिरोविरेचन है। यह रेचन, दीपन, पाचन, पित्तसारक, कृमिघ्न, हृदय,

Scanned by CamScanner

रक्त शोधक, रक्तवर्धक, शोथहर, मूत्रल, अश्मरीहर, मूत्रलतानाशक, स्वेद जनन, कुष्ठघ्न और कण्डूघ्न है।[1]

अपामार्ग विशेष रुप से कृमिघ्न है। त्वचा रोगों में, सर्प, बिच्छू, ततैया, भंवरी, आदि के दंश पर इसके पत्र स्वरस का लेप बहुत गुणकारी होता है। अपामार्ग, वातविकार, अश्मरी, शर्करा मूत्रकृच्छ्र की पीड़ा को शान्त करता है।[2]

अपामार्ग, भार्गी, अपराजिता ये सब कफ मेद एवं विष के नाशक है। कृमि–कुष्ठ को शान्त करने वाले, खासकर व्रण के शोधक हैं।[3]

औषधीय प्रयोग

आधा सीसी : इसके बीजों के चूर्ण को सूंघने मात्र से आधा सीसी, मस्तक की जड़ता में आराम मिलता है। इस चूर्ण को सुंघाने से मस्तक के अन्दर जमा हुआ कफ पतला होकर नाक के जरिये निकल जाता है, और वहाँ पर पैदा हुये कीड़े भी झड़ जाते है।

दंतशूल :

1. 2–3 पत्रों का स्वरस में रूई का फोया बनाकर दांतों में लगाने से दांतों के दर्द में लाभ पहुँचता है तथा पुरानी से पुरानी गुहा को भरने में मदद करता है।
2. इसकी ताजी जड़ से प्रतिदिन दातून करने से दांत मोती की तरह चमकने लगते है। दन्तशूल, दांतो का हिलना, मसूडों की कमजोरी तथा मुँह की दुर्गन्ध को दूर करता है।

कर्णबाधिर्य : अपामार्ग की साफ धोई हुई जड़ का रस निकाल उसमें बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर आग में पका लें। जब तेल मात्र शेष रह जाये तब छानकर शीशी मे रख लें। इस तेल की 2–3 बूंद गरम करके हर रोज कान में डालने से कान का बहरापन व कर्णपूय दूर होता है।[5]

नेत्ररोग :

1. आंख की फूली में अपामार्ग के मूल के 2 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर 2–2 बूंद आंख में डालने से लाभ होता है।
2. नेत्राभिष्यन्द, नेत्रशोथ, कण्डू, स्त्राव, नेत्रों की लालिमा, फूली, रतौंधी आदि विकारो मे, इसकी स्वच्छ मूल को साफ तांबे के बरतन में, थोड़ा सा सैंधा नमक मिले हुये दही के पानी के साथ घिसकर अंजन रूप में लगाने से लाभ होता है।

श्वास, कास :

1. अपामार्ग की जड़ में बलगमी खांसी और दमें को नाश करने का चमत्कारिक गुण है। इसके 8–10 सूखे पत्तों को हुक्के में रखकर पीने से श्वास में लाभ होता है।
2. अपामार्ग क्षार ½ ग्राम लगभग की मात्रा में मधु मिलाकर प्रातः–सायं चटाने से बच्चों की श्वास नली तथा वक्षः स्थल में संचित कफ दूर होकर बाल कास दूर होता है।
3. खाँसी बार–बार परेशान करती हो, कफ निकलने में कष्ट हो, कफ गाढा व लेसदार हो गया हो, इस अवस्था में या न्यूमोनिया की अवस्था में ½ ग्राम अपामार्ग क्षार व ½ ग्राम शर्करा दोनों को 30 ग्राम गरम जल में मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से 7 दिन में बहुत ही लाभ होता है।
4. श्वास रोग की तीव्रता में इसकी मूल का चूर्ण 6 ग्राम, व 7 काली मिर्च का चूर्ण, दोनों को सुबह–शाम ताजे जल के साथ लेने से बहुत लाभ होता है।

विसूचिका : अपामार्ग के मूल के चूर्ण को 2 से 3 ग्राम तक दिन में 2–3 बार शीतल जल के साथ सेवन करने से तुरन्त ही विसूचिका नष्ट होती है। अपामार्ग के 4–5 पत्तों का रस निकालकर थोड़ा जल व मिश्री मिलाकर देने से विसूचिका में अच्छा लाभ मिलता है।[4]

अर्श :

1. इसके बीजों को पीसकर उनका चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में सवेरे–शाम चावलों के धोवन के साथ देने से खूनी बावसीर में खून पड़ना बन्द हो जाता है।
2. अपामार्ग की 6 पत्तियां, काली मिर्च 5 नग, को जल के साथ पीस छानकर प्रातः–सायं सेवन करने से अर्श में लाभ हो जाता है और उसमें बहने वाला रक्त रूक जाता है।
3. पित्तज या कफ युक्त रक्तार्श पर इसकी 10–20 ग्राम जड़ को चावल के धोवन के साथ पीस–छानकर दो चम्मच शहद मिलाकर पिलाना गुणकारी है।

उदर विकार :

1. अपामार्ग पंचाग को 20 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें, जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें 500 मि.ग्रा. नौसादर चूर्ण तथा 1 ग्राम काली मिर्च चूर्ण मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करने से उदर शूल दूर हो जाता है।
2. पंचाग का क्वाथ 50–60 ग्राम भोजन के पूर्व सेवन से पाचन रस में वृद्धि होकर शूल कम होता है। भोजन के दो से तीन घंटे पश्चात् पंचाग का गरम–गरम 50–60 ग्राम क्वाथ पीने से अम्लता कम होती है तथा श्लेष्मा का शमन होता है। यकृत पर अच्छा प्रभाव होकर पित्तस्राव उचित मात्रा में होता है, जिस कारण पित्ताश्मरी तथा अर्श में लाभ होता है।[3]

भस्मक रोग :

1. भस्मक रोग जिसमें बहुत भूख लगती है और खाया हुआ अन्न भस्म हो जाता है परन्तु शरीर कृश ही बना रहता है, उसमें अपामार्ग के बीजों का चूर्ण 3 ग्राम दिन में दो बार लगभग एक सप्ताह तक सेवन करने से निश्चित रूप से भस्मक रोग मिट जाता है।
2. इसके 5–10 ग्राम बीजों को पीस कर खीर बनाकर खिला देने से भस्मक रोग मिट जाता है। यह प्रयोग अधिक से अधिक 3 बार करने से रोग ठीक होता है। इसके 5–10 ग्राम बीजों

Scanned by CamScanner

को खाने से अधिक भूख लगना बन्द हो जाती है।

3. अपामार्ग के बीजों को कूट छानकर, महीन चूर्ण करें तथा बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर, 3–6 ग्राम तक सुबह–शाम जल के साथ प्रयोग करें। इससे भी भस्मक रोग ठीक हो जाता है।

वृक्कशूल : अपामार्ग की 5–10 ग्राम ताजी जड़ को पानी में घोलकर पिलाने से बड़ा लाभ होता है। यह औषधि बस्ति की पथरी को टुकड़े–टुकड़े करके निकाल देती है। वृक्कशूल के लिये यह प्रधान औषधि है।

योनिशूल : इसकी जड़ को पीसकर रस निकालकर रूई को भिगोकर योनि में रखने से योनिशूल और मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।

गर्भधारणार्थ : अनियमित मासिक धर्म, या अधिक रक्त स्त्राव के कारण से जो स्त्रियां गर्भ धारण नही कर पाती, उन्हें ऋतुस्नान के दिन से उत्तम भूमि में उत्पन्न इस दिव्य बूटी के 10 ग्राम पान, या इसकी 10 ग्राम जड़ को गाय के 125 ग्राम दूध के साथ पीस छानकर 4 दिन तक सुबह, दोपहर तथा सायं पिलाने से स्त्री गर्भ धारण कर लेती है। यह प्रयोग यदि एक बार में सफल न हो तो अधिक से अधिक 3 बार करें।

रक्तप्रदर : अपामार्ग के ताजे पत्र लगभग 10 ग्राम, हरी दूब 5 ग्राम, दोनो को पीसकर, 60 ग्राम जल में मिलाकर छान लें, तथा गाय के दूध में 20 ग्राम या इच्छानुसार मिश्री मिलाकर प्रातः काल सात दिन तक पिलाने से अत्यन्त लाभ होता है। यह प्रयोग रोग ठीक होने तक नियमित करें, निश्चित रूप से रक्त प्रदर ठीक हो जाता है। यदि गर्भाशय में गांठ की वजह से रक्तस्राव होता हो तो भी गांठ भी इससे घुल जाता है।

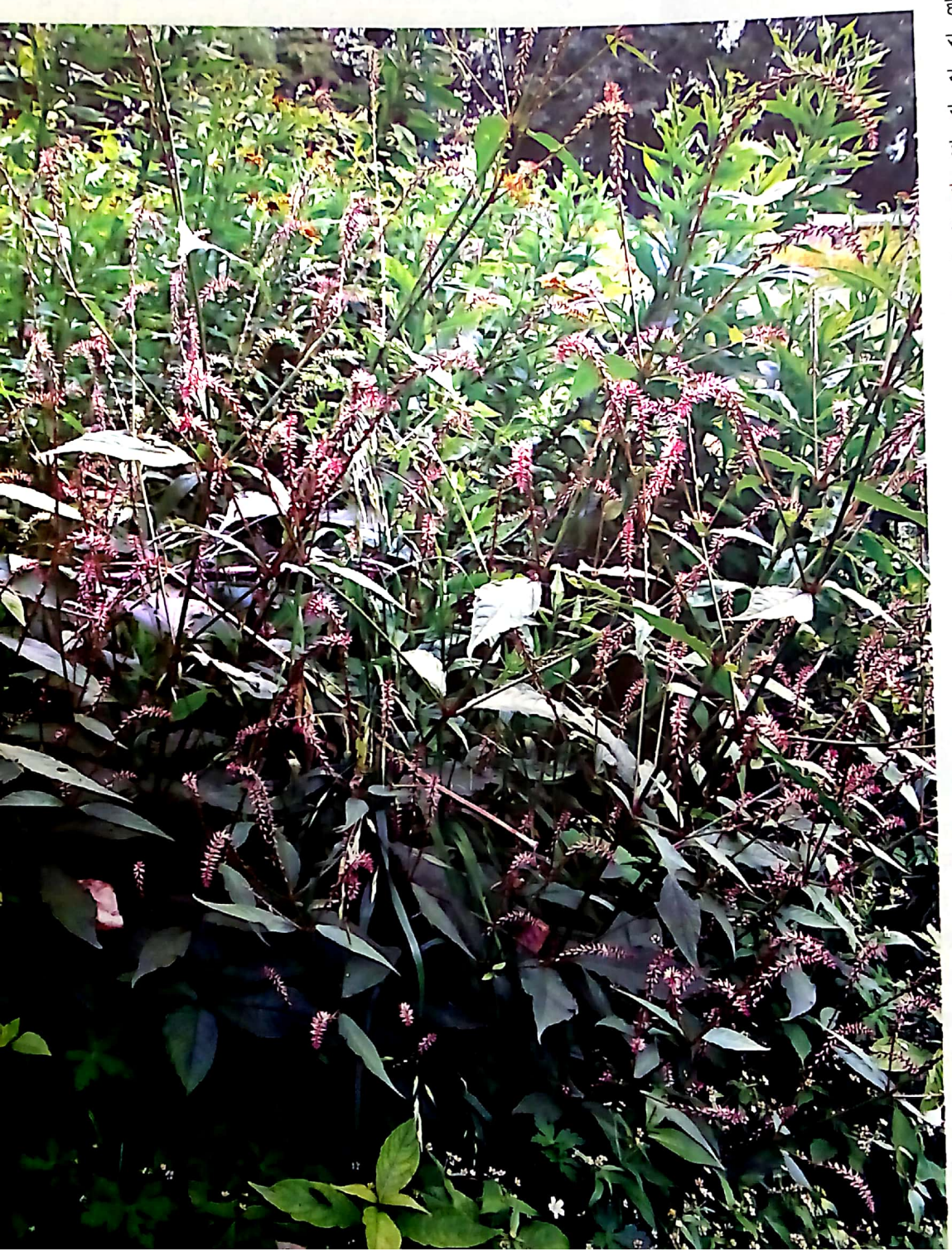

सुखप्रसव : पाठा, कलिहारी, अडूसा, अपामार्ग इनमें से किसी एक औषधि की जड़ को नाभि, बस्ति–प्रदेश तथा भग प्रदेश पर लेप देने से प्रसव सुख पूर्वक होता है। प्रसव पीड़ा प्रारम्भ होने से पूर्व अपामार्ग के जड़ को एक धागे में बांधकर कमर में बांधने से प्रसव सुखपूर्वक होता है, परन्तु प्रसव होते ही उसे तुरन्त हटा लेना चाहिए।

सद्यःक्षत : सद्यःक्षत में प्रवृत्त होते हुये रुधिर को रोकने के लिये अपामार्ग के 2–3 पत्रों को हाथ से मसलकर या कूटकर स्वरस निकाल लें उसके स्वरस को (सद्यःक्षत) घाव में टपकाने से रक्त प्रवाह रूक जाता है।

कीट दंश : ततैया, बिच्छू तथा अन्य जहरीले कीड़ों के दंश पर पत्र स्वरस लगा देने से जहर उतर जाता है। काटे स्थान पर बाद में 8–10 पत्तों को पीसकर लुगदी बांध देते हैं इससे व्रण दूषित नहीं हो पाता।

व्रण : व्रणों विशेषकर दूषित व्रणों में इसका स्वरस मलहम के रूप में लगाने से व्रण का रोपण होता है तथा घाव पकने का भय नहीं रहता।

Scanned by CamScanner

कंडूरोग : अपामार्ग के क्वाथ से स्नान करने पर कंडू रोग दूर हो जाता है।

संधि शोथ : संधि शोथ में इसके 10–12 पत्रों को पीसकर गरम करके बांधने से लाभ होता है। सन्धि शोथ व दूषित फोड़े फुन्सी या गांठ वाली जगह पर पत्ते पीसकर लेप लगाने से गांठ धीरे–धीरे छूट जाती है।

ज्वर : इसके 10–20 पत्तों को 5–10 नग काली मिर्च और 5–10 ग्राम लहसुन के साथ पीसकर 5 गोली बनाकर 1–1 गोली ज्वर आने से दो घंटे पहले देने से सर्दी से आने वाला ज्वर छूटता है।

मसूरिका या चेचक के प्रतिरोध हेतु :

1. हल्दी और अपामार्ग की जड़ दोनों को बराबर मात्रा में लेकर, खूब पीसकर हाथ पैरों के नाखूनों पर, तथा इसी का माथे पर एक तिलक लगाने से चेचक नहीं निकलती है।
2. यदि चेचक निकल आई हो तो इसकी स्वच्छ जड़ को पीसकर फुन्सियों पर लगाने से शान्ति प्राप्त होती है।

विशेष : औषधि कर्म में श्वेत अपामार्ग श्रेष्ठ है।

1. आमाशय के विकारों पर इसका प्रयोग बड़ी मात्रा में नहीं करना चाहिये।

स्वानुभूत प्रयोग :

1. गंगोत्री के प्रसिद्ध स्वामी अपरोक्षानन्द जी, जो कि जिला बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के रहने वाले हैं, उनकी माताजी लगभग 80 वर्ष आयु की है। जब हमें उनसे मिलना हुआ तो देखा कि उनके दांत बहुत मजबूत एवं सुन्दर हैं। उनसे पूछा कि आपके दांत आज तक इतने मजबूत कैसे हैं, तो उन्होंने कहा कि मैं अपामार्ग के कांड की दातुन करती हूं तथा जब अपामार्ग ताजा नहीं मिलता है तो सूखी हुई अपामार्ग कांड को पानी में भिगोकर दातुन करती हूँ। छत्तीसगढ़ के सुदूर ग्रामीण इलाकों में भी हमने उपरोक्त विधि से दातुन के प्रयोग करने वाले बहुत से लोगों के वृद्धावस्था में भी दांतों की मजबूती का रहस्य का कारण पाया।
2. हमने काफी लोगों पर इसे अजमाकर कर देखा तो पाया कि इसके पत्रों को पीसकर लगाने पर फोड़े फुन्सी आदि चर्म रोग तथा गांठ के रोगी भी इससे ठीक हुए हैं।

1. अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः।
   पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।।
   निहन्ति हृद्रुजाध्मार्शः कण्डू शूलोदरापचीः। (भाव प्रकाश)
2. "अपामार्गस्तु तिक्तोष्णः कटुकः कफनाशनः।
   अर्शः कण्डूदरामध्नो रक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत्"।। (ध०नि०)
3. वीरतर्वादिरित्येष गणों – । (सुश्रुत)
   अर्कालर्ककरंज द्वय नागदन्ती मयूरकभार्गी रास्नेन्द्र पुष्पी–।। (सुश्रुत)
4. जलपीतमपामार्ग–मूलं हन्याद्विविसूचिकाम्। (भै०र०)
5. अपामार्गस्य संसिक्तं पत्रोत्थेन रसेन तु।
   सद्योव्रणेषु रक्तं तु प्रवृत्तं परितिष्ठति।।
   (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

22 अपराजिता

वैज्ञानिक नाम	:	*Clitoria ternatea* L.
कुलनाम	:	Papilionaceae
अंग्रेजी नाम	:	Winged leaved clitoria, Butterfly pea
संस्कृत	:	आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता, अश्वखुरा, आदिकर्णी
हिन्दी	:	अपराजिता, कोयल
गुजराती	:	गरणी
मराठी	:	गोकर्णी, काजली
बंगाली	:	अपराजिता
तैलगू	:	दिटेन
द्राविड़ी	:	करप्पुका, कट्टान विरै
अरबी	:	माजरि, यून
फारसी	:	अशखीस

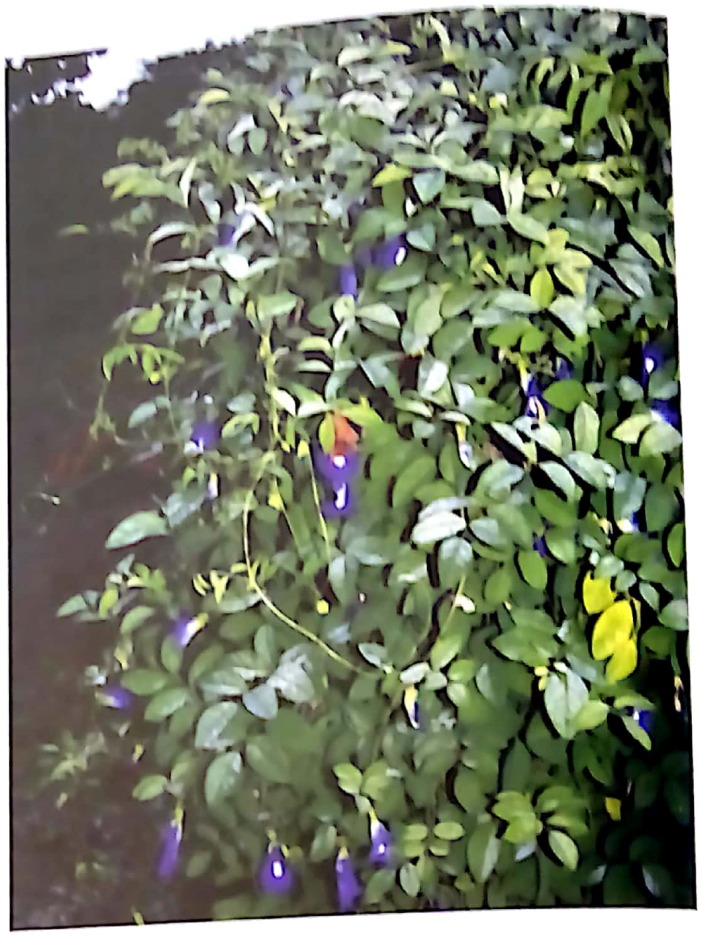

परिचय

अपराजिता, विष्णुकांता गोकर्णी आदि नामों से जानी जाने वाली श्वेत या नील वर्ण के पुष्पों वाली कोमल वृक्ष आश्रिता बल्लरी उद्यानों एवं गृहों के शोभा वर्द्धनार्थ लगाई जाती है। इस पर विशेषकर वर्षा ऋतु में फलियां और फूल लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

अपराजिता सफेद और नीले रंग के पुष्पों के भेद से दो प्रकार की होती है। नीले फूल वाली अपराजिता भी दो प्रकार की होती है : (1) इकहरे फूल वाली तथा (2) दोहरे[3] फूल वाली। इसके पत्ते छोटे और प्रायः गोल होते हैं। इसकी पर्वसन्धि से एक शाखा निकलती है, जिसके दोनों ओर 3–4 जोड़े पत्र, युग्म में निकलते है और अन्त में शिखाग्र पर एक ही पत्र होता है। इस पर मटर की फली के समान लम्बी और चपटी फलियाँ लगती हैं, जिनमें से उड़द के दानों के समान कृष्ण वर्ण के चिकने बीज निकलते हैं।

गुण–धर्म

दोनों प्रकार की अपराजिता, मेधा के लिये हितकारी, शीतल, कंठ को शुद्ध करने वाली, दृष्टि को उत्तम करने वाली, स्मृति व बुद्धि वर्धक, कुष्ठ, मूत्र दोष, तीनों दोष, आम, सूजन, व्रण तथा विष को दूर करने वाली है।[4]

यह विषघ्न, कंठ्य, चक्षुष्य, मस्तिष्क रोग, कुष्ठ, अर्बुद, शोथ जलोदर, यकृत, प्लीहा में उपयोगी है।[5]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना :

1. अपराजिता की फली के 8–10 बूंद रस का नस्य अथवा जड़ के रस का नस्य प्रातः खाली पेट एवं सूर्योदय से पूर्व देने से शिरोवेदना नष्ट होती है। इसकी जड़ को कान में बांधने से भी लाभ होता है।[7]
2. इसके बीजों के 4–4 बूंद रस को नाक में टपकाने से आधा शीशी भी मिट जाती है।
3. इसके बीज ठंडे और विषघ्न है। इसके बीज और जड़

Scanned by CamScanner

को समभाग लेकर जल के साथ पीसकर नस्य देने से अर्द्धावभेदक (आधा सीसी) दूर होता है।

कास श्वास : इसकी जड़ का शर्बत, थोड़ा–थोड़ा चटाने से कास, श्वास और बालको की कुक्कुर खांसी में लाभ होता है।

गलगण्ड : श्वेत अपराजिता की जड़ के 1 से 2 ग्राम चूर्ण को घृत में मिश्रित कर पीने से अथवा कटु फल के चूर्ण को गले के अन्दर घर्षण करने से गलगण्ड रोग शान्त होता है।[6]

तुण्डिकेरी शोथ : 10 ग्राम पत्र, 500 ग्राम जल में क्वाथ कर, आधा शेष रहने पर सुबह–शाम गंडूष करने से, टॉसिल, गले के व्रण तथा स्वर भंग में लाभ होता है।

जलोदर, कामला–डिब्बारोग :

1. जलोदर, कामला और बालकों के डिब्बा रोग में इसके भुने हुये बीजों के 1/2 ग्राम के लगभग महीन चूर्ण को उष्णोदक के साथ दिन में दो बार सेवन कराने से लाभ होता है।
2. कामला में इसकी जड़ का 3–6 ग्राम चूर्ण छाछ के साथ देने से लाभ होता है।

बालकों के उदर शूल : अफारा या डिब्बा रोग पर इसके 1–2 बीजों को आग पर भूनकर, माता या बकरी के दूध, अथवा घी के साथ चटाने से शीघ्र लाभ होता है।

प्लीहा वृद्धि : इसकी जड़ बहुत रेचक है। इसकी जड़ को दूसरी रेचक और मूत्रजननकर औषधियों के साथ देने से बढ़ी हुई तिल्ली और जलंधर आदि रोग मिटते हैं। मूत्राशय की दाह मिटती है।

मूत्रकृच्छ्र : सूखे जड़ के चूर्ण प्रयोग से मूत्रेन्द्रिय, मूत्राशय की जलन और मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है। 1–2 ग्राम चूर्ण गर्म पानी या दूध से दिन में 2 या 3 बार प्रयोग करने से लाभ होगा।

अण्डकोष वृद्धि : बीजों को पीसकर गरम कर लेप करने से अण्डकोष की सूजन बिखर जाती है।

गर्भस्थापन :

1. श्वेत अपराजिता की लगभग 5 ग्राम छाल को अथवा पत्रों को बकरी के दूध में पीस, छानकर तथा मधु मिलाकर पिलाने से गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है तथा कोई पीड़ा नहीं होती है।
2. श्वेत अपराजिता की 1 ग्राम जड़ दिन में दो बार बकरी के दूध में पीस–छान, मधु मिलाकर कुछ दिन पर्यन्त खिलाने से गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है।

सुख प्रसव : कोयल की बेल को स्त्री की कमर में लपेट देने से शीघ्र ही प्रसव होकर पीड़ा शान्त हो जाती है।

Scanned by CamScanner

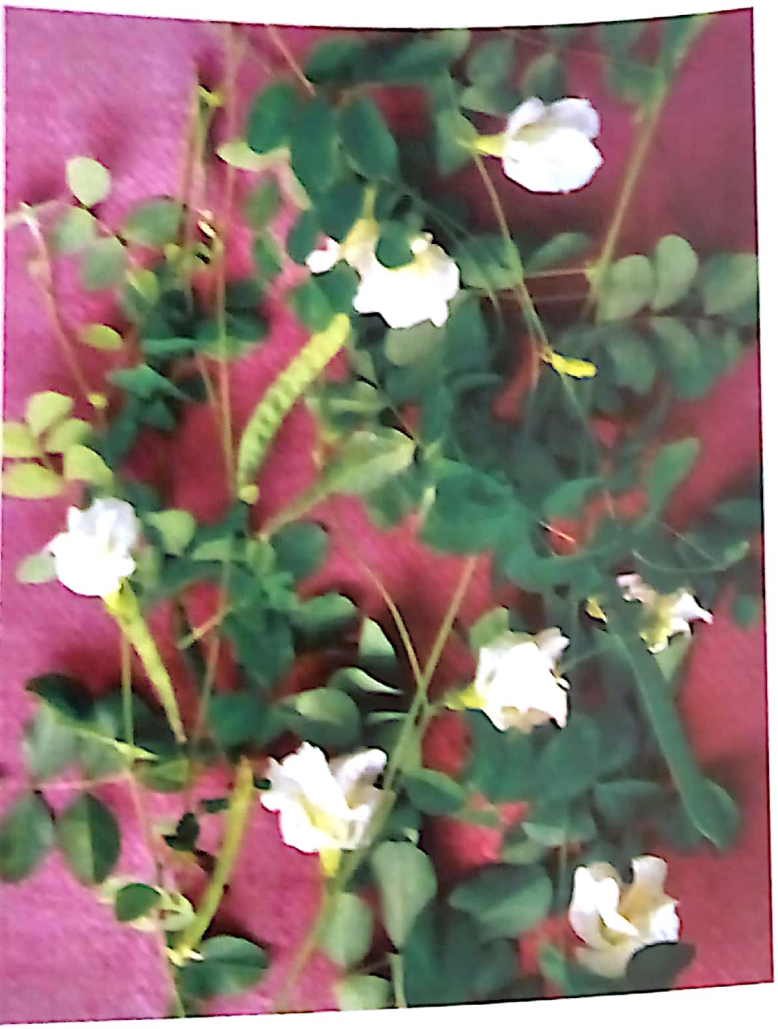

सुजाक, पूयमेह व अश्मरी :

1. अपराजिता मूलत्वक 3–6 ग्राम तक, शीतल चीनी 1.5 ग्राम, काली मिर्च 1 नग, तीनों को जल के साथ पीसकर तथा छानकर सुबह–सुबह सात दिन तक पिलाने से पंचाग के क्वाथ में रोगी को बिठाने से, या मूत्रेन्द्रिय को उसमें डुबोये रखने से शीघ्र लाभ होता है।

2. इसकी 5 ग्राम जड़ को चावलों के धोवन के साथ पीस–छानकर कुछ दिन प्रातः सायं पिलाने से मूत्राशय की पथरी कट–कट कर निकल जाती है।

ज्वर : लाल सूत्र के 6 धागों में इसकी जड़ को कमर में बांधने से तीसरे दिन आने वाला ज्वर छूट जाता है।

श्वेत कुष्ठ : श्वेत कुष्ठ तथा मुँह की झांई पर इसकी जड़ दो भाग, तथा चक्रमर्द की जड़ 1 ग्राम, जल के साथ पीसकर, लेप करने से लाभ होता है। इसके साथ ही इसके बीजों की घी में भूनकर प्रातः सायं जल के साथ सेवन करने से डेढ़ दो मास में ही श्वेत कुष्ठ में लाभ हो जाता है। इसकी जड़ की राख या भस्म को मक्खन में घिसकर लेप करने से मुँह की झाईं दूर हो जाती है।

श्लीपद : श्लीपद व नाहरु पर इसकी 10–20 ग्राम जड़ों को थोड़े जल के साथ पीसकर, गरम कर लेप करने से तथा 8–10 पत्तों के कल्क की पोटली बना सेंकने से लाभ होता है।

व्रण : हथेली या उंगलियों में होने वाला अत्यन्त पीड़ायुक्त व्रण (Whitlow या गलका) पर इसके 10–20 पत्तों की लुगदी को बांध कर ऊपर से ठंडा जल छिड़कते रहने से, अति शीघ्र लाभ होता है।

फोड़ा : कांजी या सिरके के साथ इसकी 10–20 ग्राम जड़ को पीस कर लेप करने से उठते हुये फोड़े फूटकर बैठ जाते हैं।

विशेष : श्वेत अपराजिता अधिक गुणकारी है।

स्वानुभूत प्रयोग :

1. एक बार हम लोग हिंडोन सिटी के एक घर में रूके हुए थे तो घर में एक स्त्री को बहुत रक्तस्राव हो रहा था। हमारे द्वारा अपराजिता का स्वरस 10 ग्राम निकालकर 10 ग्राम निम्बू में मिलाकर देने से तुरन्त आराम आ गया।

2. कई रोगियों पर इसका स्वरस या मूल रस निकालकर नाक में डालने से उनका सिर दर्द तुरन्त ठीक हो गया।

1. आस्फोता गिरिकर्णी स्याद बिष्णुक्रांताऽपराजिता।
अपराजिते कटुमेध्ये शीते कण्ठये सुदृष्टिदे।।
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रण विषापहे,
कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धि दे।।
(भाव प्रकाश निघंटु)

2. यथा गिरिकर्णी द्वयं तिक्त, कटुशीतं विषापहम्।
मेध्यं कण्ठयश्चशूलध्यंमामपाचनम्।।

3. कटफल चूर्णन्तिशीतथर्पो गलगण्डामयं हन्ति।
घृत मिश्रं पीतमपि श्वेत गिरिक र्धाम्मूलम्।।

4. गिरिकर्णीफलरसं मूलश्च नस्यमाचरेत्।
मूल वा बन्धयेत् कर्णे शीघ्र हन्ति, शिरोव्येथाम्।।

Scanned by CamScanner

अर्जुन

23

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia arjuna* (Roxb.) Wight & Arn.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	Arjuna
संस्कृत	:	अर्जुन, धवल, संबर, इन्द्रदु, ककुभः
हिन्दी	:	अर्जुन, काहू
गुजराती	:	घोलो, सादडो, साजड
मराठी	:	सदरू, अर्जुन, सादड़ा
बंगाली	:	अर्जुन, गाछ
पंजाबी	:	कौ, कोह
तैलगू	:	धर्रमछि
द्राविड़ी	:	वेल्ला, भट्टि
कन्नड़	:	कम्युत्ते
मारवाड़ी	:	अर्जुन

परिचय

पहाड़ी क्षेत्रों में नदी, नालों के किनारे 80 फुट तक ऊँचे पंक्तिबद्ध हरे पल्लवों के वल्कल ओढ़े अर्जुन के वृक्ष ऐसे लगते हैं, जैसे महाभारत के पार्थ की तरह अनेक महारथी अक्षय तरकशों में अगणित अस्त्र लिये, प्रस्तुत हो तथा महासमर में अनेक व्याधिरूपी शत्रुओं को नेस्तनाबूत करने को एकत्र हुए हों। अर्जुन का वृक्ष जंगलों में पाया जाता है, इस पर बैशाख–ज्येष्ठ में फूल खिलते है और जाड़े में फल आते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड स्थूल, गोलाई में 10 से 20 फीट तक होता है। कांड त्वक् ऊपर से श्वेताभ, चिकनी, 1/3 इंच तक मोटी, अन्दर से रक्तवर्ण की होती है। वाह्य त्वचा वर्ष में एक बार सर्प केंचुल के समान स्वयं गिर पड़ती है। पत्र 3 से 6 इंच तक लम्बे, 1–2 इंच तक चौड़े, छोटी–छोटी शाखाओं पर कहीं समवर्ती, कहीं विषमवर्ती होते हैं, जिनका उदरतल चिकना और पृष्ठतल, शिरामय एवं रूक्ष होता है। पत्र के पीछे मध्य शिरा के पार्श्व में दो हरे रंग की मधुमय लसिका ग्रन्थियां होती है। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म हरिताभ श्वेत वर्ण के गुच्छे में लगे होते है। इनमें सुगंध नहीं होती। फल लम्बे, अंडाकार, कोष्ठमय, 5 उठी हुई धारियों से युक्त 1–2 इंच तक लम्बे होते हैं। फल के अन्दर बीज नहीं होते। अर्जुन के पेड़ का गोंद निर्यास स्वच्छ, सुनहरा, भूरा और पारदर्शक होता है।

रासायनिक संघटन

अर्जुन की छाल में अनेक प्रकार के रासायनिक घटक पाये जाते हैं। इसमें कैल्शियम कार्बोनेट लगभग 34 प्रतिशत व सोडियम, मैग्नीशियम व एल्युमिनियम प्रमुख क्षार हैं। कैल्शियम–सोडियम की प्रचुरता के कारण ही यह हृदय की मांसपेशियों में सूक्ष्म स्तर पर कार्य करता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

अर्जुन शीतल, हृदय के लिए हितकारी, कसैला, क्षत्, क्षय, विष, रूधिर विकार, मेद, प्रमेह, व्रण, कफ तथा पित्त को नष्ट करता है।[1] अर्जुन से हृदय की मांसपेशियों को बल मिलता है, हृदय की पोषण क्रिया अच्छी होती है। मांसपेशियों को बल मिलने से हृदय का स्पंदन ठीक और सबल होता है। स्पंदन की संख्या कम हो जाती है। सूक्ष्म रक्तवाहिनियों का संकोच होता है, जिससे रक्त, भार बढ़ता है। इस प्रकार इससे हृदय सशक्त और उत्तेजित होता है। इससे रक्त वाहिनियों के द्वारा होने वाले रक्त का स्त्राव भी कम होता है, जिससे यह शोथ को दूर करता है। इसके प्रयोग से रक्तवहस्रोतों का संकोचन भली प्रकार होने से हृदय रक्त को समस्त शरीर में फेंकने तथा शरीर में फैले हुए समस्त रूधिर को हृदय के अन्दर खींचने का कार्य सुगमता से करता है। इसीलिये हृदय एवं रक्तवाहिनियों के शैथिल्य, सर्वांग शोथ, नाड़ी की मंदता, श्वास, कास आदि जीर्ण विकारों में इसका प्रयोग परम हितकारी है। अर्जुन के प्रयोग से पित्त की विदग्धता और अम्लता कम होकर रक्त में स्वादुता एवं स्थिरता उत्पन्न होती है। जिससे रक्त पित्त तथा अम्लपित्त आदि विशिष्ट पित्तविकारों में लाभ होता है। कसैला होने के कारण यह कफघ्न, मूत्र संग्रहणीय और शामक होता है। यह स्तम्भक और ज्वरघ्न भी है। यह विषघ्न और हृदय को पुष्ट करने के कारण बृंहण हैं। अर्जुन, शिरीष, ताड़ यह सब सालसारादि गण, कुष्ठरोग नाशक, प्रमेह, पांडु रोगनाशक, कफ और मेद का शोषक है।[2] अर्जुन वृक्ष, अश्मभेद, अपामार्ग, गोखरू यह सब वात विकारनाशक हैं। अश्मरी शर्करा कृच्छ, मूत्राघात की पीड़ा को शान्त करता हैं। अर्जुन, जामुन, मुलहठी, बेर ये सब व्रण के लिये हितकारी भग्न को मिटाने वाले रक्त पित्तनाशक, दाह, भेद तथा योनिरोगों को दूर करते हैं।[4]

औषधीय प्रयोग

मुखपाकः इसकी जड़ के चूर्ण में मीठा तेल मिलाकर गरम पानी से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

कर्णशूलः इसके पत्तों का 3–4 बूंद स्वरस कान में डालने से कर्णशूल मिटता है।

मुंह की झाईयांः इसकी अंतर छाल पीसकर, शहद मिलाकर लेप करने से मुंह की झाइयां मिटती हैं।

क्षयकासः अर्जुन की छाल के चूर्ण में वासा पत्रों के स्वरस की सात भावना देकर 2–3 ग्राम की मात्रा शहद, मिश्री या गोघृत के साथ चटाने से क्षय की खांसी जिसमें कफ में खून आता हो नाश हो जाता है।

धड़कन :

1. हृदय की सामान्य धड़कन जब 72 से बढ़कर 150 से ऊपर रहने लगे तो एक गिलास टमाटर के रस में 1 चम्मच अर्जुन की छाल का चूर्ण मिलाकर नियमित सेवन करने से शीघ्र ही धड़कन सामान्य हो जाती है।
2. अर्जुन की मोटी छाल का महीन चूर्ण 1 चम्मच की मात्रा में मलाई रहित 1 कप दूध के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन करते रहने से हृदय के समस्त रोगों में लाभ मिलता है, हृदय को बल मिलता है, और कमजोरी दूर होती है। हृदय की बढ़ी हुई धड़कन सामान्य होती है।
3. गेहूं का आटा 20 ग्राम लेकर 30 ग्राम गाय के घी में भून लें, गुलाबी हो जाने पर अर्जुन की छाल का चूर्ण 3 ग्राम और मिश्री 40 ग्राम तथा खौलता हुआ जल 100 ग्राम डालकर पकायें, जब हलुवा तैयार हो जाये तब प्रातः सेवन करें। इसका नित्य सेवन करने से हृदय की पीड़ा, घबराहट, धड़कन बढ़ जाना आदि शिकायतें दूर हो जाती है।
4. गेहूं और इसकी छाल को बकरी के दूध और गाय के घी में पकाकर इसमें मिश्री और मधु मिलाकर चटाने से अति उग्रहृदय रोग मिटता है।

हृदय रोग :

1. हृदय की शिथिलता में एवं उसमें उत्पन्न शोथ में इसकी छाल का चूर्ण 6 से 10 ग्राम तक गुड़ और दूध के साथ पकाकर और छानकर पिलाने से रक्त लसीका का जल रक्त वाहिनियों में नहीं भर पाता, फलतः शोथ का बढ़ना रूक जाता है जिससे हृदय की शिथिलता दूर हो जाती है।[5]
2. अर्जुन की छाल का रस 50 ग्राम, यदि गीली छाल न मिले तो 50 ग्राम सूखी छाल लेकर 4 किलोग्राम जल में पकावें। जब चौथाई शेष रह जाये तो क्वाथ को छान लें, फिर 50 ग्राम गौघृत को कढ़ाई में छोड़े, फिर इसमें अर्जुन की छाल का कल्क 50 ग्राम और पकाया हुआ रस तथा दुग्धादि द्रव पदार्थ को मिला मन्द–मन्द अग्नि पर पका लें। घृत मात्र शेष रह जाने पर ठंडा कर छान लें। अब इसमें 50 ग्राम शहद और 75 ग्राम कंद या मिश्री मिलाकर कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में रखे। इस घी को 6 ग्राम प्रातः–सायं गौदुग्ध के साथ सेवन करें। यह घृत हृदय को बलवान बनाता है तथा इसके रोगों को दूर करता है।
3. हृदय की शिथिलता, तेज धड़कन, सूजन या हृदय बढ़ जाने आदि तमाम हृदय रोगों में अत्यंत प्रभावकारी योग है।
4. हार्ट अटैक हो चुकने पर 40 मिलीलीटर काढ़ा सुबह तथा रात दोनों समय सेवन करें। अनुपम हृदय शक्तिवर्धक (Heart or Cardiac tonic) है।
5. पूर्ण लाभ के लिए गाय के दूध में काढ़ा बना लेना आवश्यक है। इस क्षीर–पाक विधि से लेने से दिल की धड़कन तेज होना, हृदय में पीड़ा (एन्जाइना) घबराहट होना आदि दूर होते हैं।
6. हृदय रोगों में अर्जुन की छाल का कपडछान चूर्ण का प्रभाव इन्जेक्शन से भी अधिक होता है। जीभ पर रखकर चूसते ही रोग कम होने लगता है। इसे सारबिट्रेट गोली के स्थान पर प्रयोग करने पर उतना ही लाभकारी पाया गया। हृदय की अधिक धड़कनें और नाड़ी की गति बहुत कमजोर हो जाने पर

Scanned by CamScanner

इसको रोगी की जीभ पर रखने मात्र से नाड़ी में तुरंत शक्ति प्रतीत होने लगती है। इस दवा का लाभ स्थायी होता है और यह दवा किसी प्रकार की हानि नही पहुंचाती तथा एलोपैथिक की प्रसिद्ध दवा डिजीटेलिस से भी अधिक लाभप्रद है।

7. यह उच्च रक्तचाप में लाभप्रद है। उच्च रक्तचाप के कारण यदि हृदय पर शोथ या सूजन उत्पन्न हो गयी हो तो उसको भी दूर करता है।

उदावर्त्त : मूत्रवेग को रोकने से पैदा हुए उदावर्त्त को मिटाने के लिए इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाना चाहिए।

रक्त अतिसार : अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण 5 ग्राम, गाय के 250 ग्राम दूध में डालकर इसी में लगभग आधा पाव पानी डाल कर मंद आंच पर पकाये। जब दूध मात्र शेष रह जाये तब उतारकर सुखोष्ण हो जाने पर उसमें 10 ग्राम मिश्री या शक्कर मिला, नित्य सवेरे पीने से हृदय संबंधी सब रोग दूर हो जाते हैं। यह विशेषतः वातदोष हृदय रोग में लाभकारी है। यह अर्जुन सिद्ध दूध जीर्ण ज्वर रक्त अतिसार और रक्त पित्त में भी लाभदायक है।[6]

रक्तप्रदर : अर्जुन की छाल का 1 चम्मच चूर्ण 1 कप दूध में उबालकर पकायें, आधा शेष रहने पर थोड़ी मात्रा में मिश्री मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करें।

प्रमेह :

1. अर्जुन की छाल, नीम की छाल, आमलकी छाल, हल्दी तथा नीलकमल के समभाग 20 ग्राम चूर्ण को 400 मिलीलीटर पानी में पकाकर 100 मिलीलीटर शेष बचे कषाय को मधु के साथ मिलाकर नित्य प्रातः–सायं सेवन करने से पित्तज प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।
2. अर्जुन की पत्ती, बेल की पत्ती, जामुन की पत्ती, मृणाली, कृष्णा, श्रीपर्णी की पत्ती, मेहंदी की पत्ती, धाय की पत्ती, इन सभी पत्तियों के स्वरस से अलग–अलग खंड यूषों का घी, अम्ल तथा लवण मिलाकर निर्माण करें। ये सभी खड़यूष परम संग्राहिक होते हैं।[7]

शुक्रमेह : शुक्रमेह के रोगी को अर्जुन की छाल या श्वेत चंदन का क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाने से लाभ पहुंचता है।

मूत्राघात : मूत्राघात में अर्जुन की छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।

अस्थिभंग : हड्डी टूटने पर प्लास्टर चढ़ा हो तो अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार एक कप दूध के साथ कुछ हफ्ते तक सेवन करने से हड्डी मजबूत होती जाती है। भग्न अस्थि के स्थान पर भी इसकी छाल को घी में पीसकर लेप करें और पट्टी बांधकर रखें, इससे भी हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है।

शोथ : गुर्दो पर इसका प्रभाव मूत्रल अर्थात् अधिक मूत्र लाने वाला है। हृदय रोगों के अतिरिक्त शरीर के विभिन्न अंगों में पानी पड़ जाने और शरीर पर शोथ आ जाने पर भी अर्जुन का सफलता से प्रयोग किया जाता है।

वादी के रोग : अर्जुन की जड़ की छाल का चूर्ण और गंगेरन की जड़ की छाल के बराबर मात्रा में चूर्ण कर 2–2 ग्राम की मात्रा में चूर्ण नियमित प्रातः–सायं फंकी देकर ऊपर से दूध पिलाने से वादी के रोग मिटते हैं।

रक्तपित्त : अर्जुन 2 चम्मच छाल को रात भर जल में भिगोकर रखें, सवेरे उसको मसल छानकर या उसको औटाकर उसका क्वाथ पीने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

कुष्ठ : रक्तदोष एवं कुष्ठ रोग में इसकी छाल का एक चम्मच चूर्ण जल के साथ सेवन करने से एवं इसकी छाल को जल में घिसकर त्वचा पर लेप करने से कुष्ठ में लाभ होता है।

ज्वर : इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से ज्वर छूटता है।

व्रण :

1. इसकी छाल को यवकूट कर क्वाथ बनाकर व्रणों और जख्मों को धोने से लाभ होता है।
2. इसकी जड़ के चूर्ण की फंकी 1 चम्मच दूध के साथ देने से चोट या रगड़ लगने से जो नील पड़ जाता है, वह ठीक हो जाता है।

जीर्ण ज्वर : इसकी छाल के 1 चम्मच चूर्ण की गुड़ के साथ फंकी लेने से जीर्ण ज्वर मिटता है।

अर्जुन छाल क्षीरपाक विधि : अर्जुन की ताजा छाल को छाया में सूखाकर चूर्ण बनाकर रख लें। 250 ग्राम दूध में 250 ग्राम (बराबर वजन) पानी मिलाकर हल्की आंच पर रख दें और उसमें उपरोक्त तीन ग्राम (एक चाय का चम्मच हल्का भरा) अर्जुन छाल का चूर्ण मिलाकर उबालें। जब उबलते–उबलते पानी सूखकर दूध मात्र अर्थात् आधा रह जाये तब उतार लें। पीने योग्य होने पर छानकर रोगी द्वारा पीने से सम्पूर्ण हृदय रोग नष्ट होते हैं और हार्ट अटैक से बचाव होता है।

1. ककुभः शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. सालसाराज कर्णरवदिर कदरकाल स्कन्धक्रमुकभूर्जमेष।। (सुश्रुत)
3. बीरतरू सहचर द्वयदर्भ वृक्षादनी गुन्द्रानल कुशकाश।।(सुश्रुत)
4. न्याग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतन ककुभाम्रको।। (सुश्रुत)
5. अर्जुनस्य त्वचा सिद्ध क्षीरं योज्यं हृदयामये।
सितया पंचमूल्या वा बलया मधुकेन वा।।
6. घृतेन दुग्धेन गुड़ाम्भसा वा पिबन्ति चूर्ण ककुभत्वचो ये।
हृद्रोग जीर्णज्वररक्तपित्तं हृत्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ये।।(च०द०)
7. वेवसार्जुन जम्बूना मृणाली कृष्णागंधयोः।
श्रीपर्णी भदयनयाश्व यूथिकायश्व पल्भवान।।

Scanned by CamScanner

श्योनाक (टूटूबा)

वैज्ञानिक नाम	:	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.
कुलनाम	:	Bignoniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sword fruit tree, Indian trumpet tree
संस्कृत	:	श्योनाक, शुकनास, टुण्टुक
हिन्दी	:	सोनापाठा
गुजराती	:	अरडूसो
मराठी	:	टेंटू
बंगाली	:	शोणा, सोनालू
देहरादून	:	तारलू
तैलगु	:	पैद्दामानु
पंजाबी	:	मुलिन

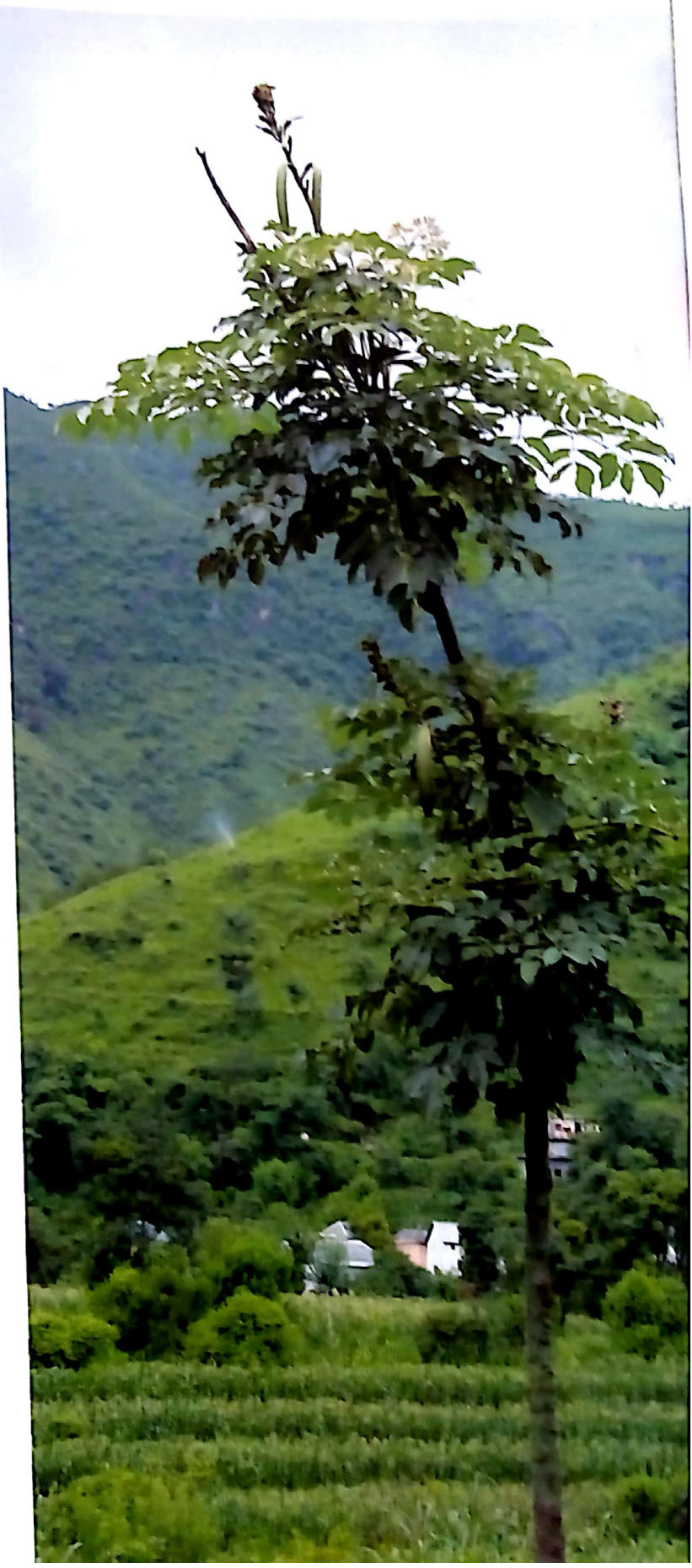

परिचय

श्योनाक के वृक्ष भारतवर्ष के पश्चिमी शुष्क प्रदेशों को छोड़कर प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। इसकी जड़ की छाल का प्रयोग बृहत पंचमूल में किया जाता है। अतः यह बाजार में पंसारियों के यहां बिकती है। इसके वृक्ष 15–25 फुट तक ऊंचे होते हैं, परन्तु यदि परिस्थितियां अनुकूल और उपयुक्त हो तो बकायन की तरह 50 फुट तक के वृक्ष भी देखे जाते हैं। कुछ प्रदेशों में *Ailanthus excelsa* घोड़ानिम्ब का प्रयोग अरलू या श्योनाक की जगह करते हैं, परन्तु वास्तव में घोड़ानिम्ब दूसरी जाति का पौधा है। यहां पर जो विवरण दिया जा रहा है वह 'श्योनाक' जिसे लैटिन में *Oroxylum indicum* कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसके वृक्ष पर्णपाती तथा मध्यम ऊँचाई के होते हैं। पत्तियां तीन से पांच इंच लम्बी, दो से साढे तीन इंच चौड़ी, लट्वाकार, लम्बाग्र और चिकनी तथा पत्रनाल और पत्रदंड पर दाने पड़े होते हैं। पत्तियां प्रायः त्रिपक्षाकार, द्विपक्षाकार या एक पक्षाकार होती है। पुष्प वाहक दंड बहुत लम्बा (2–3 फीट तक) पुष्प बहुत बड़े मांसल बैंगनी रंग के तथा दुर्गन्ध युक्त होते हैं। फली तलवार जैसी टेढ़ी चिकनी कठोर ढाई इंच से एक फीट लम्बी तथा दो इंच से साढ़े तीन इंच तक चौड़ी होती है। बीज चपटे और आधार के अतिरिक्त चारों ओर सफेद झिल्लीदार पंख युक्त होते हैं। बसंत में वृक्ष निष्पत्र हो जाता है। जिसमें तलवार जैसी फलियां लटकी रहती है। ग्रीष्म एवं वर्षा में फूल तथा जाड़ों में फल लगते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

मूल व तने की छाल में तीन फ्लेवोन रंजक द्रव्य ओरोक्सीलिन 'ए', बैकेलिन और क्राइसिन होते हैं। इनके अतिरिक्त इसमें एक क्षाराभ, टैनिक एसिड, सिटारटेरोल और ग्लेक्टोज पाये जाते हैं। बीजों में 20 प्रतिशत तक पीले रंग का तेल मिलता है। औषधीय गुणयुक्त अंग, छाल, पत्ते और बीज।

गुण–धर्म

यह उष्ण होने से कफ तथा वात शामक है। छाल को बाहर से लगाने पर शोथहर, व्रणरोपण एवं वेदनाहर है। रस में तिक्त व उष्ण होने के कारण यह दीपन, पाचन, रोचन, ग्राही तथा कृमिघ्न है। इसके अतिरिक्त शोथ को दूर करने वाला, मूत्रल, कफ को बाहर निकालने वाला, ज्वर दूर करने वाला व कटुपौष्टिक है। यह विशेषकर कफ व वात से अथवा आम से होने वाले विकारों में प्रयोग होता है। सामान्य कमजोरी में विशेष रूप में पेट की गड़बड़ी से होने वाली कमजोरी में इसका उपयोग बहुत लाभकारी है। इससे पेट ठीक होता है, अग्नि बढ़ती है, और धीरे–धीरे ताकत आने लगती है।

औषधीय प्रयोग

कर्णशूल : श्योनाक की छाल को पानी के साथ महीन पीसकर तिलों के तेल में रख लें और तैल में दुगना पानी डालकर मंद अग्नि पर पकायें, जब तेल मात्र शेष रह जाये तब इसको छानकर शीशी में भरकर रख लें, इस तेल की 2–3 बूंदे कान में टपकाने से वात कफ पित्त से उत्पन्न हुआ शूल मिटता है।

मुंह के छाले : श्योनाक की जड़ की छाल का क्वाथ बनाकर कुल्ले करने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

श्वास–खांसी :

1. इसकी छाल के चूर्ण को एक ग्राम की मात्रा में अदरक के रस व शहद के साथ चटाने से श्वास में लाभ होता है।
2. इसके गोंद के 2 ग्राम चूर्ण को थोड़ा–थोड़ा दूध के साथ खिलाने से खांसी मिटती है।

मंदाग्नि : श्योनाक की 20–30 ग्राम छाल को ठंडे या 200 मिलीलीटर गरम पानी में चार घण्टे भिगोकर रख दें, तत्पश्चात मसल छानकर पी लें, इसको दिन में दो बार सेवन करने से मंदाग्नि मिटती है।

अतिसार :

1. श्योनाक की छाल और कुटज की छाल का 2 चम्मच रस पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. इसकी जड़ की छाल और इन्द्रजौ के पत्ते दोनों का पुट बनाकर स्वरस निकाल कर उसमें मोच रस मिलाकर 1 चम्मच की मात्रा में चटाने से अतिसार और आमातिसार मिटता है।
3. श्योनाक की छाल व पत्तों को बारीक पीसकर गोली बनाकर उसके ऊपर बड़ के पत्ते लपेट कर कपड़ा मिट्टी कर भांड में डाल दें, जब मिट्टी पककर लाल हो जाये तब उसको निकाल कर ठंडा होने पर दबाकर रस निकाल ले। इस रस में से 20 ग्राम रस सुबह–शाम पीने से बहुत दिनों का अतिसार, खूनी दस्त इत्यादि में आराम होता है।
4. इसके गोंद के 2–5 ग्राम चूर्ण को थोड़ा–थोड़ा दूध के साथ खिलाने से आम अतिसार मिटता है।

बवासीर : श्योनाक की छाल, चित्र कमूल, इन्द्रजौं, करंज की छाल, सैंधा नमक, सौंठ इन सब औषधियों को समान भाग लेकर पीस–छान करके महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को डेढ से तीन ग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार छाछ के साथ सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।

प्रसूति–जन्य दुर्बलता : प्रसव में जिन स्त्रियों को चार छह दिन तक भयंकर पीड़ा हो, इनको श्योनाक की छाल का 500 से 650 मिलीग्राम चूर्ण इतनी ही शुंठी चूर्ण व इतनी ही मात्रा में गुड़ लेकर तीनों को मिलाकर तीन गोलियां बना लें। इन गोलियों को सुबह दोपहर और शाम दशमूल क्वाथ के साथ देने से चमत्कारिक ढंग से सब पीड़ाएं दूर होती है। 10–15 दिन तक लगातार देते रहने से सब पीडायें व कमजोरी दूर हो जाती है।

उपदंश : श्योनाक की बारीक पिसी हुई सूखी छाल के 40–50 ग्राम चूर्ण को पानी में चार घण्टे भिगो दे, इसके बाद छाल को और पीस लें तथा उसी पानी में छानकर मिश्री मिलाकर सात दिन तक सुबह–शाम सेवन करें। पथ्य में गेहूं की रोटी, घी शक्कर खायें। सात दिन तक स्नान न करें। आठवें दिन नीम के पत्तों के क्वाथ से स्नान करें व परहेज छोड़ दें।

सन्धिवात :

1. आमवात तथा वात प्रधान रोगों में इसकी जड़ व सौंठ का फांट बनाकर दिन में तीन बार 50 मि.ली. की मात्रा में पीने से लाभ होता है।
2. इसकी छाल के चूर्ण को 125 मिलीग्राम से 250 मिलीग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार नियमित रूप से सेवन करने से तथा इसके पत्तों को गरम करके सन्धियों पर बांधने से संधिवात में बहुत लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर :

1. श्योनाक की लकड़ी का छोटा सा प्याला बना लें, रात को इसमें पानी भरकर रख दें और प्रातःकाल उठकर पी लें। इस प्रयोग से नियतकालिक ज्वर, एकान्तरा, तिजारी, चौथियां इत्यादि सब प्रकार के विषम ज्वरों का नाश होता है।
2. श्योनाक, शुंठी, बेल के फल की गिरी, अनारदाना, अतीस इन सब द्रव्यों को समान भाग लेकर यवकूट कर लें। इसमे से 10

Scanned by CamScanner

ग्राम औषधि, आधा कि०ग्रा० पानी में उबालें, 125 मिलीलीटर पानी शेष रहने पर छानकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से सब प्रकार के ज्वर व अतिसार नष्ट होते हैं।

श्योनाक से पीलिया का विशेष उपचार: श्योनाक से पीलिया का उपचार करके सिक्किम के 70 वर्षीय मणिकुमार प्रधन हजारों पीलिया रोगियों को ठीक कर चुके हैं। पहली बार किसी वैद्य द्वारा बतलाने पर इस उपचार से उन्होंने खुद अपने भयानक पीलिया को ठीक किया था। सिक्कम की स्थानीय भाषा में श्योना को 'टोटला' कहते हैं। श्री मणिकुमार के भानजे श्री एम. के. प्रधन, एडीशनल कमिश्नर, एक्साइज, सिक्किम सरकार, ने एक पत्र द्वारा इसके बारे में हमें सूचित किया है। अतः लोक कल्याण के लिये इस उपचार की विधि यहाँ दी जा रही है।

विधिः श्योनाक का 150 – 200 ग्राम ताजा छिलका उतार कर, कूट कर, रात को एक गिलास पानी में भिगो कर रख लें। प्रातः खाली पेट, कपूर (या भीमसेनी कपूर) की दो टिक्की (100 मिली ग्राम) का चूर्ण बना कर निगल लें। इसके 15 मिनट बाद श्योनाक की छाल वाला पानी नितार कर पी लें। इसके दो घंटे बाद नाश्ता या भोजन लें। रोगी की स्थिति के अनुसार एक, दो, तीन दिन तक इसका सेवन करें।

आयु–अवस्था के अनुसार प्रयोग विधि :

पहले कपूर चूर्ण पानी से लें। इसके 15 मिनट बाद श्योनाक का पानी लें। नाश्ता या भोजन दो घंटे बाद करें।

8–15 वर्ष तक के बच्चे के लिये :

कपूर की एक (50 मि०ग्रा०) टिकिया व श्योनाक की छाल वयस्क मात्रा से आधी (75–100 ग्रा०)। 8 वर्ष से कम आयु के लिये, कपूर – ½ टिकिया (25 मि०ग्रा०) व श्योनाक की छाल वयस्क मात्रा से ¼ (40–50 ग्राम)। 8 दिन के शिशु के लिये– कपूर ड्राप– एक बूँद, छाल का पानी– छह बूँद। केवल एक बार देना है। पीलिया का रोग पुराना हो तो अधिकतम 3 से 7 दिन तक इसका सेवन करें। (कपूर निर्धारित मात्रा से अधिक न लें, अन्यथा बेहोशी आ सकती है।) हैपेटाइटिस–बी के हौवे से घबराये नहीं।

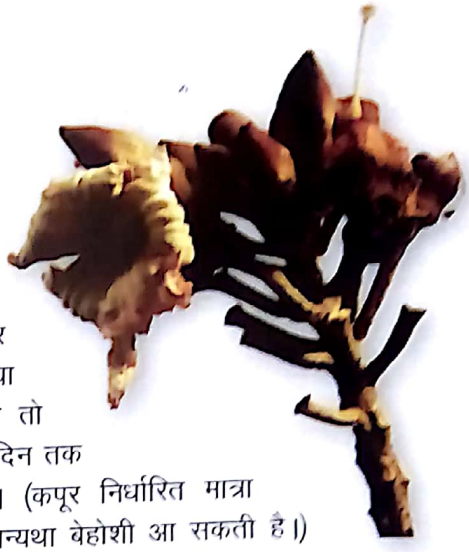

सोनापाठा की छाल

दवा बनाने वाली कुछ कम्पनियाँ अथवा थोक एजेंट अपने उत्पादन की बिक्री एवं मशहूरी बढ़ाने के लिये आम जनता में किसी रोग विशेष के प्रति इतना भय, आतंक, अफवाह, आकर्षण फैला देते हैं कि जिससे उनका उतपाद मुँहमांगी कीमत पर बिक सके। हैपेटाइटिस–बी को जानलेवा बीमारी घोषित करके दवा कम्पनियाँ इसी बाजारवादी मानसिकता का परिचय दे रही हैं जिससे घबराने की जरूरत नहीं है। यह बात पढ़े–लिखे लोग भी नहीं जानते है कि हैपेटाइटिस–बी आखिर है कौन सी बीमारी। इसका मतलब है 'हैपे' यानी लीवर का इंफेक्शन, जिसे आम बोलचाल की भाषा में पीलिया कहते हैं। यदि पीलिया कह कर इसका प्रचार किया जाता है तो आम व्यक्ति इनके बहकावे में कैसे आ पाता। भय, लालच, रहस्य ये तीन ऐसे शक्तिशाली तीर हैं जिनसे दवा कम्पनियाँ सीधे पब्लिक का शिकार करती हैं और सरकार तथा प्रशासन अपनी लाचारी दिखा जाते हैं।

पीलिया का मुकाबला मनुष्य जाति सदियों से करती आ रही है लेकिन इसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ द्वारा हैपेटाइटिस–बी बता कर एक खौफ मन में पैदा कर दिया गया है। फर्क केवल इतना आया है कि आधुनिक चिकित्सा ने उस वायरस की पहचान कर ली है जिसे हैपेटाइटिस–बी, ए, सी, ई, जी कहते हैं। इनमें सभी वायरसों का इंफैक्शन सामान्य (वेनाइन) श्रेणी का ही होता है और साधारण दवा से ही रोगी ठीक हो जाता है। पीलिया के कारण आधे प्रतिशत से भी कम व्यक्तियों को ठीक से उपचार न मिलने के कारण मृत्यु होती है। इससे अधिक मौतें तो हर साल मलेरिया से हो जाती है। हैपेटाइटिस–बी का टीका इन दिनों खुले बाजार में 500–600 रूपया मूल्य पर मिल रहा है जबकि स्वयंसेवी संस्थाओं व डाक्टारों को रियायती दर में सिर्फ 85–160 रूपया में उपलब्ध कराया जा रहा है।

1. श्योनाको दीपनः पाके कटुकस्तुवरोहिमः।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासामनाशनः।।
(भाव प्रकाश)

2. टुंटुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम्।
हृद्यं कषायं मुधरं रोचनम् लघु दीपनम्।

3. गुल्मार्श कृमिहत्प्रोंढं गुरूवात प्रकोपणम्।। (भाव प्रकाश)

4. टिंटुकोऽशिशिरस्तिक्तो बस्तिरोगहरः परः।
पित्तश्लेष्मामवातातीसारकासारूचीर्जयेत। (ध० नि०)

Scanned by CamScanner

अरणी

25

वैज्ञानिक नाम	:	*Premna latifolia* Roxb.
कुलनाम	:	Verbenaceae
संस्कृत	:	अग्निमंथ, गाणिकारिका, तकीर्ण
हिन्दी	:	अरनी, गनियार, अगेथू
गुजराती	:	अरणी
मराठी	:	ऐरण, ताकली
पंजाबी	:	अगेथु
तैलगु	:	तक्किली, चट्टु

परिचय

यह उत्तर भारत में विशेषतः गंगा के मैदानों तथा उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में पाया जाता है। कुमाऊ से भूटान तक पहाड़ियों में 5,000 फीट की ऊंचाई तक पाया जाता है। दशमूल का उपादान होने से इसका मूल पंसारियों के यहां मिलता है, इसकी लकड़ी को आपस में रगड़कर अग्नि उत्पन्न की जाती है, अतः इसे अग्निमंथ कहा गया है। इसकी एक और जाति पाई जाती है, जिसे छोटी अरणी, तर्करी, टेकार तथा *Clerodendrom* sp. कहते हैं। बडी अरणी की भी कई और प्रजातियां मिलती है।

बाह्य–स्वरूप

बड़ी अरणी : यह 25–30 फुट ऊंचा वृक्ष होता है। तने की छाल हल्के धूसर रंग की, पत्र अभिमुख, 2–6 इंच लम्बे, दोनों सिरों पर पतले प्रायः लम्बाग्र 5–6 जोड़ी शिराओं से युक्त होते हैं। सूखने पर ये काले पड़ जाते हैं और मसलने से इनमें से दुर्गन्ध आती है। पुष्प मंजरी 2–5 इंच व्यास की विभक्त, रोमश, पुष्प द्विओष्ठी, हरिताभ, श्वेत वर्ण की होती है। फल गोलाकार, दबा हुआ करौंदे की तरह का बैंगनी और काला होता है। पुष्पागम अप्रैल–मई में तथा फलागम मई–जून में होता है। इसकी पुरानी शाखाओं पर आमने–सामने मजबूत कांटे होते हैं।

छोटी अरणी : इसका प्रसारणशील गुल्म या छोटा वृक्ष 10 फुट तक ऊंचा, पत्र अभिमुख, दंतुर, प्रायः दो इंच लम्बे चौड़े वक्षीय या शीर्षस्थ गुच्छों में श्वेत वर्ण के अत्यंत सुगंधित होते हैं तथा इसके फल अंडाकार, सूखने पर चार खण्डों में फट जाते हैं। पुष्पागम सितम्बर से मार्च तक होता है।

गुण–धर्म

अग्नि वर्धक, शोथ, कफ, वात तथा पांडुरोग हरने वाली यह कटु पौष्टिक, कफघ्न, अनुलोमन तथा शीत–प्रशमन है।[1]

मूल : इसकी जड़ विरेचक, अग्निवर्धक तथा यकृत की पीड़ा को दूर करने वाली है।

छोटी अरणी : छोटी अरणी कड़वी, चरपरी, उष्ण ,मधुर तथा वात कफ, शोथ तथा पांडु हरने वाली है।[2]

विशेष : दोनों अरणी गुण में समान है।

औषधीय प्रयोग

हृदय दौर्बल्य : अरणी के पत्ते और धनिये का 60–70 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से हृदय की दुर्बलता मिटती है।

त्रिदोष गुल्म : बड़ी या छोटी अरणी की जड़ों के 100 मि०ली० गरम काढ़े में 30 ग्राम गुड़ मिला कर देने से त्रिदोष गुल्म दूर हो जाता है।

उदर रोग :

1. अरणी की 100 ग्राम जड़ों को लेकर आधा सेर पानी में मंद आंच पर 15 मिनट तक उबालें, तथा 100 ग्राम पानी दिन में दो बार पीने से जठराग्नि प्रबल होती है। यह औषधि पौष्टिक भी है।

Scanned by CamScanner

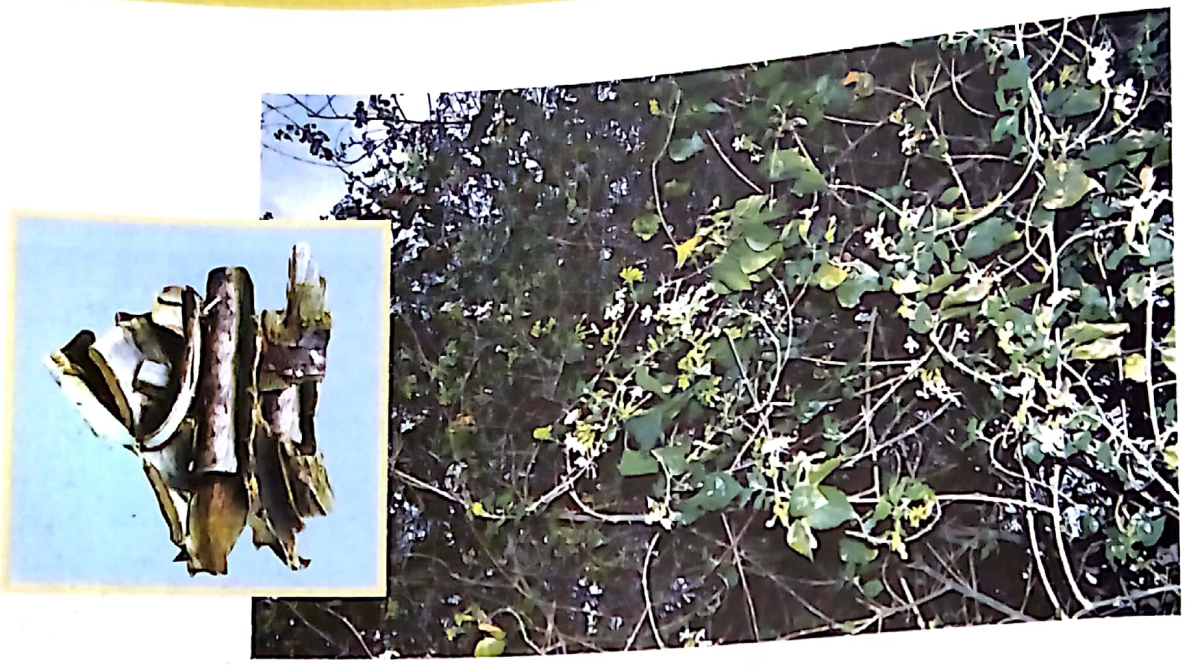

छोटी अरनी

2. इसके पत्तों का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से मंदाग्नि मिटती है तथा अफारा भी दूर होता है।
3. इसके पत्तों को उबालकर मसल छानकर 100 मिलीलीटर की मात्रा पिलाने से आमाशय का शूल मिटता है।
4. इसके पत्तों का साग बनाकर खाने से पेट की बादी मिटती है।
5. इसकी जड़ का 60 ग्राम क्वाथ दिन में दो बार पिलाने से ज्वर चढ़े व्यक्ति का उदरशूल मिटता है।

बद्धकोष्ठ : अरणी के पत्ते और हरड़ की छाल का 100 मिलीलीटर क्वाथ करके सुबह शाम 30 मि०ली० की मात्रा में पिलाने से बद्धकोष्ठता मिटती है।

हस्ति प्रमेह : इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से हस्ति प्रमेह मिटता है। इस क्वाथ के पीने से वसा मेह भी मिटता है।

बवासीर : अरणी के पत्तों का 100 मिलीलीटर काढ़ा पिलाने से तथा इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से अर्श की वेदना कम होती है।

सूजन :

1. इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दोनों समय पीने से पेट की शूल, जलोदर और सब प्रकार की सूजन मिट जाती है।
2. अरणी की जड़ और पुनर्नवा की जड़ दोनों को एक साथ पीसकर गरम कर लेप करने से शरीर की सब ढीली पड़ी हुई सूजन उतर जाती है।

गठिया : अरणी के पंचांग का 100 मि०ली० क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से गठिया और स्नायु की वात पीड़ा मिटती है।

ज्वर :

1. शीतज्वर में बड़ी अरणी की जड़ को मस्तक पर बांधे।
2. अरणी के 10–15 पत्तों और 10 काली मिर्च को पीसकर सुबह–शाम देने से सर्दी का बुखार उतर जाता है।

शीतपित्त : इसकी जड़ का 2 ग्रा० चूर्ण 6 दिन घी के साथ खिलाने से शीतपित्त मिटता है तथा उदर्द रोग भी मिटता है।

अतिसार : इसके पंचाग का काढ़ा 30 मि०ली० सुबह–शाम पीने से अतिसार में लाभ होता है तथा पेट के कीड़े मर जाते हैं।

रक्तशुद्धि :

1. इसकी जड़ का 100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दोनों समय 20 से 30 मि०ली० पीने से रक्त शुद्ध होता है तथा हृदय को बल मिलता है।
2. इसके पत्तों के रस में मधु मिलाकर पिलाने से भी रक्त की शुद्धि होती है।

उपदंश : इसके पत्रों का 12 ग्राम या कुछ अधिक रस, दिन में दो बार कुछ दिनों तक पीने से पुराना उपदंश मिटता है।

1. अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्येष्णः कफवातहत्।
पांडुनुत कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निद।। (भाव प्रकाश)
2. तर्कारी कटुका तिक्ता तथोष्णाऽनिलपांडुनुत।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यामविबन्धांश्च विनाशयेत।। (घ०नि०)
3. तर्कारी कटुका तिक्ता तुवरा मधुरोऽग्निदा।
वीर्योष्णा हरते वातकफश्वयथुपांडुताः।। (कै०नि०)

Scanned by CamScanner

अशोक

26

वैज्ञानिक नाम	:	*Saraca asoca* (Roxb.) de Wilde
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी	:	Ashok tree
संस्कृत	:	ताम्रपल्लव, अशोक, मधुपुष्प, हेमपुष्प, अपशोक, भंजरी
हिन्दी	:	अशोक
गुजराती	:	अशांक
मराठी	:	अशोक
पंजाबी	:	अशोक
तैलगु	:	अशोकमु, नांजूलामु
द्राविड़ी	:	अशोकम्
कन्नड़	:	अशोक

परिचय

अशोक के वृक्ष भारतवर्ष में सर्वत्र बाग–बगीचों में सुन्दरता के लिए लगाये जाते हैं। यह 2,000 फीट की ऊंचाई पर बहुतायत में पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अशोक का वृक्ष 25 से 30 फुट तक ऊंचा, सदाहरित, बहुशाखी सघन व छायादार होता है। कांडत्वक, शुभ घूसर, खुरदरी, अंदर से रक्त वर्ण कुछ सूफदार होती है। पत्र 9 इंच लम्बे, गोल व नोकदार दोनों ओर 5–6 जोड़ों में लगते हैं। कोमलावस्था में ये श्वेताभ लाल वर्ण के परंतु बाद में गहरे हरे रंग के हो जाते हैं। पत्रकों के किनारे किंचित लहरदार होते हैं। पुष्प गुच्छों में नारंगी और लाल रंग के सुगन्धित अति सुन्दर होते हैं। फलियाँ 4–10 इंच लम्बी, 1–2 इंच चौड़ी, बैशाख–जेठ में लगती है। फली के अंदर 4–10 तक बीज होते हैं। कच्ची फली गहरे बैंगनी रंग की और पकने पर काले रंग की हो जाती है। बीज 1 से 1.5 इंच लम्बे, चपटे, ऊपर का छिलका लाल चमड़े के समान मोटा होता है। पेड़ में गोदने से श्वेत रस निकलता है जो शीघ्र ही वायु में सूखकर लाल हो जाता है। यही अशोक का गोंद होता है।

रासायनिक संघटन

अशोक की छाल में टैनिन्स, कैटेकाल, एसेंशियल ऑयल, हीमेटोक्सीलिन, कीटोस्टेराल, ग्लाइकोसाइड, सेपोनिन्स, कैल्शियम युक्त और लौह युक्त कार्बनिक यौगिक पाये जाते हैं। अशोक की छाल के कीटोस्टेरॉल में 'एस्ट्रोजन हारमोन' जैसी क्षमता पाई जाती है। प्रजनन संस्थान पर प्रभावी होने का इसका यही मूल कारण है।

गुण–धर्म

यह हल्का रूखा, कषैला, चरपरा, विपाक में कटु और शीतल होता है। यह ग्राही, रक्त संग्राहक, वेदना स्थापक वर्ण को उज्जवल करने वाला, हड्डी जोड़ने वाला, अच्छी सुगंध वाला, हृद्य, त्रिदोषहर, तृषा, दाह, कृमि, शोथ, गुल्म, शूल, उदर रोग, आध्मान, विष, अर्श, रक्त विकार, गर्भाशय की शिथिलता, सर्व प्रकार के प्रदर, ज्वर, सन्धिवातज पीडा और अपची आदि रोगों का नाशक है। यह शीतल, रूचिर, कृमिनाशक है। इसका प्रयोग कष्टार्तव, रक्तपित्त, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, में करते हैं।[1] अशोक की छाल कटुतिक्त, ज्वर व तृषा नाशक, आंत्रसंकोचक, अपच की बीमारी को दूर करने वाली, रक्त विकार, थकावट, शूल, अर्श इत्यादि रोगों में लाभदायक है। इसके अतिरिक्त पेट बढ़ने की बीमारी, अत्यधिक रक्तस्राव, गर्भाशय से रक्त स्राव, में उपयोगी है। इसकी छाल का स्वरस बहुत तेज संकोचक है एवं रक्त प्रदर का नाश करती है।[2]

Scanned by CamScanner

अशोक की छाल

औषधीय प्रयोग

बुद्धि वर्धक : अशोक की छाल, ब्राह्मी चूर्ण बराबर की मात्रा में मिलाकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम एक कप दूध के साथ नियमित रूप से कुछ माह तक सेवन करने से बुद्धि तीव्र होती है।

मुहांसे : अशोक की छाल का काढ़ा उबाल लें, गाढ़ा होने पर इसे ठण्डा करके, इसमें बराबर की मात्रा में सरसों का तेल मिला लें। इसे मुहांसों, फोड़ों, फुन्सियों पर लगाएं। नियमित प्रयोग से लाभ होगा।

श्वास : इसके बीजों के चूर्ण की मात्रा 1 चावल भर, 6-7 बार पान के बीड़े में रखकर खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

उबटन : अशोक की छाल के स्वरस में सरसों को पीसकर छाया में सुखा लें, तत्पश्चात जब उबटन लगाना हो तब सरसों को इसकी छाल के स्वरस में ही पीसकर त्वचा पर लगायें। इससे रंग निखरता है।

वमन: फूलों को जल में पीसकर स्तनों पर लेप कर दूध पिलाने से स्तनपायी बालक का वमन रूक जाता है।

रक्त अतिसार : अशोक के 3-4 ग्राम फूलों को जल में पीसकर पिलाने से रक्त अतिसार में लाभ होता है।

रक्तार्श :

1. इसकी छाल का 40-50 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से रक्तार्श

Scanned by CamScanner

का रुधिर बन्द हो जाता है।

2. अशोक की छाल और इसके फूलों को बराबर की मात्रा में लेकर 30 ग्राम मात्रा को रात्रि में एक गिलास पानी में भिगोकर रख दें। सुबह पानी छानकर पी लें। इसी प्रकार सुबह का भिगोया हुआ शाम को पी लें। इससे खूनी बवासीर में शीघ्र आराम मिलता है।

प्रदर :

1. इसकी छाल का चूर्ण और मिश्री समभाग खरल कर रखें, 3 ग्राम की मात्रा गोदुग्ध से प्रातः–सायं देने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।
2. इसकी छाल के 40–50 मिलीलीटर क्वाथ को दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से श्वेत प्रदर और रक्त प्रदर में लाभ होता हैं।[3]
3. अशोक की 3 ग्राम छाल को चावल के धोवन में पीस लें, फिर छानकर इसमें 1 ग्राम रसौंत और 1 चम्मच मधु मिलाकर नियमित प्रातः–सायं सेवन करें, सब प्रकार के प्रदर में लाभ होगा। इस प्रयोग के साथ इसकी छाल के क्वाथ में फिटकरी मिलाकर योनि में इसकी पिचकारी लेनी चाहिये।
4. अशोक के 2–3 ग्राम फूलों को जल में पीसकर पिलाने से रक्त प्रदर में लाभ होता है। इसकी अंतर छाल का महीन चूर्ण 10 ग्राम, साठी चावल का चूर्ण 50 ग्राम, मिश्री चूर्ण 10 ग्राम, शहद 3 ग्राम प्रातः–सायं सेवन करने से रक्त प्रदर में विशेष लाभ होता है। इसे दिन में तीन बार सेवन करें।

मासिक धर्म : अशोक की छाल 80 ग्राम लेकर इससे चौगुने पानी में तब तक पकायें जब तक एक चौथाई पानी शेष न रह जाये, इसमें 80 ग्राम दूध डालकर तब तक उबालना चाहिये जब तक सब पानी जल जाये, तत्पश्चात् छानकर स्त्री को प्रातः–सायं पिलायें। इस दूध का मासिक धर्म के चौथे दिन से तब तक सेवन करना चाहिये, जब तक रक्तस्राव बन्द न हो जाये।

स्वप्नदोष : स्त्रियों के स्वप्नदोष में 20 ग्राम अशोक की छाल, यवकूट कर 250 ग्राम जल में पकावें, 30 ग्राम शेष रहने पर इसमें 6 ग्राम शहद मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है। अशोक घृत या अशोकारिष्ट भी इसमें लाभकारी है।

योनिशैथिल्य : अशोक की छाल, बबूल की छाल, गूलर की छाल, माजूफल और फिटकरी समान भाग में पीसकर 50 ग्राम चूर्ण को

पीला अशोक–(लिंगापुर)

400 मिलीलीटर पानी में उबालकर 100 मिलीलीटर काढ़ा तैयार कर लें, इसे छान कर पिचकारी के माध्यम से रोज रात्रि योनि में पहुँचाए, फिर मूत्रत्याग एक घंटे के पश्चात् करें। कुछ ही दिनों के प्रयोग से योनि तंग हो जायेगी।

पथरी : अशोक के 1–2 ग्राम बीज को पानी में पीसकर नियमित रूप से दो चम्मच की मात्रा में पीने से मूत्र न आने की शिकायत और पथरी के कष्ट में आराम मिलता है।

अस्थिभंग : इसकी छाल का चूर्ण 6 ग्राम तक दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से तथा ऊपर से इसी का प्रलेप करने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है और वेदना शान्त हो जाती है।

1. अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः।
शोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित्।। (भावप्रकाश)
2. अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी। (शो०)
3. अशोकवल्कलक्वाथश्रृतं दुग्धं सुशीतलम्।
यथा बलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम्।। (च०द०)

Scanned by CamScanner

27 असगंध (अश्वगंधा)

वैज्ञानिक नाम	:	*Withania somnifera* (L.) Dunal
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Winter cherry
संस्कृत	:	अश्वगंधा, वराहकर्णी
हिन्दी	:	असगंध
गुजराती	:	आसंध, घोड़ा आहन, घोड़ा आकुन
मराठी	:	आसंध, डोरगुंज
बंगाली	:	अश्वगंधा
तैलगु	:	पनेरू

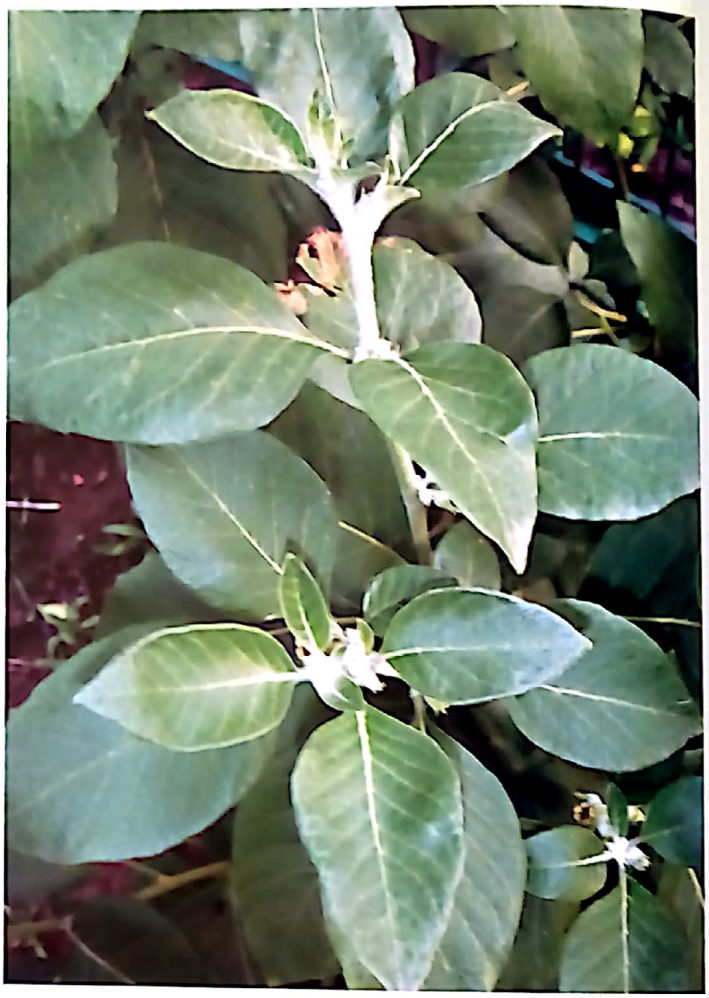

परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विशेषतः शुष्क प्रदेशों में असगंध के स्वयंजात वन्यज या कृषिजन्य पौधे 5,500 फुट की ऊंचाई तक पाये जाते हैं। वन्यज पादपों की अपेक्षा कृषिजन्य पौधे गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम होते हैं, परन्तु तैलादि के लिए वन्यज पौधों का व्यवहार ही बेहतर है। यह देश भेद से कई प्रकार की कही गयी है, परन्तु असली असगंध के पौधे को मसलने पर अश्व के मूत्र जैसी गंध आती है जो इसकी ताजी जड़ में अपेक्षाकृत अधिक होती है।

बाह्य–स्वरूप

असगंध के 1–5 मीटर ऊंचे शाखा बहुल सीधे गुल्म होते हैं। पत्रयुग्म में 2–4 इंच लम्बे, 1–2 इंच चौड़े, अग्र पर नुकीले या कम चौड़े, पुष्प हरिताभ अथवा बैंगनी आभा लिये पीताभ, वृन्त रहित छत्रक समगुच्छों में, कैलिक्स घंटिकाकार तथा मृदु रोमश जो फलों के साथ बढ़कर रसभरी की भांति फलों को आवृत कर लेता है। फल मटर के आकार वाले, लाल तथा बाह्य आवरण शिखर पर खुला होता है। बीज असंख्य, अतिक्षुद्र, वृक्काकार तथा बीज चोल मधुमक्खी के छत्ते की भांति होता है। मूल शंक्वाकार, मूली की तरह परन्तु उससे कुछ पतली होती है।

रासायनिक संघटन

असगंध की जड़ में एक उड़नशील तेल तथा बिथेनिओल नामक तत्व पाया जाता है। इसके सिवाय सोम्मीफेरिन नामक क्रिस्टेलाइन एल्केलायड एवं फाइटोस्टेरोल आदि तत्व भी पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

कफ वातनाशक, बल्य, वृंहण, रसायन, बाजीकरण, नाड़ी–बल्य, दीपन, पाचन आदि।

औषधीय प्रयोग

गंडमाला : असंगध के नवीन कोमल पत्रों को समान मात्रा में पुराना गुड़ मिलाकर तथा पीसकर झाड़ी के बेर जितनी गोलियां बना कर सुबह ही एक गोली बासी जल के साथ निगल लें और असगंधा के पत्तों को पीसकर गंडमाला पर लेप करे।

हृदय शूल :

1. वात के कारण हृदय रोग में असगंध का चूर्ण 2 ग्राम गरम जल के साथ लेने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

2. असगंध चूर्ण में बहेड़े का चूर्ण समभाग मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा गुड़ के साथ लेने से हृदय संबंधी बात पीड़ा दूर होती है।

क्षयरोग :

1. 2 ग्राम असगंध चूर्ण को असगंध के ही 20 ग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से क्षय रोग में लाभ होता है।
2. 2 ग्राम असगंध मूल के चूर्ण में 1 ग्राम बड़ी पीपल का चूर्ण, 5 ग्राम घी और 10 ग्राम मधु मिलाकर सेवन करने से क्षय रोग कटता है।

खांसी :

1. असगंध की 10 ग्राम जड़ों को कूट लें, इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर 400 ग्राम जल में पकाएं, जब आठवां हिस्सा रह जाये तो इसे थोड़ा–थोड़ा पिलाने से कुकुर खांसी या वात जन्य कास पर विशेष लाभ होता है।
2. असगंध के पत्तों का घन क्वाथ 40 ग्राम, बहेड़े का चूर्ण 20 ग्राम, कत्था चूर्ण 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम, सौंधा नमक ढाई ग्राम को मिलाकर 500 मिलीग्राम की गोलियां बना लें। इन गोलियों को चूसने से सब प्रकार की खांसी दूर होती है। क्षयकास में भी यह विशेष लाभदायक है।

गर्भधारण :

1. असगंध चूर्ण 20 ग्राम, जल एक कि०ली० तथा गौ दूध 250 ग्राम तीनों को मंद अग्नि पर पकाकर जब दूध मात्र शेष रह जाये तब इसे 6 ग्राम मिसरी और 6 ग्राम गाय का घी मिलाकर मासिक धर्म की शुद्धिस्नान के तीन दिन बाद तीन दिन तक सेवन करने से स्त्री अवश्य गर्भ धारण करती है।
2. असगंध का चूर्ण, गाय के घी में मिलाकर मासिक धर्म स्नान के पश्चात् प्रतिदिन गाय के दूध के साथ या ताजे जल से 4–6 ग्राम की मात्रा में एक माह तक निरंतर सेवन करने से स्त्री गर्भधारण अवश्य करती है।
3. मूल के क्वाथ और कल्क में चौगुना घी मिलाकर पकाकर सेवन करने से वात व्याधि दूर होती है तथा स्त्री गर्भधारण करती है।

गर्भपात : गर्भपात की आदत होने पर असगंध और सफेद कटेरी की जड़ इन दोनों का 10–10 ग्राम स्वरस प्रथम मास से पांच मास तक सेवन करने से अकाल में गर्भपात नही होगा और गर्भपात के समय सेवन करने से गर्भ रूक जाता है।

रक्तप्रदर एवं श्वेत प्रदर : असगंध चूर्ण में बराबर की मिश्री मिलाकर एक–एक चम्मच गाय के दूध में मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।

कृमि रोग : इसके चूर्ण में बराबर गिलोय का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ 5–10 ग्राम नियमित सेवन करने से लाभ होता है।

नेत्र ज्योति बढाने में : इसका चूर्ण 2 ग्राम, धात्रि फल चूर्ण दो ग्राम तथा एक ग्राम मुलेठी चूर्ण मिलाकर एक चम्मच प्रातः एवं सायं जल के साथ सेवन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

बद्धकोष्ठ : 5 ग्राम असगंध चूर्ण की फंकी गरम जल के साथ लेने से बद्धकोष्ठता मिटती है।

गठियावात :

1. असगंध के पंचाग को कूटकर, छानकर 25 से 50 ग्राम तक सेवन करने से गठिया वात दूर होता है। गठिया में असगंध के 30 ग्राम ताजा पत्ते, 250 ग्राम पानी में उबालकर जब पानी आधा रह जाये तो छानकर पी लें। एक सप्ताह पीने से ही गठिया में जकड़ा और तकलीफ से रोता रोगी बिल्कुल अच्छा जो जाता है तथा इसका लेप भी बहुत लाभदायक है।
2. असगंध के चूर्ण की मात्रा दो ग्राम सुबह–शाम गरम दूध तथा पानी के साथ खाने से गठिया के रोगी को आराम हो जाता है।

कटिशूल : इसके 2–5 ग्राम चूर्ण को गोघृत या शक्कर के साथ चाटने से कटिशूल और निद्रानाश में लाभ होता है।

संधिवात :

1. इसके तीन ग्राम चूर्ण को तीन ग्राम घी में मिलाकर, एक ग्राम शक्कर मिलाकर सुबह–शाम खाने से संधिवात दूर होता है।
2. असगंध की 15 ग्राम कोंपले या कोमल पत्र लेकर 200 ग्राम जल में उबालें, जब पत्ते गल जाये या नरम हो जाये तो छानकर गरम–गरम 3–4 दिन पीयें, इससे कफ जन्य खांसी भी दूर होती है।

नपुंसकता :

1. असगंध का कपड़छन चूर्ण और खांड बराबर मिलाकर रखे, इसको एक चम्मच गाय के ताजे दूध के साथ प्रातः भोजन

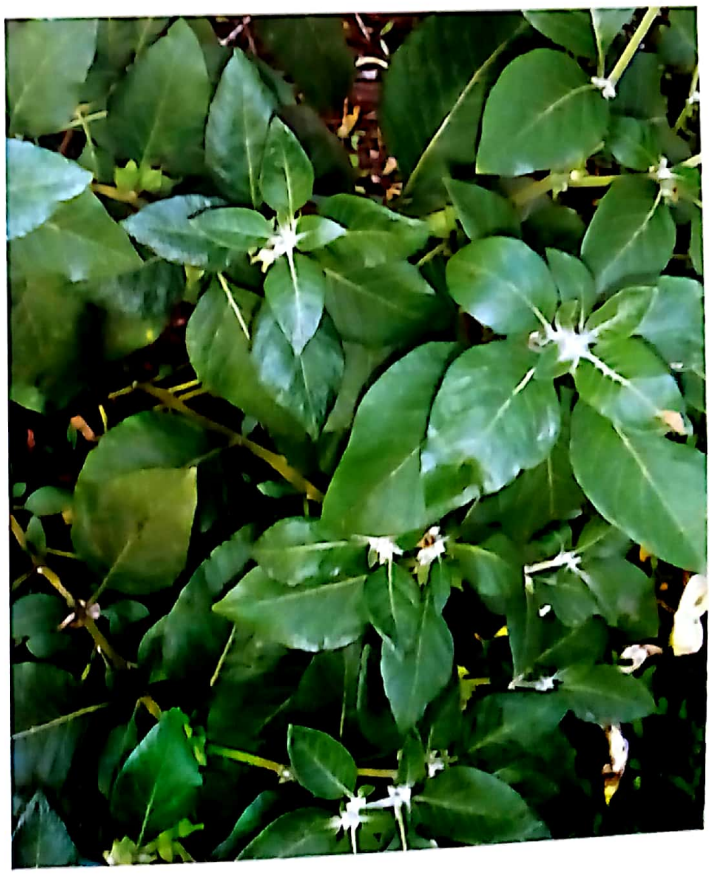

Scanned by CamScanner

से तीन घण्टे पूर्व सेवन करें। चुटकी–चुटकी कर चूर्ण को खाते हैं और ऊपर से दूध पीते रहे। रात्रि के समय इसके बारीक चूर्ण को चमेली के तेल में अच्छी तरह घोंटकर लगाने से इन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर वह कठोर और दृढ़ हो जाती है।

2. असगंध, दालचीनी और कडुवा कूठ समभाग कूटकर छान लें और गाय के मक्खन में मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा प्रातः–सायं सुपारी छोड़ शेष लिंग पर मलें, इसको मलने के पूर्व और बाद में लिंग को गरम पानी से धो लें।

दौर्बल्य :

1. इसके एक वर्ष तक यथाविधि सेवन करने से शरीर रोग रहित हो जाता है। केवल सर्दियों में ही इसके सेवन से दुर्बल व्यक्ति भी बलवान होता है। वृद्धावस्था दूर होकर नवयौवन प्राप्त होता है।[1]
2. इसका चूर्ण, तिल व घी 10–10 ग्राम लेकर और तीन ग्राम मधु मिलाकर नित्य शरद ऋतु में सेवन करके कृश शरीर वाला बालक मोटा हो जाता है।[3]
3. असगंध चूर्ण 6 ग्राम, इसमें बराबर की मिश्री और बराबर मधु मिलाकर इसमें 10 ग्राम गाय का घी मिलाये, इस मिश्रण को सुबह शाम शीतकाल में 4 मास तक सेवन करने से बूढ़ा व्यक्ति भी युवक की तरह प्रसन्न रहता है।[4]

अश्वगंधा की जड़

4. असगंध की जड़ के महीन चूर्ण को तीन ग्राम की मात्रा में उष्ण प्रकृतिवाला गाय के ताजे दूध से (धारोष्ण), वात प्रकृति वाला शुद्ध तिल से और कफ प्रकृति का व्यक्ति गरम जल के साथ एक वर्ष तक सेवन करे तो निर्बलता दूर होकर सब व्याधियों का नाश होता है। वृद्धव्यक्ति, युवावस्था तथा निर्बल व्यक्ति बल प्राप्त करता है।
5. असगंध चूर्ण 20 ग्राम, तिल इससे दुगने, और उड़द आठ गुने अर्थात 140 ग्राम, इन तीनों को महीन पीसकर इसके बड़े बनाकर ताजे–ताजे एक मास तक खायें।
6. असगंध चूर्ण और चिरायता बराबर–बराबर लेकर खरल कर रखें। इस चूर्ण को 10–10 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम दूध के साथ खायें।
7. एक ग्राम असगंध चूर्ण में 125 मिलीग्राम मिश्री डालकर औटाये हुए दूध के साथ सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है, बल बढ़ता है।

रक्तविकार : 4 ग्राम चोपचीनी और असगंध का बारीक पिसा चूर्ण (दोनों बराबर लें) शहद के साथ नियमित प्रातः–सायं चाटने से रक्त विकार मिटते हैं।

ज्वर : इसका चूर्ण पांच ग्राम, गिलोय की छाल का चूर्ण चार ग्राम, दोनों को मिलाकर प्रतिदिन शाम को गर्म पानी से खाने से जीर्णवात ज्वर दूर हो जाता है।

सर्वरोग : 250 मिलीग्राम गिलोय सत् को 5 ग्राम असगंध चूर्ण के साथ मिलाकर शहद के साथ चाटने से सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

अहितकर : उष्ण प्रकृति वालों को।

निवारण : गोंद, कतीर एवं घी।

1. अश्वगंधाऽनिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला।। (भाव प्रकाश)
2. पीताश्वगंधा पयसार्धमासं घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा।
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते बालस्य सस्यस्य यथाम्बुवृष्टि।।
(च० द०)
3. शिशिरे योऽश्वगंधायाःकन्दचूर्ण पलोन्मितम्।
मासमत्ति समध्वाज्यं स वृद्धो भवेद्युवा।। (रा० मा०)
4. पादकल्केऽश्वगंधायाः क्षीरे दशगुणे पचेत्।
घृतं पेयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्धनम्।। (च० द०)

Scanned by CamScanner

अतीस

28

वैज्ञानिक नाम	:	*Aconitum heterophyllum* Wall. ex Royle
कुलनाम	:	Ranunculaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian atis
संस्कृत	:	अतिविषा, विश्वा, शुक्लकन्दा
हिन्दी	:	अतीस
गुजराती	:	अतवखनी, कलीवखमो, अतिविष
मराठी	:	अतिविष
बंगाली	:	आतईच
पंजाबी	:	अतीस, चितीजड़ी, बतीस
फारसी	:	बज्जीतुरकी
तैलगु	:	अतिविषा, अतिबासा

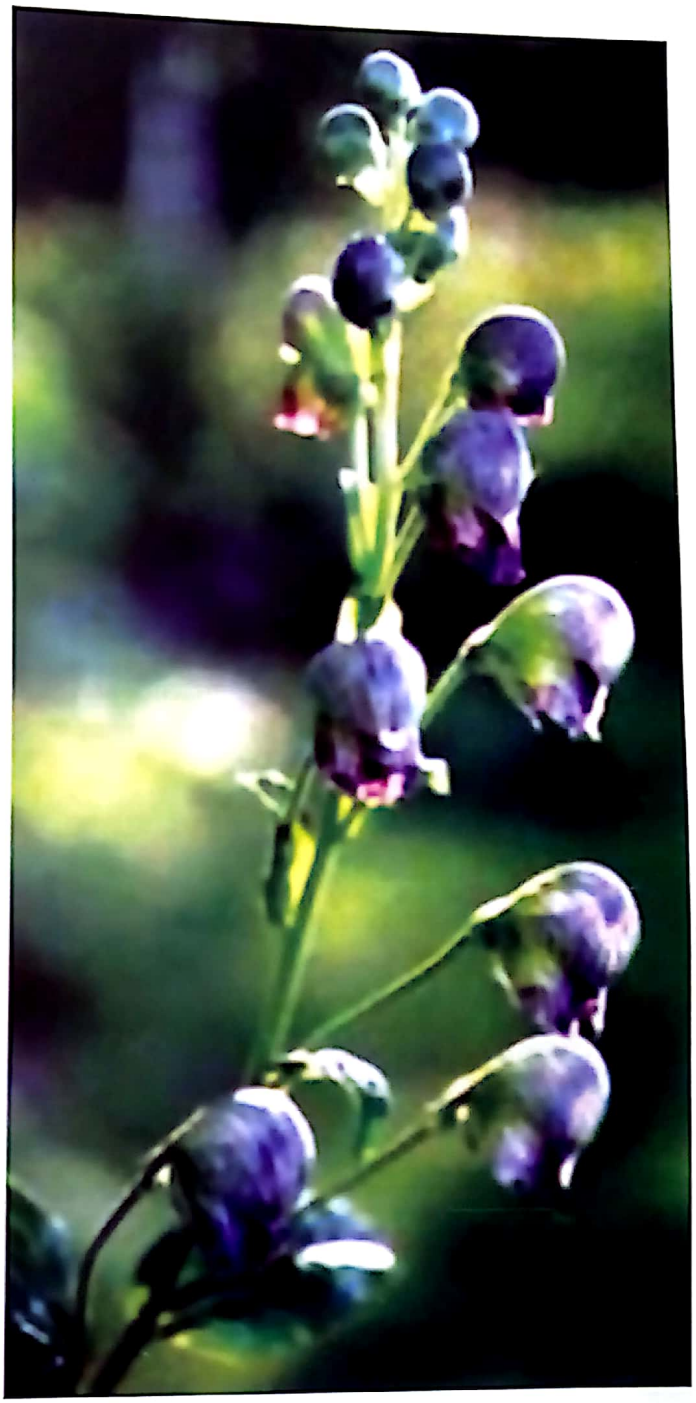

परिचय

भारत में हिमालय प्रदेश के पश्चिमोत्तर भाग में 15 हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। इस बूटी की विशेषता यह है कि यह विष वर्ग वा वत्सनाभ कुल की होने पर भी विषैली नही है। इसके ताजे पौधों का जहरीला अंश केवल क्षुद्र जीव जन्तुओं के लिए प्राणघातक है। यह विषदायी प्रभाव भी इसके सूख जाने पर अधिकांशतः उड़ जाता है। छोटे–छोटे बालकों को भी यह निर्भयता से दी जा सकती है। परन्तु इसमें एक दोष है कि इसमें दो महीने बाद ही घुन लग जाता है।

बाह्य–स्वरूप

अतीस के पौधे 1–4 फुट ऊंचे, शाखाएं चपटी और एक पौधे में एक ही कांड होता है, जिस पर अनेक पत्तियां लगी होती है। निचले भाग में पत्र सवृन्त, तश्तरी नुमा, 2–4 इंच लम्बे गोल तथा प्रायः पांच खण्डों से युक्त होते हैं तथा ऊपर के पत्र अखण्ड, कांड संसक्त और तीक्ष्ण दन्तुर होते हैं। पुष्प चमकीले नीले या हरिताभ नीले और देखने में फणाकार टोपी की तरह होते हैं। इन पर बैंगनी रंग की शिरायें होती हैं। मूल द्विवर्षायु जिनमें एक नया और एक पुराना दो कन्द होते हैं। औषधयार्थ इन्हीं कन्दाकार जड़ों का व्यवहार अतीस के नाम से होता है।

रासायनिक संघटन

इसमें अतिसीन नामक एमारफस ऐल्केलाइड पाया जाता है। जो स्वाद में अत्यंत तिक्त होता है। इसके अलावा एकोनीटिक एसिड, टेनिक एसिड, पेक्टस तत्व, स्टार्च, वसा तथा शर्करा पायी जाती है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, ग्राही, ज्वरातिसार नाशक, कृमिघ्न, कास नाशक एवं अर्शोघ्न बालकों के ज्वरातिसार, छर्दि कास आदि रोगों में विशेष रूप से उपयोगी है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मुख रोग : अतीस 20 ग्राम और बाय बिडंग 15 ग्राम दोनों कुचल कर आधा किलो जल में पकावें, चौथाई शेष रहने पर उतार लें, ठंडा कर छान लें फिर मिश्री मिलाकर शरबत की चाशनी तैयार करें। पश्चात् उसमें चौकिया सुहागा की खील 5 ग्राम पीसकर मिला लेवें। एक वर्ष तक के बच्चे को गाय के दूध में मिलाकर पांच बूंद तक देने से और शरीर मे महालाक्षादि तेल की मालिश करने से बालक के शरीर की पुष्टि और वृद्धि होती है तथा खांसी, श्वास, अपच आदि रोग दूर हो जाते हैं।

श्वास (कास) :

1. अतीस के चूर्ण 5 ग्राम को 2 चम्मच मधु मिलाकर चटाने से खांसी मिटती है।
2. अतीस 2 ग्राम और पोखर मूल 1 ग्राम के चूर्ण को 2 चम्मच मधु मिलाकर चटाने से श्वांस कास रोग में लाभ होता है। (प्रायः हिमालय के उच्च क्षेत्रों में अतीस और कुटकी ही अनेक रोगों में प्रयोग किया जाता है।)

वमनः नागकेशर 2 ग्राम और अतीस के 1ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से वमन बंद होती है।

पाचनशक्तिः 2 ग्राम अतीस के चूर्ण को 1 ग्राम सौंठ या 1 ग्राम पीपल के चूर्ण के साथ मधु मिलाकर चटाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

पित्तोदरः 20 मिलीलीटर गौमूत्र के साथ लगभग दो ग्राम चूर्ण पिलाने से पित्तोदर में लाभ होता है।

रक्तार्शः अतीस में राल और कपूर मिलाकर इसका धुआं देने से रक्तार्श के रक्तस्राव में लाभ होता है।

अतिसारः अतिसार और रक्तपित्त में अतीस के 3 ग्राम चूर्ण को इन्द्रजौ की छाल के 3 ग्राम चूर्ण और 2 चम्मच शहद के साथ देने से अतिसार और रक्तपित्त में लाभ होता है।

संग्रहणीः दस्त पतला, श्वेत, दुर्गन्ध युक्त हो तो अतीस और सुंठी 10–10 ग्राम दोनों को कूटकर 2 किलों पानी में पकायें, जब आधा शेष रह जाये तब इसे लवण से छोंककर, फिर इसमें थोड़ा अनार का रस मिला, दिन में थोड़ा–थोड़ा करके दिन में 3–4 बार पिलाने से संग्रहणी और आम अतिसार में लाभ होता है।[3]

अतिविषादि वटीः नागरमोथा, अतीस, काकड़ा सिंगी और करंज के भुने हुए बीज चारों द्रव्यों को समान मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर इन्द्रयव की छाल के क्वाथ में 12 घण्टे खरलकर 65 मिलीग्राम की गोलियां बना लें, दिन में दो बार सुबह–शाम 1–2 गोली देने से बच्चों के सब विकार शांत हो जाते हैं। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाती है।

शक्तिवर्धकः छोटी इलायची ओर वंशलोचन, इन दोनों के साथ अतीस के 1½ से 2½ ग्राम तक चूर्ण की फंकी मिश्री युक्त दुग्ध के साथ लेने से बल बढ़ता है एवं यह पौष्टिक व रोगनाशक है।

पुरूषार्थः 5 ग्राम अतीस के चूर्ण को शक्कर और दूध के साथ देने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

निर्बलताः 3 ग्राम अतीस के चूर्ण को लौहभस्म 125 मिलीग्राम और शुंठी चूर्ण 500 मिलीग्राम के साथ देने से ज्वरोत्तर निर्बलता मिटती है।

फोडे फुन्सीः अतीस के 5 ग्राम चूर्ण को फांककर ऊपर से चिरायते का अर्क पीने से फोडे फुन्सी मिटते हैं

ज्वर :

1. ज्वर में इसका चूर्ण 1–1 ग्राम दिन में 4–5 बार गरम जल के साथ देने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है और मूत्र भी साफ होता है।
2. अतीस 2 ग्राम और वायबिडंग 2 ग्राम का चूर्ण समान भाग लेकर 1–1 ग्राम शहद के साथ चटाने से बच्चों के कृमि नष्ट हो जाते हैं।
3. 1 ग्राम से 10 ग्राम तक अतीस पानी में पीसकर दिन में 2–3 बार, बल और आयु के अनुसार देने से अतिसार मिटता है।
4. ज्वर आने के पहले इसके 2–2 ग्राम की फंकी 2–2 घण्टे के अन्तर से देने पर ज्वर उतर जाता है।
5. अतीस के दो ग्राम चूर्ण को हरड के मुरब्बे के साथ खिलाने से आमातिसार मिटता है।

अतीस (कड़वा)

Scanned by CamScanner

6. इसके 625 मिलीग्राम चूर्ण की फंकी देने से ज्वर की गर्मी कम हो जाती है।
7. ज्वर छुड़ाने के लिए इसके 625 मिलीग्राम चूर्ण में 200 मिलीग्राम हरा कसीस भस्म मिलाकर देना चाहिए।
8. विषम ज्वर छुड़ाने के लिए इसके एक ग्राम चूर्ण में 75 मिलीग्राम कुनैन मिलाकर, दिन में इतनी–इतनी मात्रा दो तीन बार खिलाने से विषम ज्वर छूटता है।
9. साधारण ज्वर में अतीस चूर्ण एक भाग, तथा मिश्री दो भाग खरल कर रखें। बड़ों को 1 ग्राम तक तथा छोटों को 500 मिलीग्राम की मात्रा में शहद या शरबत बनफसा के साथ सुबह–शाम देने से लाभ होता है।

अतीस (मीठा)

बालरोग :

1. अतीस के कन्द को पीसकर चूर्ण कर शीशी में भरकर रख लें बालकों के तमाम रोगों में यह लाभकारी है। बालक की उम्र के अनुसार 250 से 500 मिलीग्राम तक शहद के साथ दिन में दो तीन बार चटाने से बालकों के सब रोगों में लाभ होता है।
2. अतिसार और आम अतिसार में 2 ग्राम अतीस के चूर्ण की फंकी देकर 8 घण्टे तक पानी में भिगोई हुई 2 ग्राम सौंठ को पीसकर पिलाने से लाभ होता है। जब तक अतिसार नही मिटे तब तक नित्य देना चाहिए।
3. अतीस को कूटकर रात्रि में दस गुने जल में भिगो दें, प्रातःकाल पकाये, जब शहद जैसा गाढ़ा हो जाये या गोलियां बनाने लायक हो जाये तो 500–500 मिलीग्राम की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। हैजे में 3–3 गोली 1–1 घण्टे के अन्तर से तथा प्लेग में 3–3 गोली दिन में बार–बार खिलायें।

1. घुणप्रियाऽतिसारघ्नी बालानां रोग नाशिनी।
कटूष्णऽतिविषा तिक्ता कफपित्त ज्वरापहा।
आमातिसारकासघ्नी, विषच्छर्दिविनाशिनी।। (ध० नि०)

2. विषासोष्णा कटुरितक्ता दीपनी पाचनी हरेत्।
कफपित्तातिसारमविषकासवमिक्रिमीन्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

29 आयापान

वैज्ञानिक नाम	:	*Eupatorium triplinerve* Vahl
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Ayapan
संस्कृत	:	विशल्यकर्णी
हिन्दी	:	आयापान
गुजराती	:	अयापान
मराठी	:	अयापान
बंगाली	:	विशल्यकारणी, आयापान, अजापर्ण

Scanned by CamScanner

परिचय

आयापान वास्तव में अमेरिका का आदिवासी पौधा है, परन्तु अब सम्पूर्ण भारतवर्ष में बगीचों के अन्दर उगाया जाता है। बंगाल में विशेषतः यह रोपा हुआ और जंगली दोनों अवस्थाओं में प्रचुरता से होता है।

बाह्य–स्वरूप

आयापान के सुगन्धित गुल्म 2–4 इंच लम्बे, मालाकार, रक्ताभ अभिमुख क्रम में तीन स्पष्ट सिराओं से युक्त तीव्र गन्धी (मसलने पर उग्रसुगंध आती है) पुष्प नीलाभ मुंडको में, फल पंचकोणीय एवं रूंदित होते हैं।

रासायनिक संघटन

आयापान की पत्तियों में एक उड़नशील तैल पाया जाता है। सूखी पत्तियों में एक क्रिस्टलाईन तत्व तथा ताजी पत्तियो में अयापान एवं आयापानेन नामक दो क्रिस्टीलाइन स्वरूप के तत्व पाये जाते हैं, जिनमें तीव्र रक्त स्तम्भक गुण पाया जाता है।

गुण धर्म

यह व्रण को भरने वाला, रक्तस्राव रोधक है तथा रक्त अतिसार रक्त प्रदर, रक्तार्श आदि में यहां तक कि आमाशय में होने वाले रक्त स्राव में या शरीर के किसी भी भाग से गिरने वाले रक्त को रोकने के लिए इसके पत्तों का रस बहुत लाभदायक है।

औषधीय प्रयोग

अर्श : अर्श में इसके पत्तों को पीसकर लगाने तथा स्वरस 10–20 ग्राम दिन में 2–3 बार पीने से चमत्कारी लाभ होता है।

वमन : इसके पंचाग के गरम काढे को अधिक मात्रा में देने से वमन हो जाती है तथा दस्त लग जाते हैं। इसको विरेचन के लिए प्रयोग करना चाहिए।

पौष्टिक : इसके पत्तों का रस अल्प मात्रा में पीने से बल बढ़ता है।

ज्वर: जाड़ा लगकर यदि ज्वर हो तो इसके 20 ग्राम पत्तों को 200 ग्राम जल में फांट बनाकर गरम–गरम दिन में दो तीन बार पिलाने से लाभ होता है। इसका फांट पीत ज्वर में भी लाभदायक है।

बाह्य प्रयोग में : व्रण तथा रक्तस्त्राव में इसकी पत्तियों को पीस कर लेप करने से आराम होता है।

कीट दंश : जहरीले कीड़ों के दंश पर इसका लेप करने से वेदना शांत होती है।

रक्तस्राव : कहीं भी रक्तस्राव होने पर इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से तथा पत्र स्वरस 10–20 ग्राम की मात्रा का मौखिक रूप से सेवन करने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।

घाव : शस्त्र का कितना भी गहरा घाव लगा हो, इसके पत्तों को पीसकर लगाने से तथा पत्र स्वरस 5–10 ग्राम दिन में 3–4 बार पीने से गहरे से गहरा घाव बहुत जल्दी भर जाता है।

मलेरिया ज्वर : इसके 20 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा 5–10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पिलाना मलेरिया ज्वर में लाभकारी है।

Scanned by CamScanner